ISBN: 978-93-5679-591-4

बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन

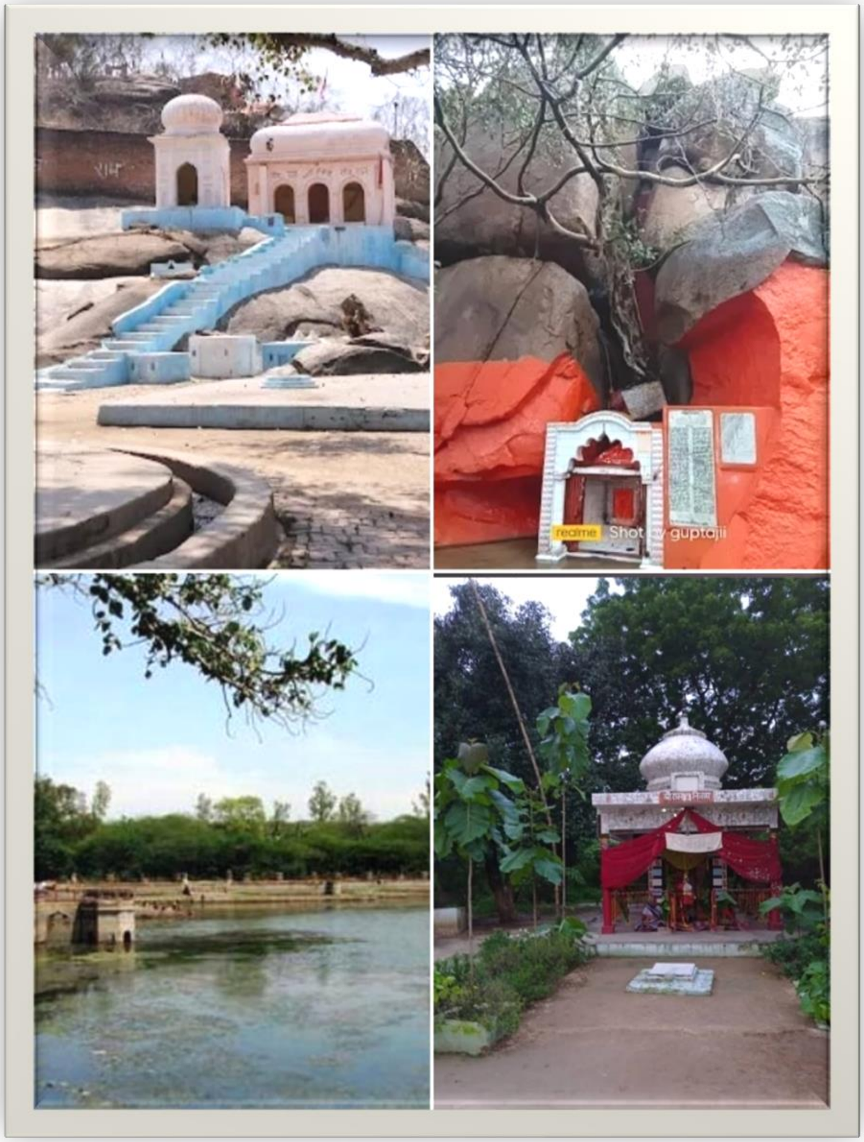

- डॉ० राजीव अग्रवाल
- सागर सिंह चौहान
- सुशील कुमार

बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन

डॉ० राजीव अग्रवाल

प्रोफेसर- शिक्षा संकाय

अतर्रा पी० जी० कॉलेज, अतर्रा (बाँदा)

सागर सिंह चौहान

एम०ए०(अर्थशास्त्र), एम०एड०

सुशील कुमार

बी०एल०एड०, एम०ए० (राजनीति विज्ञान)

बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन

डॉ० राजीव अग्रवाल

सागर सिंह चौहान

सुशील कुमार

©सर्वाधिकार सुरक्षित

E-book संस्करण: 2026

मूल्य: ₹ 82

ISBN:978-93-5679-591-4

प्रकाशक-

सुशील कुमार

ग्राम एवं पोस्ट- भरुआ सुमेरपुर, जिला- हमीरपुर (उत्तर प्रदेश)- 210502

Mob-8840943835

E-mail: Sushilkumarsahu0111@gmail.com

प्राक्कथन

किसी भी राष्ट्र का इतिहास, उसके वर्तमान और भविष्य की नींव होता है। देश का इतिहास जितना गौरवमयी होगा वैश्विक स्तर पर उसका स्थान उतना ही ऊँचा माना जायेगा। वैसे तो बीता हुआ कल कभी वापस नहीं आता लेकिन उस काल में बनी इमारतों और लिखे गये साहित्य उन्हें हमेशा सजीव बनाये रखते हैं।

यह सत्य है कि वक्त रहते यदि हमने अपनी गलतियों को नहीं सुधारा तो हम अपनी ऐतिहासिक विरासतों को खो देंगे। अतः आवश्यकता है कि हम सभी अपनी ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूक हों। साथ ही आवश्यकता इस बात की भी है कि समाप्त हो चुकी या समाप्ति की कगार पर पहुँच चुकी ऐतिहासिक विरासतों को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जाये तथा भविष्य के लिये इन्हें संरक्षित किया जाये। यह तभी सम्भव होगा जब देश का प्रत्येक नागरिक अपनी ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूक होगा तथा उनकी सुरक्षा की जिम्मेदारी को समझेगा।

प्रस्तुत पुस्तक का शीर्षक **बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन है।** इस पुस्तक को छः अध्यायों में विभक्त किया गया है जिनका विवरण निम्न प्रकार है—

प्रथम अध्याय में उच्च शिक्षा की समस्याएँ, अध्ययन के उद्देश्य, चर, परिकल्पनाएँ, शोध परिसीमांकन एवं अध्ययन के महत्व पर प्रकाश डाला गया है।

द्वितीय अध्याय में जागरूकता एवं ऐतिहासिक विरासतों से सम्बन्धित कतिपय शोध कार्य की समीक्षा प्रस्तुत की गयी है।

तृतीय अध्याय में बाँदा की चार ऐतिहासिक विरासतों—पहाड़ी बाबा आश्रम, नवाब टैंक, रामनिवास मन्दिर तथा सिद्धन का सचित्र वर्णन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में शोध विधि, शोध अभिकल्प, लक्षित प्रतिदर्श, जनपद एवं संस्थाओं का चयन, शोध उपकरण, परीक्षण का प्रशासन, फलांकन एवं सांख्यिकीय प्रविधियों का सविस्तार वर्णन किया गया है।

पञ्चम अध्याय में प्रदत्तों का विश्लेषण एवं निर्वचन प्रस्तुत किया गया है।

षष्ठ अध्याय में निष्कर्ष, सुझाव, शैक्षिक उपादेयता एवं अध्ययन की सीमाएँ प्रस्तुत की गयी हैं।

प्रस्तुत पुस्तक प्रबन्ध पर आधारित है। शोध कार्य के प्रकाशन से वैज्ञानिक ज्ञान भण्डार में वृद्धि होती है एवं नवीन अनुसन्धानों को प्रेरणा मिलती है। किसी भी शोध कार्य का तब तक कोई अर्थ नहीं है जब तक कि वह जनसामान्य के लिए सुलभ न हो। प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में किया गया एक प्रयास है। यह पुस्तक विद्यालय से सम्बन्धित विभिन्न घटकों में प्रेरणा का संचार करने में निश्चय ही सहायक सिद्ध होगी।

इस पुस्तक के सृजन में सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में उल्लेखित विभिन्न पुस्तकों का सहयोग लिया गया है। हम सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में अनेक त्रुटियाँ होना स्वभाविक है। अतः यदि अनुभवी विद्वतगण अवगत कराने का कष्ट करेंगे तो हम अत्यन्त आभारी होंगे तथा भावी संस्करण में संशोधन का प्रयास करेंगे।

दिनांक- 30/01/2026

डॉ० राजीव अग्रवाल

सागर सिंह चौहान

सुशील कुमार

अनुक्रमणिका

अध्याय	विषय-वस्तु	पृष्ठ संख्या
तालिका सूची		**ix–xii**
चित्र सूची		**xii–xvi**
प्रथम	**अध्ययन परिचय**	**1–16**
	1.1 शिक्षा विकास की प्रक्रिया	1–2
	1.2 भारत में शिक्षा के स्तर	2–3
	1.2.1 प्राथमिक शिक्षा	2–3
	1.2.2 माध्यमिक शिक्षा	3
	1.2.3 उच्च शिक्षा	3
	1.3 भारत में उच्च शिक्षा का विकास	4–8
	1.3.1 प्राचीन काल में उच्च शिक्षा का विकास	4–5
	1.3.2 मध्यकाल में उच्च शिक्षा का विकास	5
	1.3.3 आधुनिक काल में उच्च शिक्षा का विकास	5–8
	1.3.3.1 ब्रिटिश कालीन शासन में उच्च शिक्षा विकास	6–7
	1.3.3.2 स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद उच्च शिक्षा का विकास	7–8
	1.4 उच्च शिक्षा की समस्याएँ	9–10
	1.5 समस्या का प्रादुर्भाव	10

अध्याय	विषय-वस्तु	पृष्ठ संख्या

1.6 समस्या कथन 11

1.7 अध्ययन का औचित्य 11

1.8 समस्या में निहित शब्दों की व्याख्या 12–13

1.8.1 बाँदा नगर 12

1.8.2 ऐतिहासिक विरासत 12

1.8.3 महाविद्यालयीन विद्यार्थी 13

1.8.4 जागरूकता 13

1.8.5 अध्ययन 13

1.9 अध्ययन के उद्देश्य 13–14

1.10 अध्ययन के चर 14

1.10.1 मापदण्ड चर 14

1.10.2 वर्गीकरण चर 14

1.11 परिकल्पनाएँ 14–15

1.12 अध्ययन का परिसीमांकन 15–16

1.13 अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता 16

द्वितीय **सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण** **17–30**

2.1 प्रस्तावना 17–20

2.1.1 सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण के उद्देश्य 18

अध्याय	विषय-वस्तु	पृष्ठ संख्या
	2.1.2 सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण की आवश्यकता	18–19
	2.1.3 सम्बन्धित साहित्य के स्रोत	19–20
	2.2 अध्ययन से सम्बन्धित कतिपय शोध अध्ययन	20–26
	2.2.1 जागरूकता से सम्बन्धित शोध अध्ययन	21–24
	2.2.2 ऐतिहासिक विरासतों से सम्बन्धित शोध अध्ययन	24–26
	2.3 ऐतिहासिक विरासतों से सम्बन्धित समाचार, लेख इत्यादि	26–29
	2.3.1 पहाड़ी बाबा की अन्तिम यात्रा आज सुबह	27
	2.3.2 5000 दीपकों ने रोशन किया नवाब टैंक	27
	2.3.3 श्रीराम निवास मन्दिर का अयोध्या से गहरा नाता	28
	2.3.4 बाँदा के बामदेव पर्वत में अद्भुत पत्थर, जिनसे निकलता है संगीत	28
	2.3.5 नवाब टैंक में 151 फीट ऊँचा तिरंगा लहराया	29
	2.4 समीक्षात्मक निष्कर्ष	29–30
तृतीय	**बाँदा की चयनित ऐतिहासिक विरासतों का परिचय**	**31–55**
	3.1 पहाड़ी बाबा आश्रम	31–35
	3.2 नवाब टैंक	36–41
	3.3 राम निवास मन्दिर	42–45
	3.4 सिद्धन	46–55

अध्याय	विषय-वस्तु	पृष्ठ संख्या
चतुर्थ	**अध्ययन विधि एवं प्रक्रिया**	**56–92**

4.1 प्रस्तावना 56

4.2 शोध विधि 57

4.2.1 सर्वेक्षण विधिं 57

4.3 शोध अभिकल्प 58

4.4 अध्ययन समष्टि 58

4.5 प्रतिदर्श चयन 58–61

4.5.1 प्रतिदर्श चयन की विधियाँ 59–61

4.5.1.1 सुविधानुसार प्रतिचयन 60–61

4.6 लक्षित प्रतिदर्श का चयन 61–63

4.6.1 जनपद का चयन एवं न्यायोचितता 61

4.6.2 संस्थाओं का चयन 62–63

4.7 प्रदत्तों का स्रोत 64

4.8 प्रदत्तों की प्रकृति 64

4.9 शोध उपकरण 65–68

4.9.1 प्रश्नावली 66

4.9.2 स्वनिर्मित प्रश्नावली की आवश्यकता 66–67

4.9.3 स्वनिर्मित प्रश्नावली निर्माण के सोपान 67–68

4.10 परीक्षण का प्रशासन 68–69

4.11 परीक्षण का फलांकन 69

अध्याय	विषय-वस्तु	पृष्ठ संख्या

4.12 सांख्यिकीय प्रविधियाँ 70–92

4.12.1 प्रतिशत 71

4.12.2 मध्यमान 71–75

4.12.3 प्रमाप विचलन 75–78

4.12.4 वैषम्यता तथा कुकुदता 78–82

4.12.5 सामान्य सम्भावना वक्र 83–87

4.12.6 क्रान्तिक अनुपात 87–91

4.12.7 दण्ड आरेख 92

पञ्चम प्रदत्तों का विश्लेषण एवं निर्वचन 93–128

5.1बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति छात्र-छात्राओं की जागरूकता का अध्ययन करना 93–96

5.2 बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति प्रशिक्षित और अप्रशिक्षित विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन 97–100

5.3 बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता का विरासतानुसार विश्लेषण 101– 116

5.3.1 राम निवास मन्दिर के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता का प्रश्नवार विश्लेषण 101–104

5.3.2 नवाब टैंक के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता का प्रश्नवार विश्लेषण 104–107

अध्याय	विषय-वस्तु	पृष्ठ संख्या

5.3.3 पहाड़ी बाबा आश्रम के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता का प्रश्नवार विश्लेषण 108–112

5.3.4 सिद्धन के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता का प्रश्नवार विश्लेषण 112–116

5.4 बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन 117–118

5.5 बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति महाविद्यालयीन प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित विद्यार्थियों की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन 119–120

5.6 बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति प्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन 121–122

5.7 बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन 123–124

5.8 बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्रों की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन 125–126

अध्याय	विषय-वस्तु	पृष्ठ संख्या
	5.9 बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन	127–128
षष्ठ	**निष्कर्ष एवं सुझाव**	**129–140**
	6.1 अध्ययन के निष्कर्ष	129–133
	6.2 अध्ययन के सुझाव	133–136
	6.2.1 नवाब टैंक हेतु सुझाव	134
	6.2.2 सिद्धन हेतु सुझाव	135
	6.2.3 राम निवास मन्दिर हेतु सुझाव	135
	6.2.3 पहाड़ी बाबा आश्रम हेतु सुझाव	136
	6.3 शैक्षिक उपादेयता	136–138
	6.3.1 विद्यार्थियों के लिए	136–137
	6.3.2 शिक्षकों के लिए	137
	6.3.3 पाठ्यक्रम निर्माताओं के लिए	137
	6.3.4 प्रशासकों के लिए	137–138
	6.3.5 इतिहासकारों के लिए	138
	6.3.6 पुरातत्वविदों के लिए	138
	6.4 अध्ययन की सीमाएँ	139
	6.5 भावी शोध हेतु सुझाव	139–140

अध्याय	विषय-वस्तु	पृष्ठ संख्या
	सन्दर्भ ग्रन्थ सूची	**141–149**
	परिशिष्ट	**150–228**
	I—बाँदा का मानचित्र	150
	II—अध्ययन से सम्बन्धित समाचार, लेख, चित्रावली	151–153
	III—ऐतिहासिक विरासत भ्रमण चित्रावली	154–158
	IV—नवाब टैंक सम्बन्धी चित्रावली	159
	V—लघु-शोध प्रबन्ध प्रारूप	160
	VI—बाँदा नगर स्थित उच्च शिक्षण संस्थान	161–162
	VII—ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूकता प्रश्नावली का प्रथम प्रारूप	163–175
	VIII—जागरूकता प्रश्नावली का अन्तिम प्रारूप	176–189
	IX—परीक्षण प्रशासन चित्रावली	190–191
	X—जागरूकता प्रश्नावली उत्तरमाला	192–194
	XI—ई-ब्रोशुर	195–221
	XII—शोधार्थी द्वारा इण्टरनेट पर बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों से सम्बन्धित प्रकाशित/अपलोड किये गये वेबपृष्ठ	222–223
	XIII—बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूकता संवर्धन हेतु शोधार्थी द्वारा प्रेषित ई-मेल	223–226
	XIV—जीवनवृत्त	226–228

अध्याय	तालिका सूची	पृष्ठ संख्या

चतुर्थ

तालिका संख्या 4.6.2.1 न्यादर्श वितरण तालिका 62

तालिका संख्या 4.6.2.2 लिंग-वार प्रतिदर्श को प्रदर्शित करती तालिका 63

तालिका संख्या 4.6.2.3 प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित विद्यार्थियों के आधार पर विभाजन को प्रदर्शित करती तालिका 63

तालिका संख्या 4.8 बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूकता की विरासतानुसार प्रश्न संख्या को प्रदर्शित करती तालिका 64

पञ्चम

तालिका संख्या 5.1 बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति छात्र-छात्राओं की जागरूकता विश्लेषण तालिका 93

तालिका संख्या 5.2 बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित विद्यार्थियों की जागरूकता विश्लेषण तालिका 97

तालिका संख्या 5.3.1.1 रामनिवास मन्दिर के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता की प्रश्नवार विश्लेषण तालिका 101

तालिका संख्या 5.3.1.2 रामनिवास मन्दिर के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की समग्र जागरूकता विश्लेषण तालिका 102

तालिका संख्या 5.3.2.1 नवाब टैंक के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता की प्रश्नवार विश्लेषण तालिका 104

तालिका संख्या 5.3.2.2 नवाब टैंक के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की समग्र जागरूकता विश्लेषण तालिका 105

अध्याय तालिका सूची पृष्ठ संख्या

तालिका संख्या 5.3.3.1 पहाड़ी बाबा आश्रम के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता की प्रश्नवार विश्लेषण तालिका 108

तालिका संख्या 5.3.3.2 पहाड़ी बाबा आश्रम के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की समग्र जागरूकता विश्लेषण तालिका 109

तालिका संख्या 5.3.4.1 सिद्धन के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता की प्रश्नवार विश्लेषण तालिका 112

तालिका संख्या 5.3.4.2 सिद्धन के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की समग्र जागरूकता विश्लेषण तालिका 113

तालिका संख्या 5.4 बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन तालिका 117

तालिका संख्या 5.5 बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति महाविद्यालयीन प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित विद्यार्थियों की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन तालिका 119

तालिका संख्या 5.6 बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति प्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन तालिका 121

तालिका संख्या 5.7 बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन तालिका 123

अध्याय	तालिका सूची	पृष्ठ संख्या

तालिका संख्या 5.8 बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्रों की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन तालिका 125

तालिका संख्या 5.9 बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन तालिका 127

अध्याय	चित्र सूची	पृष्ठ संख्या

तृतीय

चित्र संख्या 3.1.1 राजा बाग 32

चित्र संख्या 3.1.2 राजा महल 32

चित्र संख्या 3.1.3 पहाड़ी बाबा आश्रम के वर्तमान महन्त 32

चित्र संख्या 3.1.4 आश्रम का प्रवेश द्वार, फुलवारी, सत्ती-सत्ता मन्दिर एवं सीढ़ियाँ 32

चित्र संख्या 3.1.5 पहाड़ी बाबा आश्रम का मुख्य मन्दिर 33

चित्र संख्या 3.1.6 स्वर्गीय महन्त जी की मूर्ति, पाकड़ वृक्ष, शिवलिंग 33

चित्र संख्या 3.1.7 महन्त जी की समाधि, प्राचीन तालाब, ध्यान शिला एवं प्राकृतिक दृश्य 34

चित्र संख्या 3.1.8 प्राचीन शिव एवं हनुमान मन्दिर 35

चित्र संख्या 3.1.9 वट वृक्ष, प्राचीन कूप एवं चिकनी पथरिया 35

चित्र संख्या 3.2.1 नवाब जुल्फिकार अली बहादुर 36

चित्र संख्या 3.2.1 तालाब खोदते मजदूर 36

चित्र संख्या 3.2.3 नवाब टैंक का दृश्य 37

चित्र संख्या 3.2.4 कैण्टीन, शिवलिंग एवं वट वृक्ष 38

चित्र संख्या 3.2.5 कजली मेला 38

चित्र संख्या 3.2.6 वन चेतना पार्क 39

चित्र संख्या 3.2.7 काली देवी मन्दिर 40

चित्र संख्या 3.2.8 नवाब टैंक पौधशाला 40

चित्र संख्या 3.2.9 सरदार वल्लभ भाई पटेल ऑक्सीजन पार्क 41

चित्र संख्या 3.3.1 राजा दशरथ 42

अध्याय	चित्र सूची	पृष्ठ संख्या

चित्र संख्या 3.3.2 राजा दशरथ का परिवार 42

चित्र संख्या 3.3.3 रानी कैकेई एवं राजा दशरथ 43

चित्र संख्या 3.3.4 श्री राम, लक्ष्मण और सीता का वनगमन 43

चित्र संख्या 3.3.5 रामनिवास मन्दिर का प्रवेश द्वार एवं बाहरी दीवार 43

चित्र संख्या 3.3.6 राम दरबार एवं हनुमान जी की मूर्ति 44

चित्र संख्या 3.3.7 हनुमान चालीसा एवं महन्त जी की प्रतिमाएँ 44

चित्र संख्या 3.3.8 गौशाला, पुजारी जी की कुटिया, प्राचीन कूप एवं बगीचा 45

चित्र संख्या 3.4.1 महर्षि वामदेव 46

चित्र संख्या 3.4.2 महर्षि एवं श्री राम की भेंट 46

चित्र संख्या 3.4.3 बाम्बेश्वर पार्क एवं प्रवेश द्वार 47

चित्र संख्या 3.4.4 छोटा सिद्धन एवं ध्यान शिला 48

चित्र संख्या 3.4.5 सिद्धन मन्दिर 49

चित्र संख्या 3.4.6 साहसिक गुफा 50

चित्र संख्या 3.4.7 जल शोधन केन्द्र एवं वट वृक्ष 51

चित्र संख्या 3.4.8 सूर्य दर्शन स्थल एवं बाँदा व्यू प्वाइण्ट 52

चित्र संख्या 3.4.9 शिवलिंग, देवी मूर्तियाँ एवं ध्वज पोल 53

चित्र संख्या 3.4.10 बजने वाले पत्थर 54

चित्र संख्या 3.4.11 दोपहिया एवं पाइपलाइन मार्ग 55

अध्याय	चित्र सूची	पृष्ठ संख्या

पञ्चम

चित्र संख्या 5.1.1 कुल विद्यार्थियों की जागरूकता से सम्बन्धित सामान्य सम्भावना वक्र (NPC) 94

चित्र संख्या 5.1.2 छात्रों की जागरूकता से सम्बन्धित सामान्य सम्भावना वक्र (NPC) 95

चित्र संख्या 5.1.3 छात्राओं की जागरूकता से सम्बन्धित सामान्य सम्भावना वक्र (NPC) 96

चित्र संख्या 5.2.1 कुल विद्यार्थियों की जागरूकता से सम्बन्धित सामान्य सम्भावना वक्र (NPC) 97

चित्र संख्या 5.2.2 प्रशिक्षित विद्यार्थियों की जागरूकता से सम्बन्धित सामान्य सम्भावना वक्र (NPC) 98

चित्र संख्या 5.2.3 अप्रशिक्षित विद्यार्थियों की जागरूकता से सम्बन्धित सामान्य सम्भावना वक्र (NPC) 99

चित्र संख्या 5.3.1.1 रामनिवास मन्दिर के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता का प्रश्नवार विश्लेषण रेखा-चित्र 101

चित्र संख्या 5.3.1.2 रामनिवास मन्दिर के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों का समग्र जागरूकता विश्लेषण रेखा-चित्र 102

चित्र संख्या 5.3.2.1 नवाब टैंक के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता का प्रश्नवार विश्लेषण रेखा-चित्र 105

अध्याय	चित्र सूची	पृष्ठ संख्या

चित्र संख्या 5.3.2.2 नवाब टैंक के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों का समग्र जागरूकता विश्लेषण रेखा-चित्र 106

चित्र संख्या 5.3.3.1 पहाड़ी बाबा आश्रम के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता का प्रश्नवार विश्लेषण रेखा-चित्र 109

चित्र संख्या 5.3.3.2 पहाड़ी बाबा आश्रम के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों का समग्र जागरूकता विश्लेषण रेखा-चित्र 110

चित्र संख्या 5.3.4.1 सिद्धन के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता का प्रश्नवार विश्लेषण रेखा-चित्र 113

चित्र संख्या 5.3.4.2 सिद्धन के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों का समग्र जागरूकता विश्लेषण रेखा-चित्र 114

चित्र संख्या 5.4 बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन रेखा-चित्र 117

चित्र संख्या 5.5 बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति महाविद्यालयीन प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित विद्यार्थियों की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन रेखा-चित्र 119

चित्र संख्या 5.6 बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति प्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन रेखा-चित्र 121

अध्याय	चित्र सूची	पृष्ठ संख्या

चित्र संख्या 5.7 बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन रेखा-चित्र 123

चित्र संख्या 5.8 बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्रों की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन रेखा-चित्र 125

चित्र संख्या 5.9 ऐतिहासिक विरासतों के प्रति प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन रेखा-चित्र 127

अध्याय प्रथम

अध्ययन परिचय

1.1 शिक्षा: विकास की प्रक्रिया

इक्कीसवीं शताब्दी के आधुनिक भूमण्डलीय युग में किसी भी राष्ट्र के लिये उसके भौतिक एवं मानव संसाधनों का अत्यन्त महत्व है। वस्तुत: किसी राष्ट्र के भौतिक एवं मानव संसाधन ही उसे अग्रणी राष्ट्रों की कतार में खड़ा करने के लिये सक्षम बनाते हैं। भौतिक संसाधनों की उपलब्धता सीमित एवं प्रकृतिजन्य होने के कारण आज के युग में मानव संसाधनों के विकास पर अधिक जोर दिया जाने लगा है। निःसन्देह किसी भी राष्ट्र अथवा समाज के विकास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन मानव है। कोई भी राष्ट्र तभी उन्नति कर सकता है, जब उस राष्ट्र के सभी नागरिकों को विकास के सर्वोत्तम अवसर मिलें तथा वे उन अवसरों का लाभ उठाने में समर्थ हों। मानव को पृथ्वी का सबसे विलक्षण, विचारशील तथा सक्रिय प्राणी माना जाता है। अपनी मानसिक क्षमता, चिन्तन प्रक्रिया तथा सृजनात्मक शक्ति के आधार पर मानव ने न केवल ब्रह्माण्ड की परिधि को लांघा है वरन् अपनी सभ्यता एवं संस्कृति का विकास करते हुए आनन्ददायक जीवन व्यतीत करने की दिशा में अग्रसर हुआ है, परन्तु मानव जाति के विकास का आधार शिक्षा प्रणाली ही है।

प्रत्येक मनुष्य के अन्दर कुछ जन्मजात शक्तियाँ निहित होती हैं तथा इन शक्तियों के प्रस्फुटन से ही व्यक्ति का विकास होता है। यदि इन शक्तियों को प्रस्फुटित होने के पर्याप्त अवसर नहीं प्राप्त होते हैं, तो मानव का विकास अधूरा रह जाता है तथा वह अपनी अन्तर्निहित परन्तु अप्रस्फुटित योग्यताओं का लाभ उठाने से वञ्चित रह जाता है। निःसन्देह शिक्षा प्रणाली मानव की योग्यताओं के अधिकतम विकास की सर्वाधिक सरल, व्यवस्थित एवं प्रभावी विधा है। शिक्षा के द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का अधिकतम विकास करके उसके ज्ञान, बोध व कौशल में वृद्धि की जाती है। शिक्षा ही व्यक्ति के व्यवहार को परिमार्जित करती है। शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति को सभ्य व सुसंस्कृत बनाकर उसे समाज व राष्ट्र का एक उपयोगी नागरिक बनाया

जाता है। शिक्षा की यह प्रक्रिया जन्म से प्रारम्भ होकर मृत्युपर्यन्त किसी न किसी रूप में एक सतत प्रक्रिया के रूप में सदैव चलती रहती है। प्रारम्भ में बालक अपने माता-पिता, परिवार के अन्य सदस्यों तथा पड़ोसियों आदि से अनौपचारिक ढंग से शिक्षा प्राप्त करता है। 5–6 वर्ष की आयु होने पर बालक की शिक्षा व्यवस्था औपचारिक शिक्षण संस्थाओं में सुनियोजित ढंग से प्रारम्भ हो जाती है। विद्यालय में दी जाने वाली औपचारिक शिक्षा के साथ-साथ बालक परिवार, समाज, धर्म, जनसंचार, खेलकूद आदि अनेक औपचारिकेत्तर माध्यमों से भी कुछ न कुछ सीखता रहता है। औपचारिक शिक्षा की समाप्ति के उपरान्त भी सीखने-सिखाने का क्रम किसी न किसी रूप में अनवरत चलता रहता है।

1.2 भारत में शिक्षा के स्तर

भारत में सबसे ज्यादा औपचारिक शिक्षा प्रचलित है एवं अधिकांश शिक्षार्थी इसी माध्यम से शिक्षा प्राप्त करते हैं। वर्तमान में भारत में औपचारिक शिक्षा के तीन स्तर हैं—

1.2.1 प्राथमिक शिक्षा

1.2.2 माध्यमिक शिक्षा

1.2.3 उच्च शिक्षा

1.2.1 प्राथमिक शिक्षा

औपचारिक शिक्षा व्यवस्था के प्रथम स्तर को प्राथमिक शिक्षा कहा जाता है। प्राथमिक शब्द का सामान्य अर्थ है 'प्रारम्भिक' इस प्रकार प्राथमिक शिक्षा से तात्पर्य मुख्य तथा आधारभूत शिक्षा से है। प्रारम्भिक स्तर पर सम्पन्न होने के कारण प्राथमिक शिक्षा, सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था का आधार है। इसे मुख्य शिक्षा इसलिये कहते हैं क्योंकि यह आगे की शिक्षा की नींव होती है। यदि नींव मजबूत होती है तो बच्चों की आगे की शिक्षा सुचारु रूप से चलती है।

प्राथमिक शिक्षा साधारणतया: 10–14 वर्ष तक की आयु पूरी होने तक चलती है। प्राथमिक शिक्षा को तीन भागों में विभाजित किया गया है—

(i) पूर्व प्राथमिक शिक्षा: कक्षा 1 से पूर्व यथा (नर्सरी एवं प्ले ग्रुप)

(ii) प्राथमिक शिक्षा: कक्षा 1 से 5

(iii) उच्च प्राथमिक शिक्षा: कक्षा 6 से 8

1.2.2 माध्यमिक शिक्षा

औपचारिक शिक्षा व्यवस्था के दूसरे स्तर को माध्यमिक शिक्षा कहा जाता है। माध्यमिक शब्द का अर्थ है—मध्य की। माध्यमिक शिक्षा, प्राथमिक और उच्च शिक्षा के मध्य की शिक्षा है। यह प्राथमिक और उच्च शिक्षा के बीच की कड़ी है। यह ऐसी शिक्षा है, जो किशोर बच्चों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिये दिशा प्रदान करती है। माध्यमिक शिक्षा ही उच्च शिक्षा का आधार है।

भारत में कक्षा 9 से 12 तक की शिक्षा को माध्यमिक शिक्षा कहते हैं जो प्राथमिक शिक्षा के उपरान्त 16–18 वर्ष की आयु तक चलती है।

1.2.3 उच्च शिक्षा

उच्च शिक्षा का अर्थ है—सामान्य रूप से सबको दी जाने वाली शिक्षा से ऊपर किसी विशेष विषय या विषयों में विशेष, विषद तथा सूक्ष्म शिक्षा। यह शिक्षा के उस स्तर का नाम है, जो विश्वविद्यालयों, व्यावसायिक विश्वविद्यालयों, कम्युनिटी महाविद्यालयों, लिबरल आर्ट कॉलेजों एवं प्रौद्योगिकी संस्थानों आदि के द्वारा दी जाती है। प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा के बाद यह शिक्षा का तृतीय स्तर है, जो प्राय: ऐच्छिक (non-compulsory) होता है। इसके अन्तर्गत स्नातक, परास्नातक (Postgraduate education) एवं व्यावसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण आदि आते हैं।

भारत में उच्च शिक्षा से तात्पर्य कक्षा 12 के उपरान्त दी जाने वाली शिक्षा से है। यह शिक्षा महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय स्तर पर दी जाती है।

1.3 भारत में उच्च शिक्षा का विकास

उच्च शिक्षा के विकास से तात्पर्य समय-समय पर इसमें होने वाली मात्रात्मक प्रगति एवं गुणात्मक उन्नयन से है। भारतीय शिक्षा के इतिहास का अध्ययन तीन कालों के अन्तर्गत किया जाता है—प्राचीन, मध्य और आधुनिक काल। अध्ययन की दृष्टि से आधुनिक काल को भी प्रायः 2 उपकालों में विभाजित किया जाता है—ब्रिटिश शासन काल और स्वातन्त्र्योत्तर काल।

1.3.1 प्राचीन काल में उच्च शिक्षा का विकास

वैदिक काल में उच्च शिक्षा व्यवस्था गुरुकुल में होती थी। 8 से 12 वर्ष की आयु पर बच्चों का गुरुकुल में प्रवेश होता था। गुरुकुल में प्रवेश के समय बच्चों का **उपनयन संस्कार** होता था, जिसके बाद उनकी शिक्षा प्रारम्भ होती थी। वैदिक कालीन उच्च शिक्षा की पाठ्यचर्या को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है—सामान्य और विशिष्ट। इस काल में उच्च स्तर पर संस्कृत भाषा, व्याकरण, धर्म एवं नीति शास्त्र की शिक्षा अनिवार्य रूप से दी जाती थी। इसके अतिरिक्त उन्हें नित्य व्यायाम, गुरुकुल की व्यवस्था और गुरु सेवा करनी होती थी। इसे सामान्य शिक्षा की संज्ञा दी जाती थी। प्रारम्भिक वैदिक काल में वैदिक साहित्य के विभिन्न ग्रन्थों, कर्मकाण्ड, ज्योतिर्विज्ञान, आयुर्विज्ञान, सैनिक शिक्षा, कृषि, पशुपालन, कला-कौशल, राजनीतिशास्त्र, भूगर्भशास्त्र और प्राणीशास्त्र की शिक्षा ऐच्छिक थी। उत्तर वैदिक काल में उच्च शिक्षा की इस पाठ्यचर्या में अनेक अन्य विषय सम्मिलित किये गये जैसे—इतिहास, पुराण, नक्षत्र विद्या, न्यायशास्त्र, अर्थशास्त्र, देव विद्या, ब्रह्म विद्या और भूत विद्या। इसे विशेष शिक्षा की संज्ञा दी जा सकती है। इस काल में तीर्थ स्थान धर्म प्रचार के केन्द्र होने के साथ-साथ उच्च शिक्षा के केन्द्रों के रूप में विकसित हुए। बड़े-बड़े नगरों में तक्षशिला, पाटलिपुत्र, मिथिला, कन्नौज, कल्याणी, प्रयाग, काशी, अयोध्या, उज्जैन, नासिक, कर्नाटक और कांची उस समय के मुख्य उच्च शिक्षा के केन्द्र थे।

बौद्ध काल में प्राथमिक शिक्षा पूरी करने के बाद उच्च शिक्षा में प्रवेश हेतु प्रवेश परीक्षा होती थी और योग्य छात्रों को उच्च शिक्षा में प्रवेश दिया जाता था। यह शिक्षा सामान्यतः 12 वर्ष की आयु पर शुरू होती थी और 20–25 वर्ष की आयु तक चलती थी। इस अवधि में छात्रों को सर्वप्रथम व्याकरण, धर्म,

ज्योतिष, आयुर्विज्ञान और दर्शन का सामान्य ज्ञान कराया जाता था और उसके बाद विशिष्ट शिक्षा शुरू की जाती थी। विशिष्ट शिक्षा की पाठ्यचर्या में पाली, प्राकृत और संस्कृत भाषा एवं इन भाषाओं के व्याकरण व साहित्य, खगोलशास्त्र, नक्षत्रशास्त्र, न्यायशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, कला (चित्रकला, मूर्तिकला और संगीत), कौशल (कताई, बुनाई रंगाई आदि), व्यवसाय (कृषि, पशुपालन एवं वाणिज्य आदि), भवन निर्माण विज्ञान, आयुर्विज्ञान, बौद्ध धर्म, जैन धर्म, वैदिक धर्म, ईश्वर शास्त्र, तर्क, दर्शन और ज्योतिष इन सभी विषयों एवं क्रियाओं को स्थान दिया गया था। बौद्ध काल में तक्षशिला, नालन्दा, वल्लभी और विक्रमशिला विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा के विश्वविख्यात केन्द्र थे।

1.3.2 मध्यकाल में उच्च शिक्षा का विकास

मध्यकाल में मुसलमान शासकों के शासनकाल में एक नई शिक्षा प्रणाली का विकास हुआ जिसे मुस्लिम शिक्षा प्रणाली कहते हैं। मध्यकाल में उच्च शिक्षा मदरसों में दी जाती थी। इस शिक्षा प्रणाली में उच्च स्तर की शिक्षा का पाठ्यक्रम अधिक विस्तृत था। इस स्तर की पाठ्यचर्चा को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है—लौकिक और धार्मिक। लौकिक पाठ्यचर्या में अरबी तथा फारसी भाषाएँ एवं उनके साहित्य, अंकगणित ज्यामिति, इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र, नीति शास्त्र, ज्योतिष शास्त्र, इस्लामी कानून, यूनानी चिकित्सा और विभिन्न कला-कौशलों एवं व्यवसायों की शिक्षा को स्थान दिया गया था। धार्मिक पाठ्यचर्या में कुरान शरीफ, इस्लामी साहित्य, इस्लामी इतिहास, सूफी साहित्य और शरीयत को स्थान दिया गया था। मध्यकाल में दिल्ली, आगरा, फिरोजाबाद, बदायूँ, फतेहपुर सीकरी, जौनपुर, बीदर एवं मालवा आदि नगरों में उच्च शिक्षा के प्रमुख केंद्रों का विकास हुआ।

1.3.3 आधुनिक काल में उच्च शिक्षा का विकास

अध्ययन की दृष्टि से आधुनिक काल को दो भागों में विभाजित किया जाता है—

(i) ब्रिटिश कालीन शासन में उच्च शिक्षा का विकास

(ii) स्वातन्त्र्योत्तर काल में उच्च शिक्षा का विकास

1.3.3.1 ब्रिटिश कालीन शासन में उच्च शिक्षा का विकास

ब्रिटिश काल में ईसाई मिशनरियों ने सर्वप्रथम शिक्षा के विकास का प्रयत्न किया परन्तु उनके द्वारा ईसाई धर्म की शिक्षा पर अधिक बल दिया गया। बाद में ईस्ट इण्डिया कम्पनी को अपने व्यापारिक और शासन दोनों क्षेत्रों में कनिष्ठ पदों पर कार्य करने के लिये अंग्रेजी पढ़े-लिखे भारतीयों की आवश्यकता हुई, जिस कारण उन्होंने अपनी शिक्षा नीति में परिवर्तन किया और उच्च शिक्षा की संस्थाएँ खोलना शुरू की। कम्पनी ने **1781 में कलकत्ता मदरसा, 1791 में बनारस संस्कृत कॉलेज, 1800 में फोर्ट विलियम कॉलेज** की स्थापना की। 1854 में आए वुड के घोषणा पत्र में घोषणा की गयी कि भारत में लन्दन विश्वविद्यालय के आदर्श पर कोलकाता और मुम्बई में विश्वविद्यालय स्थापित किये जायेंगे और इसके बाद आवश्यकतानुसार मद्रास और अन्य स्थानों पर भी विश्वविद्यालय स्थापित किये जायेंगे। इन विश्वविद्यालयों में सीनेट का गठन किया जायेगा और योग्य एवं अनुभवी कुलपति एवं प्राध्यापक नियुक्त किये जायेंगे। इन विश्वविद्यालयों में प्राच्य एवं पाश्चात्य भाषा एवं साहित्य, विधि तथा इन्जीनियरिंग की उच्च शिक्षा की विशेष व्यवस्था की जायेगी। साथ ही महाविद्यालयों को इनसे सम्बद्ध किया जायेगा। ये विश्वविद्यालय अपने क्षेत्र के महाविद्यालयों को सम्बद्धता प्रदान करेंगे, उन पर नियन्त्रण रखेंगे, उनके छात्रों की परीक्षा लेंगे और उत्तीर्ण छात्रों को प्रमाण-पत्र प्रदान करेंगे।

1857 की क्रान्ति के बाद भारत का शासन सीधे ब्रिटिश सरकार के हाथ में आ गया और शिक्षा सम्बन्धी सारे निर्णय ब्रिटिश सरकार द्वारा लिये जाने लगे। **1882 में भारतीय शिक्षा आयोग (हण्टर कमीशन)** का गठन हुआ। इस आयोग ने सरकार को उच्च शिक्षा का भार भारतीय जनता पर ही छोड़ने का सुझाव दिया। आयोग ने राजकीय महाविद्यालय केवल उन्हीं स्थानों पर खोले जाने का सुझाव दिया जहाँ जनता इन्हें खोलने में असमर्थ हो और जहाँ इनकी माँग हो। आयोग ने उच्च शिक्षा की पाठ्यचर्या को व्यापक बनाने का भी सुझाव दिया जिससे छात्र अपनी रूचि के विषयों का चुनाव कर सकें। 1904 में लॉर्ड कर्जन ने शिक्षा नीति की घोषणा की। उन्होंने उच्च शिक्षा के सम्बन्ध में नये विश्वविद्यालयों को खोलने तथा उनके स्तर को ऊँचा उठाने का सुझाव दिया। इसी समय राष्ट्रीय नेताओं ने राष्ट्रीय आन्दोलन शुरू किया एवं शिक्षा के क्षेत्र में कई संस्थाओं की स्थापना की जिसमें दयानन्द सरस्वती द्वारा 'दयानन्द वैदिक कॉलेज' एवं रवीन्द्र नाथ टैगोर द्वारा

शान्तिनिकेतन में 'ब्रह्मचर्य आश्रम' (जिसे आज 'विश्व भारती विश्वविद्यालय' के रूप में जाना जाता है) उल्लेखनीय है। 1944 में ब्रिटिश सरकार ने पहली बार एक दीर्घकालीन (40 वर्ष) शिक्षा योजना तैयार की। इसे **सार्जेण्ट योजना, 1944** के नाम से जाना जाता है। इस आयोग ने उच्च शिक्षा में बड़ा परिवर्तन किया और इण्टरमीडिएट की कक्षाएँ विश्वविद्यालयों से हटा करके माध्यमिक शिक्षा से जोड़ दी और स्नातक के पाठ्यक्रम को तीन वर्षीय कर दिया। निर्धन छात्रों के लिए छात्रवृत्तियों की व्यवस्था की गयी तथा शिक्षकों के प्रशिक्षण की व्यवस्था भी की गयी।

1.3.3.2 स्वातन्त्र्योत्तर काल में उच्च शिक्षा का विकास

15 अगस्त, 1947 को हमारा देश स्वतन्त्र हुआ। हमने अपने राष्ट्र के पुनर्निर्माण के सम्बन्ध में कुछ अपने ढंग से सोचना शुरू किया। हर क्षेत्र में परिवर्तन और सुधार की प्रक्रिया आरम्भ हुई, शिक्षा के क्षेत्र में भी। सबसे पहले हमारा ध्यान गया तत्कालीन उच्च शिक्षा पर। उस समय यह सैद्धान्तिक अधिक और व्यावहारिक कम थी। इसका स्तर भी अन्य देशों की तुलना में नीचा था। अतः भारत में उच्च शिक्षा के विकास हेतु भारत सरकार ने **4 नवम्बर, 1948** को **डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन** की अध्यक्षता में **विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग** की नियुक्ति की। यह स्वतन्त्र भारत का सबसे पहला शिक्षा आयोग था। इस आयोग ने उच्च शिक्षा के विकास हेतु विभिन्न सुझाव प्रस्तुत किये। आयोग के सुझावों का स्वीकार करते हुए उच्च शिक्षा के क्षेत्र में निम्नलिखित कार्य किये गये—

- सरकार ने **1973 में विश्वविद्यालय अनुदान समिति को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग** में बदल दिया और 1956 में एक कानून द्वारा इसे स्वतन्त्र संस्था का दर्जा प्रदान किया। यह आयोग देश की उच्च शिक्षा की व्यवस्था, उसके स्तर को बनाये रखने, उच्च शिक्षा में समन्वय स्थापित करने और सरकार को बढ़ावा देने में विशेष भूमिका निभा रहा है।
- सरकार ने 1954 में केन्द्र में 'ग्रामीण उच्च शिक्षा समिति' की स्थापना की और इसे ग्रामीण शिक्षा का उत्तरदायित्व सौंपा।

- इस आयोग के सुझाव पर देश में क्षेत्र विशेष की आवश्यकतानुसार **विश्वविद्यालयों की स्थापना** में तेजी आयी।
- इस आयोग के सुझाव पर कृषि, वाणिज्य, चिकित्सा, विधि, शिक्षक-प्रशिक्षण और इन्जीनियरिंग के स्वतन्त्र महाविद्यालयों की स्थापना हुई।
- कुछ विश्वविद्यालयों में 3 वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम शुरू किये गये, अब तो ये प्रायः सभी विश्वविद्यालयों में लागू हो गये हैं।
- कुछ विषयों में उच्च शिक्षा की व्यवस्था **प्रादेशिक भाषाओं** में शुरू की गयी। साथ ही पारिभाषिक शब्दकोशों का निर्माण कार्य तेजी से शुरू हुआ।
- विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में **1948 में राष्ट्रीय कैडेट कोर और 1969 में राष्ट्रीय सेवा योजना** की शुरुआत की गयी।
- छात्र कल्याण योजना चालू हुई—विश्वविद्यालयों में छात्र कल्याण सलाहकार बोर्ड की स्थापना हुई, छात्र और शिक्षकों की नियुक्ति हुई, विद्यालयों और महाविद्यालयों में उचित मूल्यों पर मध्यान्ह भोजन एवं जलपान की व्यवस्था हुई और छात्रावासों का निर्माण किया गया।

इस आयोग के सुझावों के द्वारा उच्च शिक्षा के क्षेत्र में कुछ सुधार तो हुआ परन्तु वह सब हाथ नहीं लगा, जिसे हम प्राप्त करना चाहते थे। अतः शिक्षा के पुनर्गठन पर सोचने के लिये भारत सरकार ने **14 जुलाई, 1964 को डॉ० दौलत सिंह कोठारी** की अध्यक्षता में राष्ट्रीय शिक्षा आयोग का गठन किया।

इस आयोग ने सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था के क्षेत्र में सुझाव प्रस्तुत किये परन्तु उच्च शिक्षा के क्षेत्र में प्रस्तुत सुझावों का प्रभाव यह हुआ कि उच्च शिक्षा में डिग्री कोर्स को 3 वर्ष कर दिया गया। उच्च शिक्षा और व्यावसायिक, तकनीकी एवं प्रबन्ध शिक्षा के विस्तार के साथ-साथ उनके उन्नयन के लिये ठोस कदम उठाये गये। साथ ही शिक्षक-शिक्षा में सुधार होने शुरू हुए और प्रौढ़ शिक्षा के कार्यक्रमों को व्यापक बनाया गया। इस आयोग ने शैक्षिक अवसरों की समानता के लिये जो सुझाव दिये उनका अनुपालन भी शुरू हुआ। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय शिक्षा आयोग ने भारतीय शिक्षा के समस्त पहलुओं पर विस्तार से विचार किया और उनके सम्बन्ध में ठोस सुझाव दिये।

1.4 उच्च शिक्षा की समस्याएँ

भारत में उच्च शिक्षा की समस्याओं को निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है—

- उच्च शिक्षा में **व्यावहारिकता का अभाव** उच्च शिक्षा की एक प्रमुख समस्या है।
- वैसे तो हमारे देश में उच्च शिक्षा के बहुत संस्थान हैं किन्तु ऐसे संस्थानों की कमी है जो गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करते हैं। अतः **शिक्षा की गुणवत्ता में कमी होना** उच्च शिक्षा की एक प्रमुख समस्या है।
- वर्तमान समय में हमारे देश में उच्च शिक्षा के संस्थान **राजनीतिक केन्द्र** बनते हुए दिखायी पड़ते हैं जो उच्च शिक्षा के लिये एक प्रमुख समस्या है।
- हमारे देश में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी बहुत अधिक संख्या में लोग बेरोजगार घूम रहे हैं। अतः **रोजगार देने में सफल न हो पाना** उच्च शिक्षा की एक प्रमुख समस्या है।
- देश के अधिकतर उच्च शिक्षण संस्थानों में शिक्षकों के पद लम्बे समय तक रिक्त रहते हैं। अतः **शिक्षकों की कमी** उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक बड़ी समस्या है।
- **क्षेत्रीय ऐतिहासिक विरासतों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित न किया जाना:** भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली आजादी के 75 वर्षों के पश्चात भी मैकाले द्वारा निर्मित नीतियों से ग्रस्त है। मैकाले ने अपने विवरण पत्र से अंग्रेजी द्वारा पाश्चात्य सभ्यता को इस देश पर थोपने का प्रयास किया, जिससे हम अपनी भारतीय सभ्यता और संस्कृति को तिरस्कृत दृष्टि से देखें और हमारे अन्दर हीन भावना व्याप्त हो। मैकाले ने भारतीय संस्कृति और धर्म की महानता व सहिष्णुता का अपमान किया।

आज की भारतीय शिक्षा की नींव मैकाले के विवरण पत्र (1835) के प्रभाव में पड़ी तथा भारत में अंग्रेज माध्यम के स्कूल और महाविद्यालय खुलने शुरू हो गये। यह शिक्षा प्रणाली हमारे देश की मूल प्रणाली बन गयी। आज भी हमारी शिक्षा इसी माध्यम पर आधारित है। मैकाले की नीति का भारतीय भाषाओं एवं संस्कृति के विकास पर भी बहुत ही नकारात्मक प्रभाव पड़ा।

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि भारतीय भाषाओं एवं संस्कृति को प्राथमिकता देने वाली नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 में लागू हो गयी है परन्तु अभी भी इसका पूर्णरूपेण क्रियान्वयन होना शेष है। अभी भी शिक्षा के किसी भी स्तर में क्षेत्रीय भौगोलिक धरोहरों का समावेश किया जाना शेष है।

1.5 समस्या का प्रादुर्भाव

अनुसन्धान समस्या की उत्पत्ति प्रायः इस अनुभूति के द्वारा होती है कि किसी क्षेत्र विशेष में किसी कार्य के सुचारू ढंग से संचालन में कोई बाधा है तथा उस बाधा को दूर किया जा सकता है। वस्तुतः आवश्यकता, जिज्ञासा व असन्तोष को अविष्कार की पृष्ठभूमि तैयार करने में अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाता है। किसी भी राष्ट्र का इतिहास उसके वर्तमान और भविष्य की नींव होता है। देश का इतिहास जितना गौरवमयी होगा वैश्विक स्तर पर उसका स्थान उतना ही ऊँचा माना जाएगा। वैसे तो बीता हुआ कल कभी वापस नहीं आता लेकिन उस काल में बनी इमारतों और लिखे गये साहित्य उन्हें हमेशा सजीव बनाए रखते हैं।

यह सत्य है कि वक्त रहते यदि हमने अपनी गलतियों को नहीं सुधारा तो हम अपनी भौगोलिक विरासतों को खो देंगे। अतः आवश्यकता है कि हम सभी अपनी भौगोलिक विरासतों के प्रति जागरूक हों। साथ ही आवश्यकता इस बात की भी है कि समाप्त हो चुकी या समाप्ति की कगार पर पहुँच चुकी भौगोलिक विरासतों को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जाये तथा भविष्य के लिये इन्हें संरक्षित किया जाये। यह तभी सम्भव होगा जब देश का प्रत्येक नागरिक अपनी भौगोलिक विरासतों के प्रति जागरूक होगा तथा उनकी सुरक्षा की जिम्मेदारी को समझेगा।

अतः उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत समस्या का चयन किया गया। इस समस्या के अध्ययन से सिर्फ विद्यार्थियों को ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण राष्ट्र को लाभ होगा।

1.6 समस्या कथन

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध का समस्या कथन इस प्रकार है—

बाँदा नगर की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन

1.7 अध्ययन समस्या का औचित्य

शोधकर्ता को समस्या का चयन करने से पूर्व उसके औचित्य एवं उपयोगिता के विषय में विचार कर लेना चाहिए। शोध गहन निरीक्षण का प्रत्यय होता है, इसमें किसी सीमित क्षेत्र की किसी विशेष समस्या का सर्वांगीण विश्लेषण किया जाता है। शोध की निरीक्षण प्रक्रिया में वैज्ञानिक निरीक्षण को क्रमबद्ध रूप से एवं सोद्देश्य सुनियोजित किया जाता है।

प्रस्तुत अध्ययन में बाँदा नगर की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में जागरूकता का अध्ययन किया जा रहा है। ये विरासतें हमारी धार्मिक एवं ऐतिहासिक धरोहर हैं। ये विरासतें हमारे अतीत के विषय में बहुत कुछ बताती हैं एवं आने वाली पीढ़ी को हमारे धर्म एवं इतिहास से परिचित करवाती हैं। इन स्थलों में प्राकृतिक सुन्दरता का समावेश है, जो इनको आकर्षण का केंद्र बनाती हैं। जब पर्यटक इन क्षेत्रों का भ्रमण करते हैं तो उन्हें महन्तों से मिलने का अवसर मिलता है, जिनसे वे अपार ज्ञान एवं धर्म की शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। परन्तु आज हमारी ऐतिहासिक विरासतों को पर्याप्त संरक्षण न मिल पाने एवं लोगों को सही जानकारी न होने की वजह से इनका अस्तित्व समाप्त हो रहा है। इनके आसपास सफाई न होने, यहाँ पहुँचने के मार्ग में कठिनाई होने तथा आसपास बनी घनी बस्तियों के कारण इन विरासतों का भौगोलिक एवं आध्यात्मिक क्षरण होता जा रहा है। जब तक लोग अपनी ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूक नहीं होंगे तब तक इन स्थलों को संरक्षित रख पाना मुश्किल होगा। अतः प्रस्तुत अध्ययन इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर किया जा रहा है।

1.8 समस्या में निहित शब्दों की व्याख्या

परिभाषीकरण से तात्पर्य अध्ययन की समस्या को चिन्तन द्वारा सम्पूर्ण समस्या क्षेत्र से बाहर निकाल कर स्पष्ट करना है। प्रस्तुत अध्ययन के शीर्षक में प्रयुक्त कठिन शब्दों की व्याख्या निम्नानुसार है—

1.8.1 बाँदा नगर

बाँदा शहर, भारत के उत्तर प्रदेश राज्य में केन नदी (यमुना की सहायक नदी) के किनारे स्थित है। यह शहर बुन्देलखण्ड क्षेत्र में स्थित है। यह शहर महर्षि वामदेव की तपोभूमि है, उन्हीं के नाम पर इसे बाँदा नाम से जाना जाता है। उत्तर प्रदेश में 6 मई, 1997 को बाँदा जनपद से काट कर छत्रपति शाहू जी महाराज नगर के नाम से नए जिले का सृजन किया गया, जिसमें कर्वी तथा मऊ तहसीलें शामिल थीं। कुछ समय बाद 4 सितम्बर, 1998 को जिले का नाम बदलकर चित्रकूट कर दिया गया।

बाँदा एक ऐतिहासिक शहर है। बाँदा के चारो तरफ अनेक पर्यटन स्थल हैं। चित्रकूट यहाँ से करीब 70 किलोमीटर तथा कालिन्जर करीब 60 किलोमीटर है।

कार्यात्मक परिभाषा—प्रस्तुत लघु शोध में बाँदा नगर से तात्पर्य बाँदा नगर पालिका द्वारा निर्धारित नगरीय क्षेत्र की सीमा के अन्तर्गत अवस्थित क्षेत्र से है। (मानचित्र परिशिष्ट—I)

1.8.2 ऐतिहासिक विरासत

देश के अन्दर हमारे चारो तरफ मौजूद वे सभी वस्तुएँ जो हमें हमारे पूर्वजों के द्वारा प्राप्त हुई हैं, विरासत कहलाती हैं। ऐसे खास स्थल (स्मारक, भवन, मन्दिर, पूजा स्थल, आश्रम, तालाब इत्यादि) जिनका सम्बन्ध इतिहास से होता है, ऐतिहासिक विरासत कहलाते हैं।

कार्यात्मक परिभाषा—प्रस्तुत लघु शोध में ऐतिहासिक विरासत से तात्पर्य बाँदा नगर के नवाब टैंक, पहाड़ी बाबा आश्रम, राम निवास मन्दिर तथा सिद्धन से है।

1.8.3 महाविद्यालयीन विद्यार्थी

महाविद्यालयीन विद्यार्थियों से तात्पर्य कक्षा 12 उत्तीर्ण करने के बाद उच्च शिक्षा हेतु देश के विभिन्न महाविद्यालय में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों से है।

कार्यात्मक परिभाषा—प्रस्तुत लघु शोध में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों से तात्पर्य बाँदा नगर में अवस्थित बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी से सम्बद्ध विभिन्न महाविद्यालयों में अध्ययनरत संस्थागत विद्यार्थियों से है।

1.8.4 जागरूकता

विकिपीडिया के अनुसार—जागरूकता किसी चीज के प्रति सचेत होने की अवस्था है। अधिक विशेष रूप से, यह प्रत्यक्ष रूप से जानने, महसूस करने और घटनाओं का संज्ञान लेने की क्षमता है।

कार्यात्मक परिभाषा—प्रस्तुत लघु शोध में जागरूकता से तात्पर्य महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की बाँदा नगर की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जानकारी से है।

1.8.5 अध्ययन

किसी विषय को सीखने और समझने के लिए दिमाग लगाना (विशेषकर पढ़कर) अध्ययन कहलाता है।

1.9 अध्ययन के उद्देश्य

शोध अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

- चयनित ऐतिहासिक विरासतों का अध्ययन करना।
- चयनित ऐतिहासिक विरासतों के प्रति विद्यार्थी जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण करना।

- चयनित ऐतिहासिक विरासतों के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता का उनके लिंग एवं प्रशिक्षण स्तरानुसार अध्ययन करना।
- चयनित ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूकता संवर्धन के सम्बन्ध में सुझाव प्रस्तुत करना।
- चयनित ऐतिहासिक विरासतों से सम्बन्धित ई-ब्रोशुर (e-brochure) तैयार करना।
- चयनित ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूकता के संवर्धन के सम्बन्ध में व्यवहारिक कार्य करना।

1.10 अध्ययन के चर

शोध अध्ययन के सन्दर्भ में निम्नलिखित चरों को मुख्य रूप से लिया गया है—

1.10.1 मापदण्ड चर

- बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति विद्यार्थियों की जागरूकता।

1.10.2 वर्गीकरण चर

- **लिंग**—छात्र-छात्राएँ
- **विद्यार्थी स्तर**—प्रशिक्षित-अप्रशिक्षित

1.11 अध्ययन की परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत लघु शोध की परिकल्पनाएँ निम्नलिखित हैं—

I. बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

II. बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति महाविद्यालयीन प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित विद्यार्थियों की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

III. बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति प्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

IV. बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

V. बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्रों की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

VI. बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

1.12 अध्ययन का परिसीमांकन

किसी भी अनुसन्धान कार्य में एक महत्वपूर्ण सोपान समस्याओं को सीमांकित करना है। कोई भी शोधकर्ता शोध कार्य के लिए किसी विशेष समस्या-ग्रस्त क्षेत्र का चुनाव करता है तथा विस्तृत अध्ययन के स्थान पर गहन अध्ययन को वरीयता देता है। समस्या का स्वरूप साधारणत: अधिक व्यापक होता है। समस्या का व्यावहारिक रूप में अध्ययन करने के लिए उसका सीमांकन करना आवश्यक होता है। सीमांकन अध्ययन की चहारदीवारी होता है। शोधकर्ता ने प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित सीमांकन किया है—

- प्रस्तुत अध्ययन बाँदा नगर की निम्नलिखित ऐतिहासिक विरासतों के अध्ययन तक सीमित है—

  (i) नवाब टैंक

  (ii) राम निवास मन्दिर

  (iii) पहाड़ी बाबा आश्रम

  (iv) सिद्धन

- प्रस्तुत अध्ययन बाँदा नगर के संस्थागत महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता के अध्ययन तक सीमित है।

- प्रस्तुत अध्ययन चयनित विद्यार्थियों के लिंग एवं प्रशिक्षण स्तरानुसार तुलनात्मक अध्ययन तक सीमित है।
- प्रस्तुत अध्ययन स्मार्टफोन प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों के अध्ययन तक सीमित है।

1.13 अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता

भारत सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक रूप से समृद्ध देश है। हमारी कला एवं संस्कृति की आधारशिला हमारे देश की ऐतिहासिक विरासत है। हमारी एक बहुत बड़ी समस्या अपनी ऐतिहासिक विरासतों को सुरक्षित न रख पाना है। हमारे देश में ऐसे अनगिनत ऐतिहासिक स्थल हैं जिनकी देखभाल ठीक ढंग से नहीं हो रही है। इनमें से कुछ तो इतनी बुरी तरह उपेक्षित हैं कि अगर उन पर ध्यान न दिया गया तो बहुत ही जल्द विलुप्त हो जायेंगे। सरकारी विभाग अपनी सीमाओं और साधनों की कमी के कारण केवल उन स्थलों पर ध्यान देते हैं जो उनकी सूची में शामिल है परन्तु इतना काफी नहीं है। देश की ऐतिहासिक धरोहरों के संरक्षण की जिम्मेदारी केवल सरकार की ही नहीं वरन् यह देश के सभी लोगों का मौलिक कर्तव्य भी है किन्तु यह तभी सम्भव होगा जब लोग अपनी ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूक होंगे। अत: यह शोध कार्य इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर किया जा रहा है।

अध्याय द्वितीय

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

2.1 प्रस्तावना

मानव ज्ञान के तीन पक्ष होते हैं—ज्ञान को एकत्र करना, एक-दूसरे तक पहुँचाना और ज्ञान में वृद्धि करना। किसी भी विषय के विकास में विशेष स्थान की प्राप्ति के लिए शोधकर्ता को पूर्व सिद्धांतों से भलीभांति अवगत होना चाहिए। सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा शोधकर्ता यह निश्चित कर सकता है कि उसके द्वारा प्रस्तावित शोध से सम्बन्धित विषयों पर विचारणीय कार्य पहले हो चुका है अथवा नहीं।

प्रत्येक प्रकार के वैज्ञानिक अनुसन्धान में चाहे वह भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में हो यह सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में, साहित्य का पुनरावलोकन एक अनिवार्य एवं प्रारम्भिक कथन है। सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान-कोषों, पत्र-पत्रिकाओं, प्रति-लेखों, विज्ञप्तियों, प्रकाशित-अप्रकाशित शोध-प्रबन्धों आदि से है; जिनके अध्ययन से अनुसन्धानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा निर्मित करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। एक अनुसन्धान दूसरे अनुसन्धान के लिए सहायक सिद्ध होता है। इससे एक तो कार्य की पुनरावृत्ति नहीं होती, दूसरा पूर्व में जिन तथ्यों पर प्रकाश नहीं डाला गया उन पर प्रकाश डालकर शोधग्रन्थ को महत्वपूर्ण बनाया जा सकता है।

जॉन डब्ल्यू बेस्ट के अनुसार— "मान्यता प्राप्त अधिकारियों और पिछले शोध के लेखन का सारांश इस बात का प्रमाण प्रदान करता है कि शोधकर्ता पहले से ज्ञात, अज्ञात और अनुपयोगी से परिचित है।"

"A summary of the writings of recognized authorities and of previous research provides evidence that the researcher is familiar with what is already known and what is still unknown and untested."

— **John W. Best.**

2.1.1 सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण के उद्देश्य

उपरोक्त परिभाषा से सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण के निम्नलिखित उद्देश्य प्राप्त होते हैं—

- साहित्य के पुनरावलोकन से शोधकर्ता को विषय की गहराई तक पहुँचने में सफलता मिलती है।
- शोधकर्ता यह जान जाता है कि सम्बन्धित क्षेत्र में अभी तक कितना कार्य हो चुका है तथा कितना करना शेष है।
- शोधकर्ता जागरूक हो जाता है तथा समस्या के सभी पक्षों पर सोच-विचार करता है।
- शोध में प्रयुक्त की जाने वाली विधियाँ, न्यादर्श, परीक्षण तथा वर्गीकरण करने हेतु मार्गदर्शन मिलता है।
- यह परिणामों के विश्लेषण में सहायता करता है तथा उपयोग, निष्कर्षों एवं तुलनात्मक तथ्यों को निर्धारित करता है अर्थात सम्बन्धित अध्ययनों से निकाले गए निष्कर्षों की तुलना की जा सकती है।
- समस्या के परिभाषीकरण, अवधारणाएँ, सीमांकन तथा परिकल्पना के निर्माण में सहायता करता है।

इस प्रकार पूर्व शोधों का पुनरावलोकन वर्तमान में किए जाने वाले शोध हेतु प्रकाश स्तम्भ का कार्य करता है। सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन शोधार्थी को ज्ञान के उस शिखर तक ले जाता है, जहाँ वह अपने क्षेत्र की नवीन समस्याओं से परिचित होता है। वास्तव में सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के बिना वह उचित दिशा में एक कदम भी आगे नहीं बढ़ा सकता। जब तक उसे यह ज्ञात न हो कि उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है? किस विधि से कार्य हुआ है? तथा उसके निष्कर्ष क्या रहे हैं? वह अपने शोध कार्य को आगे नहीं ले जा सकता। अतः सम्बन्धित साहित्य अनुसन्धान के सभी स्तर पर सहायता प्रदान करता है।

2.1.2 सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण की आवश्यकता

सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण की आवश्यकता को निम्न बिन्दुओं के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है—

- प्रत्येक अनुसन्धानकर्ता के लिये यह आवश्यक है कि वह दूसरों द्वारा किये गये शोधों के आधार पर अपनी समस्या से सम्बन्धित साहित्य की सूचनाओं से भली-भाँति अवगत हो। अतः इस दृष्टि से सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण आवश्यक है।
- शोधकर्ता सम्बन्धित साहित्य से अपनी रूचि के अनुरूप शोधकार्य का क्षेत्र चुनता है तथा इस शोध का गुणात्मक तथा मात्रात्मक विश्लेषण शोधकर्ता को एक दिशा प्रदान करता है।
- अध्ययनकर्ता साहित्य से शोध की समस्या का चयन करता है तथा साहित्य के पुनर्निरीक्षण के आधार पर अपनी परिकल्पनाएँ बनाता है तथा अनुसन्धान के परिणामों और निष्कर्षों पर वाद-विवाद किया जा सकता है।
- यह समस्या समाधान हेतु अनुसन्धान की समुचित विधि का सुझाव देता है।
- तुलनात्मक आँकड़ों को प्राप्त करने एवं विश्लेषण करने में सहायक होता है।
- सम्बन्धित साहित्य समस्या के सीमांकन में सहायक होता है।
- सम्बन्धित साहित्य का गम्भीर अध्ययन अनुसन्धानकर्ता के ज्ञानकोष की वृद्धि करता है।

2.1.3 सम्बन्धित साहित्य के स्रोत

सम्बन्धित साहित्य की सूचनाओं के स्रोत से तात्पर्य अनुसन्धान विषय में किये गये पूर्व अध्ययनों से होता है तथा इसके लिये शोधकर्ता को अध्ययन सामग्री की आवश्यकता होती है। यह अध्ययन सामग्री शोधकर्ता को विभिन्न स्रोतों से प्राप्त होती है। स्रोत लिखित एवं संकलित हो सकते हैं, इससे शोधकर्ता को उस क्षेत्र में हुए कार्यों के बारे में जानकारी मिलती है, उसकी सूझ एवं अन्तर्दृष्टि का विकास होता है।

सम्बन्धित साहित्य की सूचनाओं के स्रोत दो प्रकार के होते हैं—

1. प्रत्यक्ष स्रोत
2. अप्रत्यक्ष स्रोत

1) **प्रत्यक्ष स्रोत:** शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षा साहित्य के रूप में सूचना के प्रत्यक्ष स्रोत इस प्रकार के प्राप्त होते हैं—

- **पत्रिकाओं में उपलब्ध सामयिक साहित्य**—शोध से सम्बन्धित जो कार्य हुए हैं उनकी साहित्य पत्रिकाएँ आदि हो सकती हैं, इनका साहित्य नवीन घटनाओं से सम्बन्धित होता है।
- **शोध प्रबन्ध**—विषय से सम्बन्धित शोध मिल सकते हैं। शोध वे ही नहीं होते लेकिन उनकी रूपरेखा मिल जाती है।
- **एक ही विषय पर निबन्ध पुस्तिकाएँ, वार्षिक पुस्तकें तथा बुलेटिन**—शोध चाहे दार्शनिक हो या सर्वे का दोनों में ही सम्बन्धित पुस्तकों को पढ़े बिना शोध कार्य सम्पन्न नहीं किया जा सकता।

2) **अप्रत्यक्ष स्रोत:** सूचना के अप्रत्यक्ष स्रोत अथवा शिक्षा साहित्य के लिये निर्देशिका निम्न रूपों में प्राप्त होती है—

- शिक्षा के विश्व ज्ञान कोष।
- शिक्षा सूची पत्र।
- शिक्षा सार।
- पत्रिकाएँ एवं सहायक पुस्तकें।
- मोनोग्राफ, बुलेटिन एवं वार्षिक पुस्तकें।

2.2 अध्ययन से सम्बन्धित कतिपय शोध अध्ययन

प्रस्तुत शोध कार्य में जागरूकता एवं ऐतिहासिक विरासत से सम्बन्धित विभिन्न शोधों का अध्ययन किया गया है, इनका विवरण निम्न प्रकार है—

2.2.1 जागरुकता से सम्बन्धित शोध अध्ययन

1. निधि अवस्थी (2005), ने *'ग्रामीण और नगरीय परिवारों की जनसंख्या नियंत्रण के प्रति जागरूकता का अध्ययन'* किया, जिसमें न्यादर्श के रूप में कानपुर नगर के 400 ग्रामीण तथा 400 नगरीय परिवारों को शामिल किया गया। ग्रामीण और नगरीय परिवारों की जनसंख्या नियंत्रण के प्रति जागरूकता के प्रदत्त संकलन हेतु शोधार्थिनी द्वारा 62 प्रश्नों की स्वनिर्मित प्रश्नावली तथा T.S. Sodhi द्वारा निर्मित Attitude Scale Towards small family and population education (ASSFPE) का प्रयोग किया। इस अध्ययन में उन्होंने पाया कि ग्रामीण परिवारों में आयु जागरूकता को प्रभावित कर रही है। ग्रामीण परिवारों में **15-25 आयु वर्ग में अधिक जागरूकता प्राप्त हुई है, परन्तु नगरीय परिवारों की जागरूकता पर आयु का कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ रहा** है।

2. मधुरिमा मिश्रा (2009), ने *'महिलाओं में पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरूकता पर एक समाजशास्त्रीय अध्ययन'* किया। इस अध्ययन में कानपुर नगर की 400 महिलाओं को न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया गया। महिलाओं में पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरूकता के प्रदत्त संकलन हेतु स्वनिर्मित साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया। इस अध्ययन में उन्होंने पाया कि **अशिक्षित महिलाओं की तुलना में शिक्षित महिलाएँ पर्यावरण के प्रति अधिक जागरूक** थीं।

3. अर्चना सक्सेना (2010), ने *'पर्यावरण संरक्षण एवं प्रदूषण उन्मूलन के प्रति जनमानस की जागरूकता एवं सहभागिता का अध्ययन'* किया। इस अध्ययन में उन्होंने कानपुर नगर के 600 व्यक्तियों का चयन न्यादर्श के रूप में किया। पर्यावरण संरक्षण के प्रति जनमानस की जागरूकता के प्रदत्त संकलन हेतु स्वर्निर्मित पर्यावरण संरक्षण प्रश्नावली का प्रयोग किया गया, जिसमें कुल 50 प्रश्न रखे गये। इस अध्ययन में उन्होंने पाया कि **छात्रों की तुलना में छात्राएँ प्रदूषण उन्मूलन के प्रति अधिक जागरूक** हैं, जबकि **नौकरीपेशा महिलाओं की तुलना में नौकरीपेशा पुरुष पर्यावरण संरक्षण के प्रति अधिक** जागरूक हैं।

4. योगेश पाठक (2011), ने *'पूर्वी उत्तर प्रदेश के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों का सूचना क्रान्ति, परम्परागत विषयों तथा पर्यावरण जागरूकता के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन'* किया, जिसमें न्यादर्श के रूप में वाराणसी मण्डल के 8 ग्रामीण एवं 8 शहरी महाविद्यालयों से कुल 400 विद्यार्थियों का चयन किया गया। पर्यावरण जागरूकता के प्रदत्त संकलन हेतु डॉ० प्रवीण कुमार झा द्वारा निर्मित पर्यावरणीय जागरूकता के प्रति दृष्टिकोंण मापनी(EAAM) का प्रयोग किया जिसमें कुल 51 कथनों में से 43 सकारात्मक तथा 8 नकारात्मक कथन हैं। इस अध्ययन में उन्होंने पाया कि **शहरी छात्राओं के पर्यावरण जागरूकता के प्रति दृष्टिकोण में शहरी छात्रों की अपेक्षा अधिक सकारात्मक अन्तर** है।

5. लक्ष्मण सिंह (2016), ने *'अलीगढ़ मण्डल के ग्रामीण एवं शहरी प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत शिक्षकों की पर्यावरण सम्बन्धी जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन'* किया। इस शोध में न्यादर्श के रूप में उन्होंने अलीगढ़ मण्डल के चार जिलों कासगंज, एटा, हाथरस और अलीगढ़ के 800 शिक्षकों का चयन किया। प्रदत्त संकलन हेतु उन्होंने स्वनिर्मित पर्यावरण जागरूकता मापनी का प्रयोग किया जिसमें 75 प्रश्न रखे गये। शोध के निष्कर्ष रूप में उन्होंने पाया कि ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत महिला एवं पुरुषों की पर्यावरण सम्बन्धी जागरूकता में अन्तर है। महिला शिक्षकों की तुलना में पुरुष शिक्षक अधिक जागरूक हैं। इसी प्रकार शहरी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में **शिक्षणरत पुरुषों** के पर्यावरण सम्बन्धी जागरूकता **महिला शिक्षकों की तुलना में अधिक** है।

6. श्वेता पटेल (2017), ने *'उच्चतर माध्यमिक विद्यालय स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं में वृत्तिक अभिमुखीकरण हेतु जागरूकता कार्यक्रम का प्रभाव: एक अध्ययन'* किया। इस अध्ययन में न्यादर्श के रूप में उन्होंने लाडनूँ जिले की 200 छात्राओं का चयन किया। इस अध्ययन में निष्कर्ष के रूप में उन्होंने पाया कि जागरूकता कार्यक्रम वृत्तिक अभिमुखीकरण को प्रभावित करता है। उच्चतर माध्यमिक विद्यालय स्तर पर अध्ययन छात्रवृत्ति का अभिमुखीकरण हेतु के प्रदत्त संकलन हेतु स्वनिर्मित वृत्तिक अभिमुखीकरण मापनी का

प्रयोग किया गया। इस प्रश्नावली के दो भागों में क्रमश: 38-38 प्रश्न शामिल किए गये। अपने अध्ययन में उन्होंने पाया कि **सरकारी विद्यालयों की अपेक्षा निजी विद्यालयों की छात्राओं पर जागरूकता कार्यक्रम अधिक प्रभावशाली** रहा।

7. आरती खण्डेलवाल (2018), ने *'सिरोही जिले के बी०एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता एवं अभिवृत्ति का अध्ययन'* किया, जिसमें न्यादर्श के रूप में सिरोही जिले के बी०एड० कॉलेजों से 400 प्रशिक्षणार्थियों (200 पुरुष एवं 200 महिलाओं)का चयन किया गया। बी० एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता के प्रदत्त संकलन हेतु स्वनिर्मित मानवाधिकार जागरूकता प्रमापनी का प्रयोग किया गया। अपने अध्ययन में उन्होंने पाया कि **पुरुष प्रशिक्षणार्थियों एवं महिला प्रशिक्षणार्थियों** के मध्य मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता में स्पष्ट रूप से **अन्तर परिलक्षित** होता है।

8. शैलेन्द्र कुमार त्रिपाठी (2018), ने *'अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में एड्स के प्रति जागरूकता एवं पर्यावरण ज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन'* किया। इस अध्ययन में उन्होंने कानपुर नगर के अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के माध्यमिक स्तर के 800 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप में किया। एड्स जागरूकता के प्रदत्त संकलन हेतु डॉ० मधु अस्थाना द्वारा निर्मित एड्स जागरूकता मापनी का प्रयोग किया गया। इस प्रश्नावली में कुल 52 कथन व प्रश्न हैं, जिनके उत्तर हाँ या नहीं में देना होता है। इस अध्ययन के निष्कर्ष में उन्होंने पाया कि **अंग्रेजी तथा हिन्दी माध्यम के छात्रों** की एड्स के प्रति जागरूकता **छात्राओं की अपेक्षा अधिक** है। साथ ही हिन्दी माध्यम की छात्राओं की अपेक्षा, अंग्रेजी माध्यम की छात्राएँ एड्स के प्रति अधिक जागरूक हैं।

9. विक्रम आनन्द (2019), ने *'माध्यमिक स्तर के हिन्दी अध्यापकों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति जागरूकता एवं अध्यापक की शिक्षण प्रभाविकता का अध्ययन'* किया। इस अध्ययन में न्यादर्श के रूप में

उन्होंने वाराणसी जनपद के 80 माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत 232 हिन्दी शिक्षकों को एवं 696 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया। माध्यमिक स्तर के हिंदी अध्यापकों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति जागरूकता के प्रदत्त संकलन हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया।अध्ययन के निष्कर्ष के रूप में उन्होंने पाया कि CBSE और यूपी बोर्ड के हिन्दी अध्यापकों की सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर है। यूपी बोर्ड के हिन्दी अध्यापकों को सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति अधिक जागरूक होने की आवश्यकता है। साथ ही उन्होंने यह भी पाया कि **प्रशिक्षित हिन्दी अध्यापक, अप्रशिक्षित हिन्दी अध्यापकों की तुलना में ICT के प्रति अधिक जागरूक** हैं।

10. पूनम राठौर (2020), ने *'अनुसूचित पिछड़े एवं सामान्य जाति के स्नातकोत्तर स्तर विद्यार्थियों के मानवाधिकार जागरूकता एवं व्यक्तिगत मूल्य विकास का तुलनात्मक अध्ययन'* किया। इस अध्ययन में न्यादर्श के रूप में उन्होंने मेरठ मण्डल के 2 जिलों मेरठ व गाजियाबाद से 720 स्नातकोत्तर विद्यार्थियों का चयन किया। इस अध्ययन में उन्होंने पाया कि **पिछड़े एवं सामान्य जाति के विद्यार्थियों** में मानवाधिकार जागरूकता स्तर **अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च** है। साथ ही सामान्य जाति की छात्राओं में मानवाधिकार जागरूकता स्तर छात्रों की अपेक्षा अधिक उच्च है।

2.2.2 ऐतिहासिक विरासतों से सम्बन्धित शोध अध्ययन

1. सरिता साहू (2016), ने *'क्षेत्रीय इतिहास अध्ययन के परम्परागत मौखिक स्रोतों की ऐतिहासिकता छत्तीसगढ़ के विशेष सन्दर्भ में'* अध्ययन किया तथा इस निष्कर्ष पर पहुँची कि छत्तीसगढ़ में **लिखित साहित्य की कमी** के कारण यहाँ के प्राचीन एवं मध्यकालीन इतिहास के सम्बन्ध में **जानकारियों का अभाव** है। इस अञ्चल में विभिन्न पर्व-त्यौहार, उत्सवों व संस्कारों के निर्वहन के दौरान गीत गाने, नृत्य करने एवं लोक परम्पराओं को निभाने का चलन है।

2. प्रिन्सी चौरसिया (2018) ने *'स्नातक स्तर पर महोबा नगर की दुर्लक्ष ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूकता का अध्ययन'* किया, जिसमें न्यादर्श के रूप में उन्होंने महोबा नगर के स्नातक स्तर के 50 छात्र-छात्राओं का चयन किया। अध्ययन के निष्कर्ष रूप में उन्होंने पाया कि छात्राओं की अपेक्षा छात्र महोबा नगर की दुर्लक्ष ऐतिहासिक विरासतों के प्रति अधिक जागरूक हैं। इस अध्ययन में उन्होंने निम्न सुझाव दिये—

- विद्यार्थियों द्वारा नुक्कड़ नाटक किए जायें ताकि लोग ऐतिहासिक स्मारकों के आसपास साफ-सफाई रख सकें।
- ऐतिहासिक पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए शासन-प्रशासन स्तर पर कार्य योजना तैयार की जानी चाहिए।
- शैक्षिक भ्रमण हेतु ऐतिहासिक स्थल तक पहुँचने के मार्ग-संकेत नगर के मुख्य चौराहों पर लगाए जायें।
- ऐतिहासिक विरासत के संरक्षण एवं आसपास की स्वच्छता के लिए लोगों को प्रेरित किया जाना चाहिए।

3. पूजा चौरसिया (2019) ने *'माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का अध्ययन'* किया। इस अध्ययन में न्यादर्श के रूप में उन्होंने बाँदा जनपद के माध्यमिक विद्यालयों के 150 छात्र-छात्राओं का चयन किया। अध्ययन के निष्कर्ष में उन्होंने पाया कि छात्र-छात्राओं की जागरूकता का स्तर समान है। इस अध्ययन में उन्होंने निम्न सुझाव प्रस्तुत किये—

- ऐतिहासिक विरासत के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए संगोष्ठियों, कार्यशालाओं, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि का आयोजन किया जाना चाहिए।
- कालिंजर क्षेत्र/प्रान्त की ऐतिहासिक विरासत/शौर्य/वीरता /पराक्रम/संस्कृति/पुरुषार्थ का इतिहास उस क्षेत्र विशेष में विस्तृत रूप से अतिरिक्त सहायक पाठ्य पुस्तक के रूप में शामिल किए जाने की आवश्यकता है।
- परम्परागत कुटीर उद्योग को विकसित किया जाये।

- यहाँ से जुड़ी हुई संगीत परम्पराओं को विकसित करके समय-समय पर उनका प्रस्तुतीकरण किया जाये।
- महोत्सव का आयोजन प्रतिवर्ष किया जाए और विदेशी पर्यटकों को आकर्षित किया जाये।

4. बृजलाल पटेल (2021) ने *'बाँदा जनपद के विद्यार्थियों में भूरागढ़ दूर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का अध्ययन'* किया। इस अध्ययन में उन्होंने न्यादर्श के रूप में बाँदा जनपद के 90 छात्र-छात्राओं का चयन किया। उन्होंने अपने निष्कर्ष में पाया कि भूरागढ़ दुर्ग क्षेत्र में धर्म, संस्कृति तथा विशिष्ट रीति-रिवाजों से युक्त **अनेक ऐतिहासिक स्थल** हैं, जिनके **गौरवमयी अतीत से प्रभावित हुए बिना व्यक्ति नहीं रह सकता**। पर्यटन की दृष्टि से यह क्षेत्र रमणीय क्षेत्र है। इस क्षेत्र में पर्यटन की पर्याप्त सम्भाव्यता है। अतः इस क्षेत्र में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सुविधाएँ, यातायात, आवास, सुरक्षा की समुचित व्यवस्था की जानी चाहिए।

5. दीपक कुमार (2021) ने *'विद्यार्थियों में मड़फा दुर्ग के प्रति जागरूकता का अध्ययन'* किया। इस अध्ययन में न्यादर्श के रूप में उन्होंने बाँदा जनपद के 50 छात्र-छात्राओं का चयन किया। इस अध्ययन में उन्होंने मड़फा दुर्ग की जागरूकता संवर्धन के सम्बन्ध में निम्न सुझाव प्रस्तुत किए—

- मड़फा तक जाने वाले मार्ग में थोड़ी-थोड़ी दूर पर संकेतक लगाए जायें।
- यहाँ पर सीढ़ियों पर रेलिंग लगी होनी चाहिए।
- पानी की व्यवस्था होनी चाहिए।
- मड़फा दुर्ग तक आवागमन के साधनों का विकास तीव्र गति से किया जाना चाहिए।
- शंकर जी की मूर्ति के पास भंडारा करने के लिए छाया के लिए टीन-शेड लगाना चाहिए।

2.3 ऐतिहासिक विरासतों से सम्बन्धित समाचार, लेख इत्यादि

ऐतिहासिक विरासतों से सम्बन्धित कुछ प्रमुख समाचार लेख (चित्रावली परिशिष्ट—II) निम्नलिखित हैं—

2.3.1 अमर उजाल बाँदा: 29/12/2012

पहाड़ी बाबा की अन्तिम यात्रा आज सुबह

शान्ति आश्रम पहाड़ी बाबा के महन्त भगवानदास महराज का शुक्रवार को निधन हो गया। शनिवार को उनकी शोभायात्रा निकाली जाएगी। भक्तों के मुताबिक पहाड़ी बाबा के नाम से प्रसिद्ध भगवानदास महराज वर्ष 1940 में यहाँ आये थे। भक्तों का कहना है उनकी उम्र 110 वर्ष थी। बृहस्पतिवार शाम आरती-पूजन के बाद बाबा पहाड़ में स्थित गुफा में लेट गये। सुबह जब भक्त पहुँचे तो दरवाजा बन्द मिला। पुलिस को सूचना दी और उसकी मौजूदगी में दरवाजे के बगल की दीवार तोड़ी। अन्दर बाबा ब्रह्मलीन हो चुके थे। शनिवार को सुबह 8 बजे अन्तिम यात्रा निकालने के बाद वापस आश्रम लाई जाएगी और यहीं समाधि दी जाएगी। बाबा के निधन पर राजकुमार राज, सुरेश गुप्त, संतन ओमर, कृष्ण बिहारी, संतोष गुप्त, वृंदावन आचार्य व आश्रम के संत रामप्यारेदास आदि ने शोक जताया।

2.3.2 अमर उजाला कानपुर: 28/06/2019

5000 दीपकों ने रोशन किया नवाब टैंक

ऐतिहासिक नवाब टैंक गुरुवार (27 जून) को पहली बार नये कलेवर में नजर आया। एक तरफ सूर्य ढल रहा था तो दूसरी तरफ तालाब के चारों तरफ स्थित सभी 11 पक्के घाटों पर दीपदान के दीपकों की रोशनी बिखर रही थी। पानी में तैर रहे 5000 दीपकों ने दिवाली के दीपदान की याद ताजा कर दी। पूरे समय मन्त्रोच्चारण गूँजता रहा। प्रदेश के मुख्य निर्वाचन अधिकारी एल० वेंकटेश्वर इस आयोजन के खास मेहमान थे। इसे **जल महोत्सव** का नाम दिया गया।

2.3.3 अमर उजाला बाँदा: 02/08/2020

श्रीराम निवास मन्दिर का अयोध्या से गहरा नाता

शहर से लगभग चार किलोमीटर दूर राम निवास मन्दिर है। पहले यह बीहड़ क्षेत्र था। रामभक्तों की सेवा से अब यहाँ आसानी से पहुँचा जा सकता है। यह पौराणिक और ऐतिहासिक महत्व का मन्दिर है। मान्यता है कि वनवास में चित्रकूट जाते समय श्रीराम इस मन्दिर स्थल पर कुछ दिन रुके थे। वामदेव और सुतीक्ष्ण ऋषि से मिलने के बाद प्रभु राम अगस्त ऋषि से मिलने गये थे। वामदेव ऋषि बाम्बेश्वर पर्वत पर निवास करते थे और ऋषि सुतीक्ष्ण का आश्रम केन नदी तट के पास था। अगस्त ऋषि से मिलने जाते समय भगवान राम ऋषि सुतीक्ष्ण को मार्गदर्शक के रूप में साथ ले गये थे।

2.3.4 संजीवनी टुडे बाँदा: 12/12/2020

बाँदा के बामदेव पर्वत में अद्भुत पत्थर, जिनसे निकलता है संगीत

आपने रेडियो, टीवी, डीजे और मोबाइल पर गीत-संगीत की धुने सुनी है, डीजे पर तो अक्सर आप थिरकते होंगे। अगर यही धुने आपको विशालकाय पर्वत के पत्थरों से सुनाई पड़े तो निश्चित ही आप आश्चर्यचकित हो जायेंगे पर यह सच्चाई है। यह अद्भुत करिश्मा बाँदा जनपद के बामदेवेश्वर पर्वत पर देखने और सुनने को मिल जायेगा। इस पत्थर पर पत्थर से चोट करें तो मधुर संगीत सुनाई पड़ता है जैसे कोई आधुनिक वाद्य यन्त्र बजा रहा हो। पर्वत के शिखर पर मौजूद इन पत्थरों की संख्या गिनती की हैं, इसे जो भी पत्थरों से बजाता है और इसकी मधुर संगीत सुनता है तो हैरान हो जाता है। वही, वैज्ञानिक भी इस पर अपने अपने तर्क देते हैं, पर सैलानियों के लिए यह अद्भुत है। इसी पत्थर के पास हनुमान जी का मन्दिर है जिसे **सिद्धन** कहते हैं। लोग मन्दिर में दर्शन कर पत्थरों से संगीत निकालने की कोशिश करते हैं।

2.3.5 युग जागरण बाँदा: 16/08/2021

नवाब टैंक में 151 फीट ऊँचा तिरंगा लहराया

स्वतन्त्रता संग्राम में अहम भूमिका निभाने वाले बाँदा नवाब जुल्फिकार अली बहादुर सानी द्वारा बनवाया गया ऐतिहासिक नवाब टैंक अबकी स्वतन्त्रता दिवस में आकर्षक और नये लुक में नजर आया। यहाँ बनाए गये अटल सरोवर में 151 फीट ऊँचाई पर राष्ट्रीय ध्वज लहराया और उसका प्रतिबिम्ब पानी में भी नजर आया। बाँदा विकास प्राधिकरण ने नवाब टैंक के नजदीक अटल सरोवर पार्क बनाया है। इसी में 151 फीट ऊँचे पोल पर लगाए गये राष्ट्रीय ध्वज को स्वतन्त्रता दिवस के मौके पर मण्डलायुक्त दिनेश कुमार सिंह प्रातः 11 बजे डोरी खींचकर फहराया। इस मौके पर सिटी मजिस्ट्रेट केशवनाथ गुप्ता, सीओ राकेश कुमार सिंह, प्राधिकरण सचिव बाबू सिंह, एक्सईएन ओपी द्विवेदी सहित एई नसीम अहमद, उद्यान अधिकारी परवेज, ईओ आदि मौजूद थे।

2.4 समीक्षात्मक निष्कर्ष

सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के द्वारा शोध प्रबन्ध में उल्लेख किए गए, शोध में अनावश्यक पुनरावृत्ति नहीं होने पाती है। सम्बन्धित साहित्य शोध प्रबन्ध के एक महत्वपूर्ण अंग के रूप में शोधकर्ता के ज्ञान एवं कुशलता को स्पष्ट करता है।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि शोधकर्ता ने वर्तमान अध्ययन से सम्बन्धित पिछले शोध अध्ययनों की समीक्षा दो भागों में की है। प्रथम भाग में जागरूकता से सम्बन्धित पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों की समीक्षा की गयी है, जिसमें पाया कि **जनसंख्या नियन्त्रण, पर्यावरण प्रदूषण, पर्यावरण संरक्षण, प्रदूषण उन्मूलन, वृत्तिक अभिमुखीकरण, मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता, एड्स के प्रति जागरूकता तथा सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति जागरूकता** से सम्बन्धित अध्ययन पहले किए गये हैं। दूसरे भाग में ऐतिहासिक विरासत से सम्बन्धित पूर्ववर्ती शोधों की समीक्षा की गयी है, जिसमें पाया गया कि पूर्व में **छत्तीसगढ़ की क्षेत्रीय**

ऐतिहासिकता, महोबा नगर की दुर्लक्ष ऐतिहासिक विरासतों, कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत, भूरागढ़ दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत तथा मड़फा दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत से सम्बन्धित अध्ययन किए गये हैं; परन्तु अभी तक कोई भी शोध कार्य बाँदा नगर की चयनित ऐतिहासिक विरासतों(नवाब टैंक, राम निवास मन्दिर, पहाड़ी बाबा आश्रम तथा सिद्धन) की जागरूकता के सम्बन्ध में नहीं किया गया है, जिस कारण से शोधकर्ता ने इस विषय को शोध कार्य हेतु चुनने का निश्चय किया।

अध्याय तृतीय

बाँदा की चयनित ऐतिहासिक विरासतों का परिचय

इस अध्याय में बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों—पहाड़ी बाबा आश्रम, नवाब टैंक, राम निवास मन्दिर एवं सिद्धन के विषय में विस्तार से चर्चा की गयी है। इस अध्याय में उनकी स्थापना, स्थापत्य कला, ऐतिहासिक कथानक एवं भौगोलिक स्थिति आदि के विषय में वर्णन किया गया है। अधोलिखित स्थलों पर शोधार्थी द्वारा स्वयं जाकर गहन जानकारी एकत्र की गयी, जिसकी चित्रावली परिशिष्ट—III में संलग्न है।

3.1 पहाड़ी बाबा आश्रम

पहाड़ी बाबा आश्रम, बाँदा शहर में निम्नीपार मोहल्ले में एक निर्जन स्थान पर अवस्थित है। यह बाँदा के प्रमुख धार्मिक स्थलों में से एक है, जिसका ऐतिहासिक महत्व भी है। इस आश्रम के परिसर में स्थित शिव मन्दिर के विषय में ऐसी मान्यता है कि इसका निर्माण चन्देल राजाओं द्वारा करवाया गया था। कहा जाता है कि अजयगढ़ के महाराजा छत्रसाल के वंशजों ने इस मन्दिर का निर्माण करवाया था। इस मन्दिर के पास में ही राजा बाग एवं राजा का महल स्थित है। इस आश्रम में हनुमान जी की स्वयंभू मूर्ति स्थापित है। मान्यता है कि यह मूर्ति स्वयं प्रकट हुई थी, जिसके बाद यहाँ पर मन्दिर का निर्माण कराया गया। माना जाता है कि आश्रम की स्थापना आज से लगभग 200 वर्ष पूर्व हुई थी। स्थापना के समय यहाँ बहुत छोटा सा मन्दिर था किन्तु वर्तमान में इसका बहुत विस्तार हो चुका है, जिसका श्रेय **स्वर्गीय महन्त श्री भगवानदास जी** को जाता है। वर्तमान समय में आश्रम के *महन्त श्री बलराम दास जी* महाराज हैं। ये बड़े ही सरल हृदय के व्यक्ति हैं।

चित्र संख्या 3.1.1 राजा बाग

चित्र संख्या 3.1.2 राजा महल

चित्र संख्या 3.1.3 पहाड़ी बाबा आश्रम के वर्तमान महन्त

सम्पूर्ण आश्रम को ऊँची दीवारों से चारों तरफ से घेरा गया है, ताकि आश्रम असामाजिक तत्वों एवं अन्ना पशुओं से सुरक्षित रहे। आश्रम का प्रवेश द्वार **उत्तर दिशा** की ओर स्थित है। इस द्वार से होकर श्रद्धालु आश्रम के अन्दर प्रवेश करते हैं। आश्रम में प्रवेश करने के उपरान्त हमारे समक्ष सर्वप्रथम **सत्ती-सत्ता** मन्दिर आते हैं। इन मन्दिरों की बनावट एक जैसी है इसलिए इन्हें जुड़वा मन्दिरों की संज्ञा भी दी जाती है।

आश्रम परिसर में प्रवेश द्वार से प्रवेश करते ही मार्ग के दोनों तरफ सुन्दर-सुन्दर फुलवारी लगी हुई हैं, जो श्रद्धालुओं के मन को भाव-विभोर कर देती हैं। प्रवेश द्वार से अन्दर बढ़ने पर मुख्य मन्दिर तक जाने हेतु सीढ़ियाँ मिलती हैं। इनकी संख्या 72 है। सीढ़ियों से ऊपर चढ़ने पर हमें एक वट वृक्ष दिखाई पड़ता है, जिसके चारों ओर चबूतरा बना है। इस वट वृक्ष के साथ में शिवलिंग रखे हुए हैं। श्रद्धालुगण सर्वप्रथम यहाँ मत्था टेकते हैं, उसके बाद मुख्य मन्दिर में प्रवेश करते हैं।

चित्र संख्या 3.1.4 आश्रम का प्रवेश द्वार, फुलवारी, सत्ती-सत्ता मन्दिर एवं सीढ़ियाँ

आश्रम का **मुख्य मन्दिर** एक छोटी पहाड़ी पर स्थित है। इस मन्दिर में हनुमान जी की स्वयंभू मूर्ति स्थापित है। यह मन्दिर उन कुछ चुनिंदा मन्दिरों में से है, जहाँ पर हनुमान जी, माता अञ्जनी एवं पिता केसरी के साथ विद्यमान हैं। आश्रम परिसर में ही मुख्य मन्दिर के सम्मुख **महन्त स्वर्गीय श्री भगवान दास जी महाराज जी की मूर्ति** स्थापित है, जिन्होंने इस आश्रम को वर्तमान स्वरूप प्रदान किया था। इस आश्रम को **पहाड़ी बाबा** इन्हीं के नाम से जाना जाता है। आश्रम में **पाकड़ वृक्ष** स्थित है, जो कि एक हरीशंकरी पौधा (पीपल, बरगद,पाकड़) है। इस वृक्ष का अत्यधिक धार्मिक एवं औषधीय महत्व है। रामायण तथा अन्य धार्मिक ग्रन्थों में इस वृक्ष का वर्णन है। मत्स्य पुराण के अनुसार इसे वन-वृक्षों का अधिपति बताया गया था, गौरूपी पृथ्वी को दुहने के समय यह वृक्षों के लिए बछड़ा बना था। नारद पुराण के अनुसार ब्रह्मा ने विश्व में साम्राज्यों का बटवारा करते समय पाकड़ को वनस्पतियों का राजा नियुक्त किया। यज्ञ कर्म के लिए इस वृक्ष की छाया श्रेष्ठ मानी जाती है। औषधीय दृष्टि से यह शीतल एवं व्रण, दाह, पित्त, कफ, रक्त विकार, शोथ एवं रक्तपित्त को दूर करने वाला है। आश्रम के मुख्य मन्दिर के समीप ही चट्टानों बीच एक **प्राकृतिक शिवलिंग** स्थापित है, जहाँ तक पहुँचना अत्यन्त रोमाञ्चकारी है।

चित्र संख्या 3.1.5 पहाड़ी बाबा आश्रम का मुख्य मन्दिर

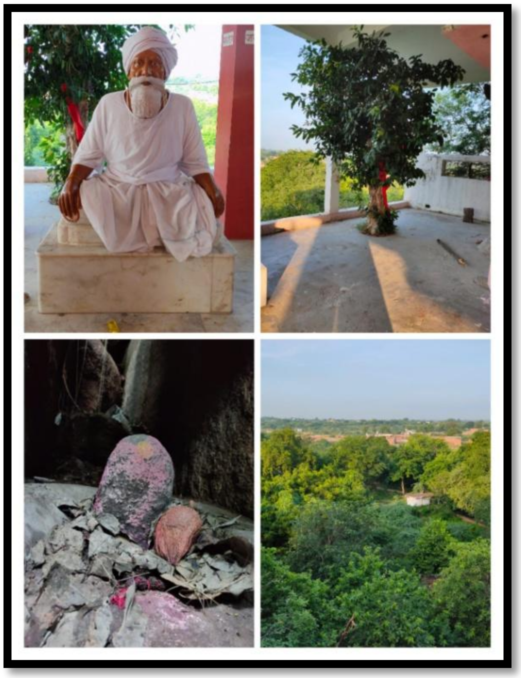

चित्र संख्या 3.1.6 स्वर्गीय महन्त जी की मूर्ति, पाकड़ वृक्ष, शिवलिंग

आश्रम परिसर में ही आश्रम के **मुख्य महन्त जी की समाधि** बनी हुई है, जिसके दर्शन करके साधु-सन्त खुद को धन्य महसूस करते हैं। महन्त जी की समाधि के पास एक छोटा सा तालाब बना हुआ है, जिसका प्रयोग आश्रम की स्थापना के समय में जलापूर्ति के लिए किया जाता था परन्तु वर्तमान समय में इस तालाब का प्रयोग नहीं किया जाता है। महन्त जी की समाधि के पास एक ध्यानशिला दिखायी देती है। इस ध्यानशिला पर पहुँचकर ध्यान करना अपने आप में एक विलक्षण अनुभव है। ध्यानशिला से आस-पास का अत्यन्त मनोरम दृश्य दिखायी पड़ता है।

चित्र संख्या 3.1.7 महन्त जी की समाधि, प्राचीन तालाब, ध्यान शिला एवं प्राकृतिक दृश्य

आश्रम की चहारदीवारी से लगा हुआ **प्राचीन शिव मन्दिर** स्थित है। इस मन्दिर का इतिहास बड़ा ही पुराना है। लोगों का मानना है कि इस मन्दिर का निर्माण चन्देल राजाओं द्वारा करवाया गया था। इस मन्दिर में नवविवाहितों के मत्था टेकने की बड़ी परम्परा है। शिव मन्दिर के साथ में ही **प्राचीन हनुमान मन्दिर** भी स्थित है। इसका निर्माण भी चन्देल राजाओं द्वारा कराया गया था। श्रद्धालुओं के मन में इस मन्दिर के प्रति बड़ी आस्था है। हनुमान मन्दिर के सम्मुख प्राचीन **वटवृक्ष** हैं, जो लगभग 200 वर्ष पुराने हैं। इन वृक्षों का धार्मिक महत्व बहुत है। वट सावित्री व्रत (बरगदहाई अमावस्या) के दिन महिलाएँ इनकी पूजा-अर्चना करती हैं, परिक्रमा लगाती हैं और अपने सुहाग की लम्बी उम्र का वरदान माँगती हैं। आश्रम परिसर में ही एक प्राचीन कूप स्थित है। यहाँ आने वाले श्रद्धालुगण वटवृक्ष की छांव में बैठकर कूप का ठण्डा जल पीकर तृप्त होते हैं। श्रद्धालुओं द्वारा मन्दिर में दर्शन करने से पूर्व कूप के ठण्डे जल से स्नान करने का बड़ा महत्व है। आश्रम परिसर में स्थित चिकनी पथरिया पर फिसलने में श्रद्धालुओं को अत्यन्त आनन्ददायक लगता है। लोगों की मान्यता है कि नवविवाहित जोड़ों के इसमें फिसलने से उनके बीच प्रेम बढ़ता है।

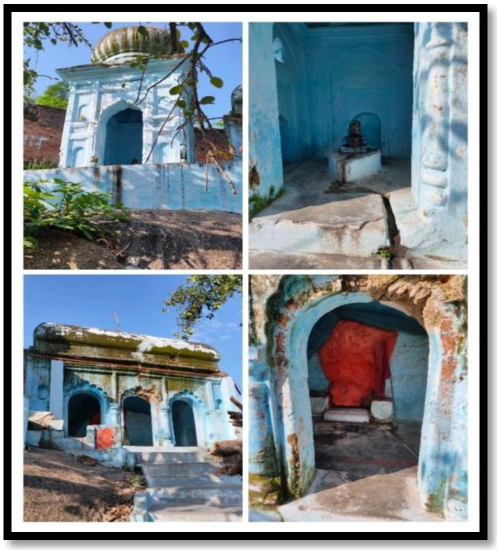

चित्र संख्या 3.1.8 प्राचीन शिव एवं हनुमान मन्दिर

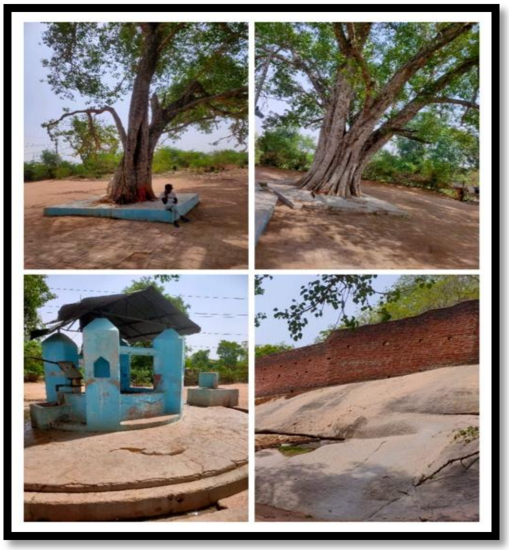

चित्र संख्या 3.1.9 वट वृक्ष, प्राचीन कूप एवं चिकनी पथरिया

आश्रम में गुरु पूर्णिमा के दिन मेले का आयोजन किया जाता है, जिसमें श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ती है। आश्रम में 'पहाड़ी बाबा' के नाम से विख्यात स्वर्गीय श्री भगवान दास जी महाराज की पुण्यतिथि **29 दिसम्बर** को विशाल भण्डारे का आयोजन होता है, जिसमें देश भर से अनेक साधु सन्त एवं भक्तगण सम्मिलित होते हैं। यह भण्डारा इतना विशाल होता है कि दो-तीन दिनों तक तो प्रसाद बनाने का कार्य ही चलता रहता है। आश्रम परिसर में कई तरह की औषधीय गुणों से युक्त वनस्पतियाँ पायी जाती हैं, जिसमें पत्थरचट्टा, सियार बैठका, दूधी, हुर-हुर आदि प्रमुख हैं।

3.2 नवाब टैंक

नवाब टैंक, बाँदा शहर में स्थित एक सुन्दर कृत्रिम जलाशय है। यह शहर से लगभग तीन किलोमीटर दूर शास्त्री नगर मोहल्ले में स्थित है। इस जगह के दृश्य पर्यटकों के लम्बे समय तक आतिथ्य के लिए एकदम सही हैं। यहाँ किसी भी स्थान पर जाने के लिए कोई टिकट नहीं लिया जाता है। नवाब टैंक का निर्माण **नवाब जुल्फिकार अली बहादुर** द्वारा करवाया गया था। उन्होंने एक आधुनिक शिक्षा प्रणाली की स्थापना की और बाँदा प्रशासन को नवीनीकृत करने में मदद की। यह बाँदा का स्वर्णिम काल था जब संस्कृति और भाषा को बढ़ावा दिया गया था। नवाब टैंक **मिर्ज़ा ग़ालिब** की याद में बनाया गया था, जो नवाब के खून के रिश्तेदार थे। नवाब ने अपने कार्यकाल में जबर्दस्त सूखा पड़ने के दौरान नवाब टैंक खुदवाया था। लोगों को भुखमरी से बचाने के लिए तालाब खुदाई में मजदूरी मुहैया करायी। रात में भी तालाब खोदा जाता था ताकि शर्म और संकोच से दिन की रोशनी में मजदूरी न कर पाने वाले लोग रात के अंधेरे में मजदूरी कर सकें। यह तालाब आज भी बेमिसाल है। तालाब के बीच नवाब ने कई मंजिला बुर्ज बनाया था। इसी बुर्ज में पर्दे की कनातें लगाकर नवाब की बेगमें कजली मेला देखती थीं। नवाब बाहर निकलकर लोगों को दर्शन देते थे। सुबह छाबी तालाब और शाम को नवाब टैंक में कजली मेला लगता था। यह परम्परा आज भी बरकरार है। लोगों का ऐसा मानना है कि बाँदा के नवाब की बेगम नवाब टैंक में स्नान करने के लिए आती थीं। इसके लिए नवाब टैंक से भूरागढ़ दुर्ग तक एक सुरंग बनी हुई थी। बाँदा के नवाब अपनी बेगम के साथ यहाँ आते थे और कजली मेले का आनन्द लेते थे। नवाब टैंक को अभिलेखों में **शंकर सरोवर** के नाम से जाना जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि प्राचीन काल में यहाँ शंकर जी का मन्दिर था। (परिशिष्ट—IV)

चित्र संख्या 3.2.1 नवाब जुल्फिकार अली बहादुर

चित्र संख्या 3.2.2 तालाब खोदते मजदूर

नवाब टैंक एक बहुत **सुन्दर जलाशय** हैं। इस जलाशय का उपयोग बाँदा के नवाबों द्वारा किया जाता था। इस जलाशय का सुन्दर दृश्य किसी को भी अभिभूत कर सकता है। बाँदा के नवाब इस जलाशय के मध्य में बने चबूतरे पर बैठकर कजली मेले का आनन्द लिया करते थे। नवाब टैंक परिसर में एक छोटी सी कैण्टीन भी बनी हुई है, जिसमें यहाँ आने वाले पर्यटकों के लिए चाय नाश्ते का प्रबन्ध रहता है। नवाब टैंक के साथ बनी कैण्टीन के पास में ही **शिवलिंग** स्थापित है, जहाँ पर लोग आकर फूल चढ़ाते हैं तथा पूजा अर्चना करते हैं। शिवलिंग के सम्मुख प्राचीन वट वृक्ष है, जो लगभग सौ वर्ष पुराना है। इस वृक्ष का धार्मिक महत्व बहुत है। वट सावित्री व्रत (बरगदहाई अमावस्या) के दिन महिलाएँ इसकी पूजा-अर्चना करती हैं, परिक्रमा लगाती हैं और अपने सुहाग की लम्बी उम्र का वरदान माँगती हैं। नवाब टैंक में **सावन माह में कजली मेला** लगता है, जो बहुत प्रसिद्ध है। दिनभर जवारे विसर्जित करने का कार्यक्रम चलता है तथा कुश्ती का आयोजन भी किया जाता है।

चित्र संख्या 3.2.3 नवाब टैंक का दृश्य

चित्र संख्या 3.2.4 कैण्टीन, शिवलिंग एवं वट वृक्ष

चित्र संख्या 3.2.5 कजली मेला

नवाब टैंक के समीप ही **वन चेतना पार्क** स्थित है। इस पार्क में तरह-तरह के सुन्दर पेड़-पौधे लगे हुए हैं। यहाँ पर बच्चों के मनोरञ्जन हेतु फिसल-पट्टी भी बनी हुई है, जिस पर फिसलने में बच्चों को बड़ा ही आनन्द आता है। वन चेतना केन्द्र के बगल में **काली देवी का मन्दिर** बना हुआ है। नवाब टैंक आने वाले पर्यटक इस मन्दिर में आकर देवी का आशीर्वाद अवश्य लेते हैं। नवाब टैंक परिसर के साथ में ही **राजकीय पौधशाला** बनी हुई है जो पाँच हेक्टेयर क्षेत्र में फैली है। नवाब टैंक आने वाले पर्यटक इस पौधशाला से विभिन्न प्रकार के पौधे अथवा बीज ले जा सकते हैं। नवाब टैंक के साथ में ही सिंचाई विभाग का कार्यालय बना हुआ है। नवाब टैंक की देख-रेख की जिम्मेदारी इसी कार्यालय के अधीन है। नवाब टैंक से आसपास के क्षेत्र में सिंचाई हेतु नहर भी निकली हुई है, उसकी देख-रेख का कार्य भी यही कार्यालय करता है।

चित्र संख्या 3.2.6 वन चेतना पार्क

चित्र संख्या 3.2.7 काली देवी मन्दिर

चित्र संख्या 3.2.8 नवाब टैंक पौधशाला

नवाब टैंक के समीप ही **सरदार वल्लभभाई पटेल ऑक्सीजन पार्क** बना हुआ है। इस पार्क में लोग रोज सुबह योग करने आते हैं। शाम को जगमगाती रोशनी में पार्क की सुन्दरता और भी बढ़ जाती है। इस पार्क में बच्चों के मनोरञ्जन हेतु झूले लगे हुए हैं, साथ ही सांस्कृतिक कार्यक्रमों हेतु एक मंच भी बना हुआ है। ऑक्सीजन पार्क में ही **151 फीट ऊँचे राष्ट्रीय ध्वज** को फहराया गया है, जिसकी छटा दूर से ही मन को मोहित कर देती है। राष्ट्रीय ध्वज नवाब टैंक आने वाले लोगों में राष्ट्र के प्रति प्रेम का संचार करता है।

चित्र संख्या 3.2.9 सरदार वल्लभभाई पटेल ऑक्सीजन पार्क

3.3 राम निवास मन्दिर

राम निवास मन्दिर बाँदा का एक प्रमुख ऐतिहासिक स्थल है। भगवान श्रीराम से जुड़े होने के कारण इस स्थल की धार्मिक मान्यता बहुत ज्यादा है। यह मन्दिर बाँदा के निम्नीपार मोहल्ले में स्थित है। प्राचीन काल में इक्ष्वाकु वंश के राजा दशरथ के बड़े प्रतापी राजा थे। उनकी तीन रानियाँ—कौशल्या, सुमित्रा एवं कैकेई तथा चार पुत्र—राम, लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्न थे। राजा दशरथ अपने ज्येष्ठ पुत्र राम को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त करना चाहते थे परन्तु रानी कैकेई अपने पुत्र भरत को राजा बनाना चाहती थीं। राजा दशरथ ने रानी कैकेई को मनचाहा वचन देने का वादा किया था इसलिए रानी कैकेई ने राम के लिए चौदह वर्ष का वनवास माँगा। माता कैकई के आदेश का पालन करते हुए श्री राम, पत्नी सीता एवं छोटे भाई लक्ष्मण सहित अयोध्या छोड़कर वनवास के लिए वन की ओर चल दिये। अयोध्या से निकलकर वह ऋषि-मुनियों के आश्रमों में उनसे भेंट करते हुए जंगल की ओर बढ़ने लगे। अपनी इसी यात्रा के दौरान चित्रकूट मार्ग पर उन्होंने बाँदा के इस स्थान पर महर्षि वामदेव से भेंट करी। महर्षि वामदेव बाम्बेश्वर पर्वत पर एक गुफा में ध्यान साधना करते थे। जब श्री राम बाँदा आये तो उन्होंने महर्षि से भेंट कर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया तथा **राम निवास मन्दिर के स्थान पर रात्रि विश्राम किया।** इसी कारण इस स्थान का पौराणिक महत्व बहुत अधिक है।

चित्र संख्या 3.3.1 राजा दशरथ

चित्र संख्या 3.3.2 राजा दशरथ का परिवार

चित्र संख्या 3.3.3 रानी कैकेई एवं राजा दशरथ

चित्र संख्या 3.3.4 श्री राम, लक्ष्मण और सीता का वनगमन

इस मन्दिर की स्थापना आज से लगभग 250 वर्ष पूर्व हुई थी। हालांकि मन्दिर यहाँ पर प्राचीन समय से रहा है परन्तु इसके वर्तमान समय स्वरूप का निर्माण तभी कराया गया था। वर्तमान समय में महाराज **श्री चेतन दास जी** इस मन्दिर के पुजारी हैं, यही इस मन्दिर की देखभाल करते हैं। सम्पूर्ण मन्दिर को ऊँची दीवारों से चारों तरफ से घेरा गया है, ताकि असामाजिक तत्व एवं अन्ना पशुओं से मन्दिर की रक्षा की जा सके। मन्दिर का प्रवेश द्वार पश्चिम दिशा की ओर स्थित है। इस द्वार से होकर श्रद्धालु मन्दिर में प्रवेश करते हैं।

चित्र संख्या 3.3.5 राम निवास मन्दिर का प्रवेश द्वार एवं बाहरी दीवार

मन्दिर में मुख्य आकर्षण का केंद्र **राम दरबार** है, जिसमें भगवान श्री राम, माता सीता, भाई लक्ष्मण एवं भक्त हनुमान की मूर्तियाँ स्थापित हैं। यह सफेद संगमरमर से बनी हुई मूर्तियाँ हैं, जिनका निर्माण जबलपुर में हुआ था। इसी प्रांगण में राम भक्त **हनुमान जी का एक मन्दिर** भी है, जो भक्तों में भक्ति भाव का संचार करता

है। मन्दिर के साथ की दीवारों पर हनुमान चालीसा लिखी हुई है। यहाँ आने वाले श्रद्धालु दर्शन के उपरान्त चालीसा का पाठ करते हैं। मन्दिर परिसर में यहाँ रहने वाले अनेक महन्तों की प्रतिमाएँ लगी हुई हैं। यहाँ आने वाले श्रद्धालु इन प्रतिमाओं पर भी अपना मत्था टेकते हैं तथा उनसे आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।

चित्र संख्या 3.3.6 राम दरबार एवं हनुमान जी की मूर्ति

चित्र संख्या 3.3.7 हनुमान चालीसा एवं महन्त जी की प्रतिमाएँ

मन्दिर के बाहर एक **गौशाला** है, जहाँ पर पाँच गाय हैं। मन्दिर में रहने वाले पुजारी जी इन गायों की सेवा करते हैं। साथ ही यहाँ आने वाले भक्तगण भी गायों को चारा खिलाकर पुण्य अर्जित करते हैं। मन्दिर प्राङ्गण में प्राचीन कूप स्थित है, जिसके द्वारा मन्दिर में जलापूर्ति की जाती है। मन्दिर में बगल में पुजारी जी की कुटिया बनी हुई है, जहाँ पर मन्दिर के पुजारी निवास करते हैं तथा मन्दिर की देखभाल करते हैं। मन्दिर के द्वार से अन्दर जाने पर एक बड़ा ही सुन्दर बगीचा है जो यहाँ आने वाले भक्तों को अनायास ही अपनी ओर आकर्षित करता है। इस बगीचे में तरह-तरह के फूल एवं पौधे लगे हुए हैं। मन्दिर में प्रतिदिन संध्याकाल में **कीर्तन** तथा **हनुमान चालीसा का पाठ** बड़े ही हर्षोल्लास के साथ किया जाता है।

चित्र संख्या 3.3.8 गौशाला, पुजारी जी की कुटिया, प्राचीन कूप एवं बगीचा

3.4 सिद्धन

बुन्देलखण्ड की धरा पर अनेक पौराणिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक सन्दर्भ यत्र-तत्र बिखरे हुए हैं। इन्हीं में से एक महत्वपूर्ण स्थल है— **सिद्धन।** सिद्धन बाँदा शहर के कैलाशपुरी मोहल्ले में अवस्थित है। यह बाँदा के प्रमुख ऐतिहासिक स्थल बाम्बेश्वर मन्दिर के समीप ही बाम्बेश्वर पर्वत में स्थित है। बाँदा ऋषि वामदेव की तपोथली है। ऋषि वामदेव गौतम ऋषि के पुत्र थे एवं सप्तर्षियों में से एक माने जाते हैं। कहा जाता है कि उन्होंने संगीत की रचना की थी। **महर्षि वामदेव, बाम्बेश्वर पर्वत में निवास करते थे** तथा यहीं पर ध्यान लगाया करते थे। भगवान श्री राम, माता जानकी एवं भाई लक्ष्मण सहित वनवास के दौरान जब चित्रकूट आये और उन्हें महर्षि वामदेव के विषय में जानकारी मिली तो उन्होंने बाँदा आकर उनसे भेंट की व आशीर्वाद प्राप्त किया। यहाँ आकर उन्होंने भगवान शिव की आराधना की। जिस स्थान पर श्रीराम ने भगवान शिव की आराधना की, वह स्थान आज बाम्बेश्वर मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है। जब भगवान श्री राम रावण का वध कर अयोध्या नगरी वापस आये तब उनका राजतिलक किया गया। इस समारोह में उन्होंने सभी साधु-सन्तों एवं ऋषि-मुनियों का सम्मान एवं आदर सत्कार करने हेतु उन्हें अयोध्या बुलाया। महर्षि वामदेव को लेने के लिए स्वयं राम भक्त हनुमान आये। माना जाता है कि जिस स्थान पर हनुमान जी ने वामदेव ऋषि से भेंट की, वह स्थान आज सिद्धन मन्दिर के रूप में प्रसिद्ध है।

चित्र संख्या 3.4.1 महर्षि वामदेव

चित्र संख्या 3.4.2 महर्षि एवं श्री राम की भेंट

सिद्धन जाने हेतु बाम्बेश्वर मन्दिर से पहले, बायीं ओर जाने वाले रास्ते में कुछ दूर जाने पर, पूर्व दिशा की ओर प्रवेश द्वार बना हुआ है। श्रद्धालुगण यहीं से अपनी यात्रा प्रारम्भ करते हैं। सिद्धन मन्दिर जाने हेतु सर्वप्रथम सीढ़ियाँ चढ़ने होती हैं। इन सीढ़ियों की संख्या 227 है परन्तु अपने आराध्य के दर्शन पाने की इच्छा मन में होने से भक्त कब यह सीढ़ी चढ़ जाते हैं, पता ही नहीं चलता है। कुछ सीढ़ियाँ चढ़ने के उपरान्त ही हमारे सम्मुख बाम्बेश्वर **पार्क** दिखायी पड़ता है। यह पार्क यहाँ आने वाले श्रद्धालुओं के बैठने के लिए एक अच्छा स्थान है परन्तु इस पार्क का सिद्धन की तरफ वाला द्वार कभी-कभी खोला जाता है और बाम्बेश्वर मन्दिर के की तरफ वाला द्वार सदा खुला रहता है। पार्क के द्वार के बगल से बाम्बेश्वर मन्दिर का द्वार लगा हुआ है जहाँ से श्रद्धालु बाम्बेश्वर मन्दिर में दर्शन करने के बाद सिद्धन मन्दिर जा सकते हैं। यह द्वार कभी-कभी ही खुलता है।

चित्र संख्या 3.4.3 बाम्बेश्वर पार्क एवं प्रवेश द्वार

सिद्धन जाने वाली सीढ़ियों से एक रास्ता **छोटे सिद्धन** की ओर जाता है। यह रास्ता थोड़ा दुर्गम है। यहाँ पर हनुमान जी की एक छोटी मूर्ति स्थापित है। प्राचीन काल में सिद्धन मन्दिर में बैठने वाले पुजारी जी को यह मूर्ति मिली थी, तभी से यहाँ श्रद्धालुओं का आना-जाना लगा रहता है। श्रद्धालुओं की मनोकामना पूर्ण होने के कारण इस मन्दिर का बड़ा महत्व है। छोटे सिद्धन के पास एक ध्यानशिला है। इस ध्यानशिला पर पहुँचकर ध्यान करना अपने-आप में एक विलक्षण अनुभव है। ध्यानशिला से आस-पास का अत्यन्त मनोरम दृश्य दिखायी पड़ता है।

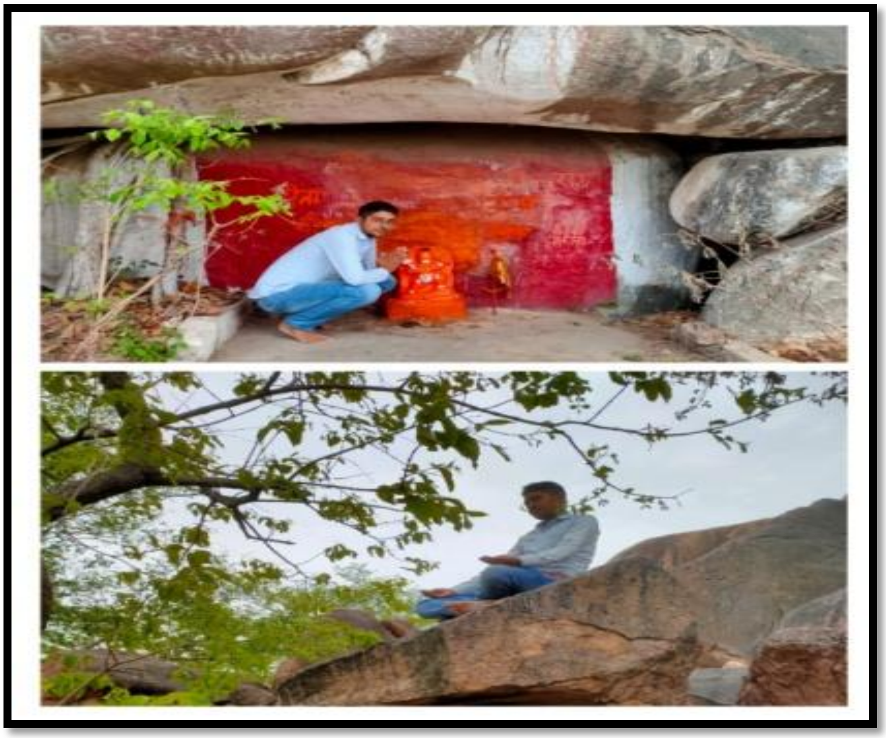

चित्र संख्या 3.4.4 छोटा सिद्धन एवं ध्यान शिला

सीढ़ियों से ऊपर चढ़ते हुए **सिद्धन मन्दिर** दूर से ही भक्तों को अभिभूत कर देता है। मुख्य मन्दिर पहुँचने पर श्रद्धालु अपने आराध्य के दर्शन करते हैं। यहाँ पर हनुमान जी की मूर्ति विराजमान है। यह एक छोटा-सा मन्दिर है, जो पर्वत-शिला पर बना हुआ है। यहाँ आने वाले श्रद्धालुओं का हर काम सिद्ध हो जाता है, इसी कारण से इस मन्दिर को सिद्धन के नाम से जाना जाता है। सिद्धन मन्दिर के बाहर ही एक बड़ा चबूतरा बना हुआ है। यहाँ आने वाले श्रद्धालु इस चबूतरे पर बैठकर भगवान का भजन एवं आराधना करते हैं। सिद्धन

मन्दिर के ऊपर एक छोटी-सी गुफा बनी हुई है, जहाँ से निकलना बड़ा ही साहस का कार्य है। इसी कारण इस गुफा को **साहसिक गुफा** के नाम से जाना जाता है। मन्दिर की बायीं तरफ की शिला पर चढ़कर अतिदुर्गम मार्ग से होकर इस गुफा में जाया जा सकता है। यह गुफा शुरु में तो चौड़ी है परन्तु आगे बढ़ने पर धीरे-धीरे संकरी होती जाती है। गुफा में चमगादड़ों का वास है। सिद्धन मन्दिर के पास में ही एक अर्द्ध-निर्मित विश्राम स्थल बना हुआ है। इस विश्राम स्थल का निर्माण कार्य शुरू तो किया गया था परन्तु यह आज तक पूर्ण नहीं हो सका है।

चित्र संख्या 3.4.5 सिद्धन मन्दिर

चित्र संख्या 3.4.6 साहसिक गुफा

सिद्धन मन्दिर के पास में ही **जल शोधन केन्द्र** बना हुआ है। यहाँ पर जल को शुद्ध करके शहर में जलापूर्ति की जाती है। यहाँ पर जल शुद्ध करने हेतु बड़े-बड़े पम्प लगे हुए हैं। जल शोधन केन्द्र में ही एक

प्राचीन वट वृक्ष स्थित है। वट वृक्ष का हमारे धर्म में बड़ा ही महत्व है। **वट सावित्री व्रत (बरगदहाई अमावस्या)** के दिन महिलाएँ इनकी पूजा-अर्चना करती हैं, परिक्रमा लगाती हैं और अपने सुहाग की लम्बी उम्र का वरदान माँगती हैं। सिद्धन मन्दिर आने वाले श्रद्धालुगण यहाँ इस वट वृक्ष पर मत्था जरूर टेकते हैं।

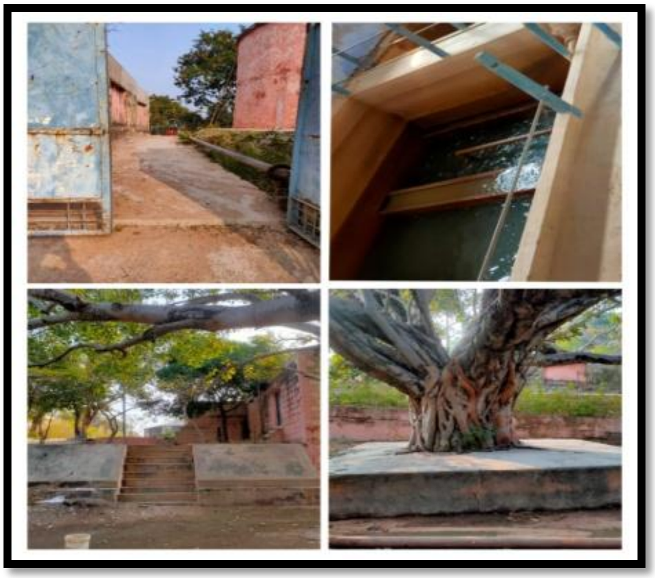

चित्र संख्या 3.4.7 जल शोधन केन्द्र एवं वट वृक्ष

सिद्धन मन्दिर से थोड़ा ऊपर जाने पर पर्वत के शिखर पर **सूर्य दर्शन स्थल** बना हुआ है, जहाँ से उगते अथवा डूबते सूर्य का बड़ा ही मनमोहक दृश्य देखा जा सकता है। यहाँ आने वाले पर्यटकों को यह दृश्य बड़ा ही मनोहारी लगता है। सूर्य दर्शन स्थल के साथ में ही **बाँदा व्यू प्वाइण्ट** बना हुआ है, जहाँ से बाँदा शहर का बड़ा ही मनोहर दृश्य देखा जा सकता है। यह दृश्य यहाँ आने वाले लोगों को रोमाञ्चित कर देता है। पर्वत पर कई स्थानों पर अनेक शिला समूह बने हुए हैं जिन पर चढ़कर फोटो खींचना लोगों को बड़ा ही भाता है। कुछ लोग सीढ़ियों से आने-जाने की बजाय इन्हीं शिलाओं पर चढ़कर सूर्य दर्शन स्थल तक जाते हैं, जिससे उन्हें अलग ही रोमाञ्च की प्राप्ति होती है। सूर्य दर्शन स्थल पहुँचने पर हमें वहाँ पर शिवलिंग दिखायी पड़ता है। श्रद्धालु सूर्य भगवान के दर्शन करने के उपरान्त शिवलिंग पर जल अर्पित करते हैं। इनके पास में ही माँ काली एवं माँ दुर्गा की मूर्तियाँ हैं, भक्तगण इन मूर्तियों पर मत्था टेक कर आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। सिद्धन मन्दिर की

सबसे ऊँची चोटी पर स्वतन्त्रता दिवस एवं गणतन्त्र दिवस के अवसर पर ध्वजारोहण किया जाता है। इस मौके पर यहाँ अनेक देश-प्रेमी एकत्रित होते हैं एवं देशभक्ति के गीत गाते हैं।

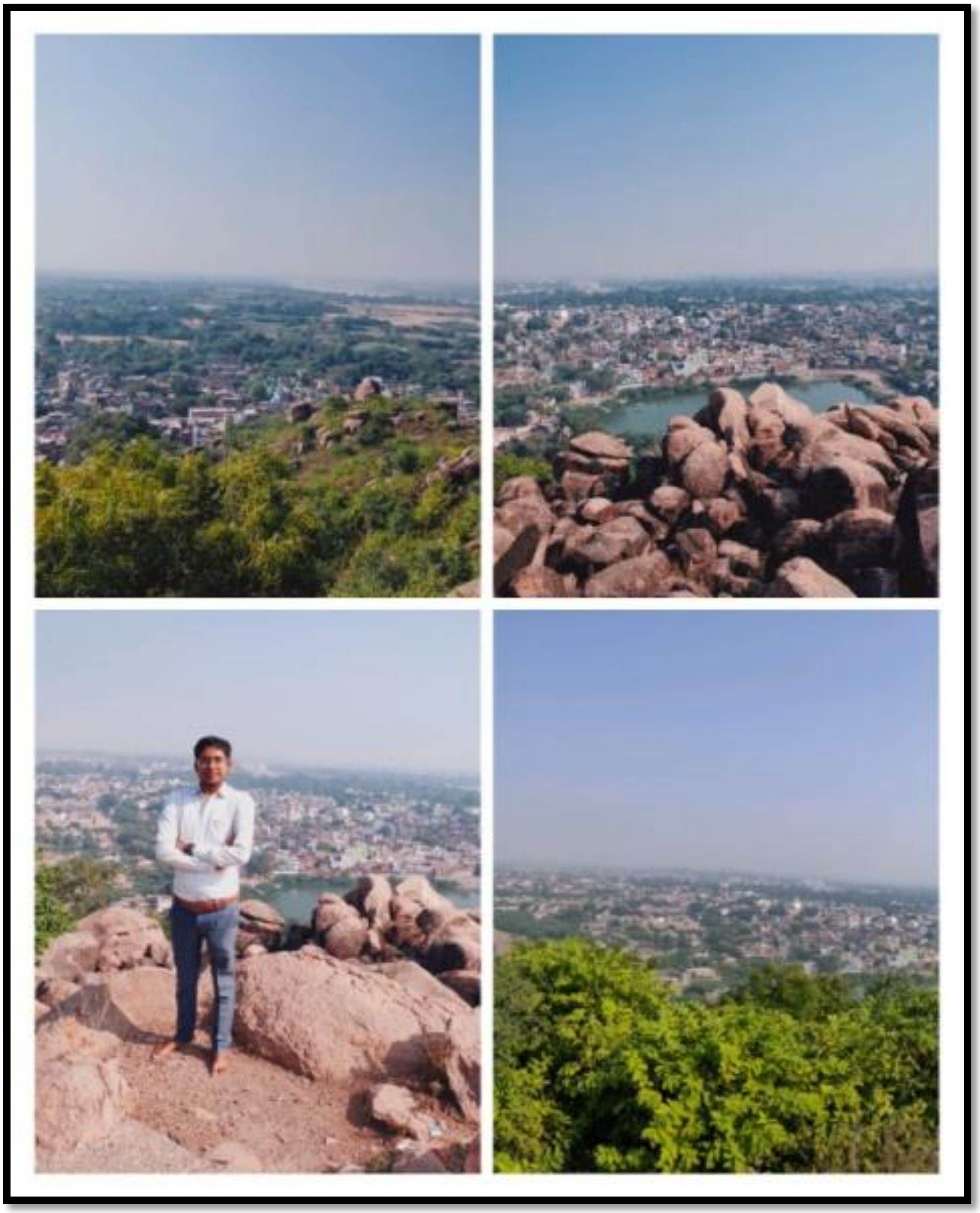

चित्र संख्या 3.4.8 सूर्य दर्शन स्थल एवं बाँदा व्यू प्वाइण्ट

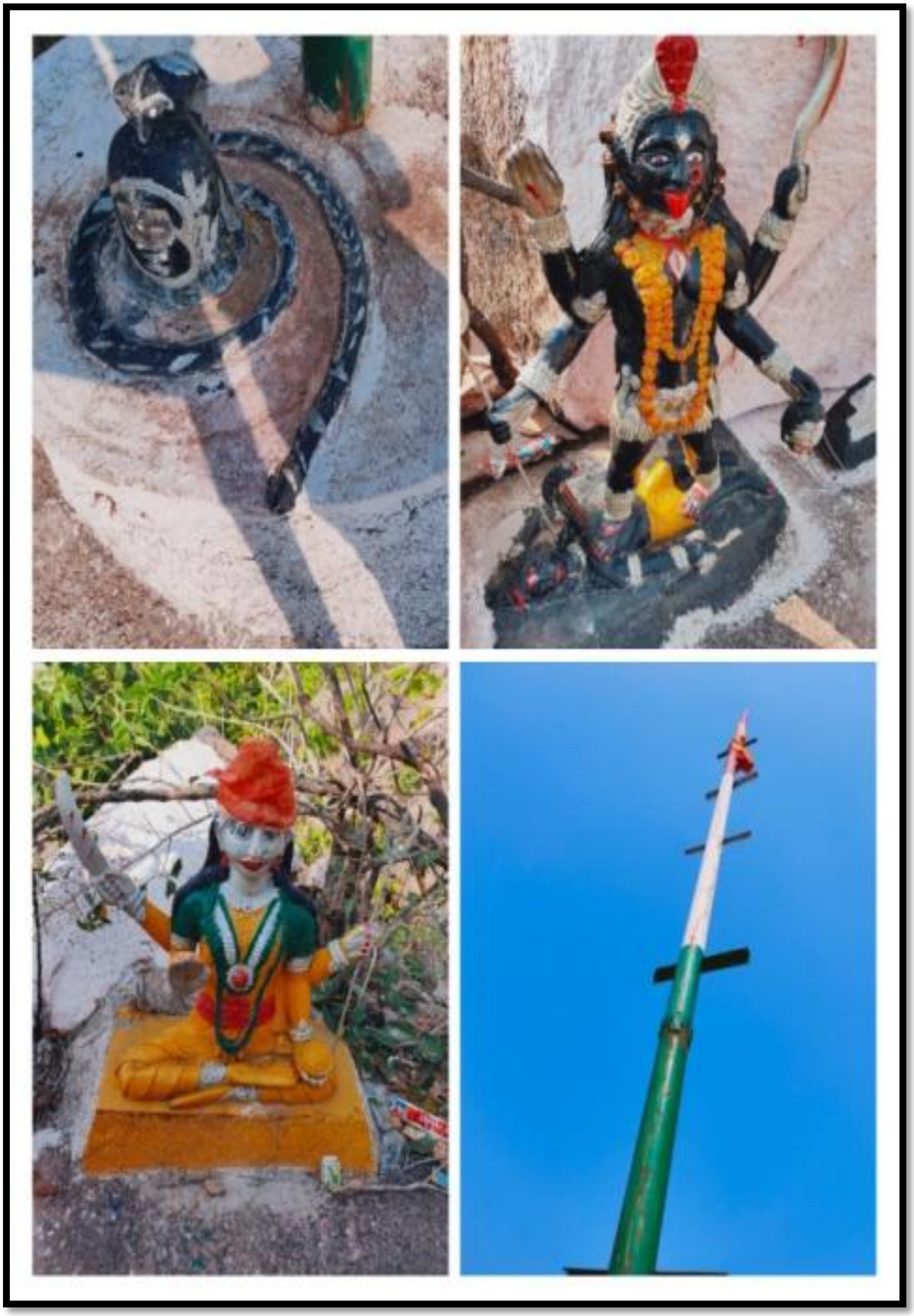

चित्र संख्या 3.4.9 शिवलिंग, देवी मूर्तियाँ एवं ध्वज पोल

सिद्धन के पहाड़ पर कई स्थानों पर **बजने वाले पत्थर** मिलते हैं। इन पत्थरों के विशेषता है कि इनको किसी दूसरे पत्थर से बजाने पर आपको अलग-अलग धातुओं की आवाज सुनायी देती है। किसी पत्थर से कलश के बजने की आवाज आती है तो किसी पत्थर से थाली के बजने की आवाज आती है। धार्मिक मान्यता के अनुसार जब श्री राम ऋषि वामदेव से मिलने यहाँ आये थे तो उनके स्वागत में यहाँ के पत्थर भी झूम उठे थे तथा श्री राम के पैर जहाँ-जहाँ पड़े उस-उस पत्थर से संगीत में आवाज आने लगी। वैज्ञानिकों का मानना है कि इन पत्थरों में डोलोमाइट की अधिकता होने के कारण इनसे ऐसी आवाज निकलती हैं।

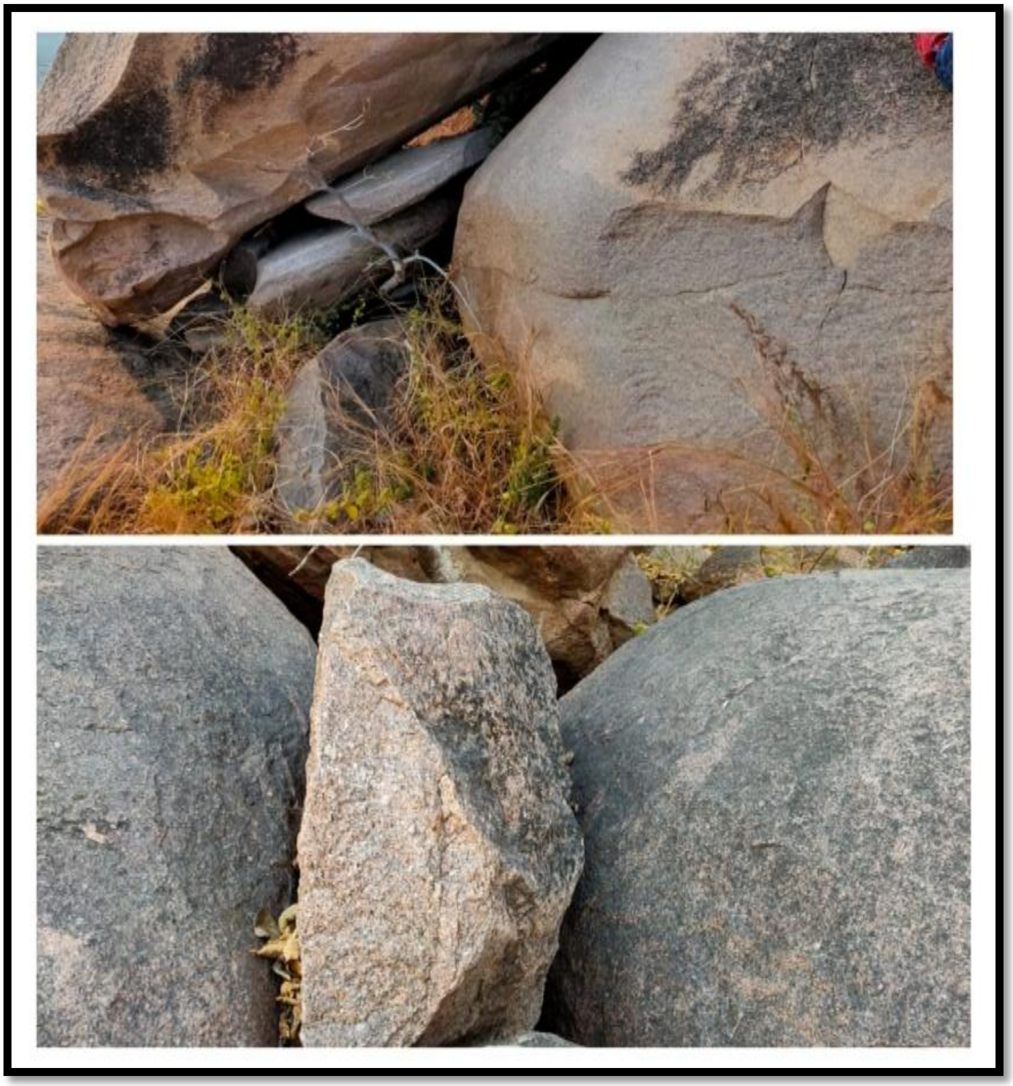

चित्र संख्या 3.4.10 बजने वाले पत्थर

सिद्धन तक पहुँचने के लिए एक मार्ग दोपहिया वाहनों के आने जाने हेतु बना हुआ है। यह बाँदा शहर के निम्नीपार मोहल्ले से शुरू होकर सिद्धन मन्दिर तक जाता है। सिद्धन आने-जाने हेतु एक मार्ग और भी है। यह मार्ग जल शोधन केन्द्र से निकलने वाली पानी की पाइप लाइन के साथ-साथ जाता है। यह मार्ग थोड़ा दुर्गम है इसलिए इस मार्ग से उतरना लोगों को रोमाञ्चित करता है।

चित्र संख्या 3.4.11 दोपहिया एवं पाइपलाइन मार्ग

चतुर्थ अध्याय

अध्ययन विधि एवं प्रक्रिया

4.1 प्रस्तावना

शिक्षा और मनोविज्ञान में शोध अभिकल्पों का विकास अनुसन्धान के निष्कर्षों को निरर्थक रूप से प्रभावित करने वाले बाह्य कारकों के निष्कासन या नियन्त्रण के लिए हुआ। शोध अभिकल्प, समस्या से सम्बन्धित परिकल्पना के कथन से लेकर आँकड़ों के अन्तिम विश्लेषण तक की उन सभी क्रियाओं की योजना या रूपरेखा है, जो शोध प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने के लिए की जाती हैं। इस प्रकार यह एक व्यापक कार्ययोजना है, जिसका अन्तिम उद्देश्य अनुसन्धानकर्ता को शोध प्रश्न (समस्या) का एक ऐसा उत्तर (हल) प्रदान करना है, जो यथासम्भव वैध, वस्तुनिष्ठ, परिशुद्ध और किफायती हो।

क्रिर्क (1968) के अनुसार—"प्रायोगिक अभिकल्प, प्रयोज्यों को विभिन्न प्रायोगिक स्थितियों में निर्दिष्ट किए जाने की विशिष्ट योजना है जिसमें सम्बन्धित सांख्यिकीय विश्लेषण की योजना भी सम्मिलित रहती है।" "Experimental design is……..a particular type of plan for assigning subject to experimental conditions and the statistical analysis associated with the plan."

—R.E. Kirk: Experimental Design Procedures for Behavioural Science (Brooks), 1968.

डी एन श्रीवास्तव (1994) के अनुसार—"अनुसन्धान अभिकल्प अन्वेषण की विशिष्ट आधारभूत योजना, संरचना और वीर व्यूहनीति है, जिसमें प्रयोज्यों का स्वतन्त्र चर के स्तरों के अनुसार वितरण और स्वतन्त्र चर या चरों की प्रहस्तन प्रक्रियाएँ और सम्बन्धित सांख्यिकीय विश्लेषण की योजना सम्मिलित होती है। इसके द्वारा अनुसन्धान प्रश्नों या परिकल्पनाओं के उत्तर प्राप्त किए जाते हैं और प्रसरण पर नियन्त्रण किया जाता है।"

4.2 शोध विधि

प्रत्येक शोधकर्ता को अधिक विश्वसनीय एवं ठोस परिणामों के प्राप्त हेतु कई विधियों का चयन करना होता है। अनुसंधानकर्ता के द्वारा अनुसंधान के प्रकृति के अनुरूप अनुसंधान के विधि का प्रयोग किया जाता है। प्रत्येक विधि की अपनी कुछ अवधारणाएँ एवं तौर-तरीके होते हैं। शैक्षिक समस्याओं के समाधान हेतु सर्वेक्षण विधि सर्वाधिक प्रयोग की जाने वाली विधि है। प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है क्योंकि यह विधि व्यक्ति विशेष से सम्बन्धित न होकर पूरे समूह से सम्बन्धित होती है और इसमें अधिक से अधिक व्यक्तियों को सम्मिलित किया जा सकता है।

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि को अपना कर **बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरुकता का अध्ययन** करने का प्रयास किया है।

4.2.1 सर्वेक्षण विधि

सर्वेक्षण विधि शोध करने की वह अनुपम विधि है जिसके अन्तर्गत वृहद पैमाने पर आँकड़े एकत्रित किए जाते हैं। सर्वेक्षण विधि में अध्ययनकर्ता जनसंख्या का चयन सुरक्षा पूर्वक करता है। सर्वेक्षण विधि का उद्देश्य किसी इकाई के वर्तमान व्यवस्था एवं तथ्यों का अध्ययन करना होता है।

फेयरचाइल्ड (1944) के अनुसार, "सामान्य शब्दों में एक समुदाय के सम्पूर्ण जीवन अथवा उसके किसी एक पक्ष जैसे– स्वास्थ्य, शिक्षा, मनोरञ्जन के सम्बन्ध में तथ्यों को व्यवस्थित, संकलित और विश्लेषण करने को ही सर्वेक्षण कहते हैं।"

"A term ……..used rather loosely to indicate a more or less orderly and comprehensive gathering and analysis of facts about the total life of a community or some phase of it e.g. health, education, recreation ……. ."

—Fairchild, Dictionary of Sociology.

4.3 शोध अभिकल्प

बुन्देलखण्ड विश्विद्यालय, झाँसी द्वारा शोध के प्रारूप सम्बन्धी दिशा-निर्देश के अभाव में शोधर्थी द्वारा प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध में APA Style एवं Kumaun University, Nainital द्वारा शोध हेतु निर्गत दिशा-निर्देशों का संयुक्त रूप से प्रयोग किया गया है। **(विस्तृत विवरण परिशिष्ट—V)**

4.4 अध्ययन समष्टि

अध्ययन जनसंख्या से तात्पर्य अध्ययन के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु वाञ्छित निरीक्षण से सम्बन्धित इकाईयों की कुल संख्या से है। वर्तमान अध्ययन के सन्दर्भ में अध्ययन की मूल जनसंख्या जिनसे वांछित सूचनाएँ संकलित करनी है, वह हैं— *बाँदा नगर के महाविद्यालय (राजकीय महिला डिग्री कॉलेज, पण्डित जवाहरलाल नेहरू पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, राजा देवी पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, KCNIT, RN Institute) के कुल 200 विद्यार्थी, जिसमें 85 छात्र एवं 115 छात्राएँ हैं।*

4.5 प्रतिदर्श चयन

प्रतिदर्श को न्यादर्श भी कहते हैं। प्रतिदर्श जनसंख्या का वह छोटा भाग है, जिसे अनुसन्धानकर्ता के द्वारा वास्तविक अध्ययन के लिए चयनित किया जाता है। प्रतिदर्श जनसंख्या का प्रतिनिधित्व सूक्ष्म-रूप होता है तथा इससे प्राप्त सूचनाओं का समान्यीकरण करके जनसंख्या के बारे में अनुमान लगाया जाता है। प्रतिदर्श के अंग्रेजी पर्याय Sample का उद्भव लैटिन भाषा के Exemplum शब्द से हुआ है जिसका अर्थ है—उदाहरण। इस शाब्दिक अर्थ से भी संकेत मिलता है कि प्रतिदर्श जनसंख्या की कुछ ऐसी इकाईयों का संकलन होता है, जिन्हें जनसंख्या की विशेषताओं को स्पष्ट करने के लिए उदाहरण स्वरूप चुना जाता है।

इंग्लिश और इंग्लिश (1980) के अनुसार— "प्रतिदर्श जनसंख्या का एक भाग है जो दिए हुए उद्देश्य के लिए सम्पूर्ण जाति का प्रतिनिधित्व होता है। इसलिए प्रतिदर्श पर आधारित निष्कर्ष सम्पूर्ण जाति के लिए वैध होता है।"

"Sample: A part of a population, which for the purpose in hand is taken as representative of the whole population, so that certain conclusions based on the sample will be valid for this whole population."

—*Dictionary of Psychological Terms* , **English & English.**

प्रतिचयन प्रतिदर्श चुनने की विधि है, जिसमें पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार एक समूह में से निश्चित प्रतिशत की इकाईयों का चुनाव किया जाता है। प्रतिदर्श की इकाईयों को चुनते समय इस बात का ध्यान रखा जाता है कि चुना गया प्रतिदर्श उस सम्पूर्ण जनसंख्या या समष्टि (Universe) का प्रतिनिधित्व करे, जिससे वह प्रतिदर्श चुना गया है।

करलिंगर(1973) के अनुसार— "किसी जनसंख्या या समष्टि से उसके प्रतिनिधित्व-स्वरूप एक अंश चुन लेने को प्रतिचयन कहते हैं।"

"Sampling is taking any portion of a population or universe, as representative of that population or universe."

—F. N. Kerlinger.

4.5.1 प्रतिचयन की विधियाँ

प्रतिदर्श का चयन किसी न किसी प्रतिचयन विधि द्वारा किया जाता है। प्रतिचयन प्रक्रिया के लिये तकनीकी जानकारी और प्रशिक्षण आवश्यक है। प्रत्येक अध्ययनकर्त्ता प्रतिचयन नहीं कर सकता है। वह प्रतिचयन तभी कर सकता है जब उसे प्रतिचयन पद्धतियों का आवश्यक ज्ञान हों या इस क्षेत्र में उसे प्रशिक्षण प्राप्त हो। प्रतिचयन की विधियों को मुख्यतः दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है—

(I) यादृच्छिक प्रतिचयन विधियाँ—यादृच्छिक प्रतिचयन विधियों में वे सारी विधियाँ आती हैं, जिसमें किसी न किसी प्रकार का यादृच्छिकरण शामिल होता है। ऐसी विधियों को निम्नलिखित वर्गों में बाँटा जा सकता है—

- संयोगिक प्रतिचयन
- वर्गबद्ध प्रतिचयन
- गुच्छ प्रतिचयन
- द्विस्तर प्रतिचयन

(II) गैर यादृच्छिक प्रतिचयन विधियाँ—गैर यादृच्छिक विधि में प्रतिदर्श के सदस्यों का चुनाव उनकी उपलब्धता और शोधकर्ता की सुविधा पर निर्भर करता है अर्थात् शोधकर्ता प्रतिदर्श में उन्हीं सदस्यों को रखता है जिन्हें वह आसानी से प्राप्त कर सकता है। इससे प्रतिदर्श में अधिक सदस्य लिए जा सकते हैं। इन विधियों को निम्नलिखित वर्गों में बाँटा जा सकता है—

- उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन
- अंश प्रतिचयन
- आकस्मिक प्रतिचयन
- **सुविधानुसार प्रतिचयन**
- स्वेच्छानुसार प्रतिचयन

4.5.1.1 सुविधानुसार प्रतिचयन

सुविधानुसार प्रतिचयन का प्रयोग सर्वेक्षणात्मक शोध में किया जाता है जहाँ शोधकर्ता को तथ्य का सस्ता सन्निकटन प्राप्त करना हो। जैसा कि इस विधि के नाम से पता चलता है, इसमें प्रतिदर्श का चयन इसलिए किया जाता है क्योंकि यह सुविधाजनक होता है। इसे **अव्यवस्थित या आकस्मिक प्रतिचयन** भी कहा जाता है, क्योंकि यह विधि उन लोगों पर लागू होती है जो टहलते हुए अचानक मिल जायें या उन लोगों पर

लागू होती है जिसकी शोध में विशेष रुचि हो स्वयंसेवकों का उपयोग सुविधानुसार प्रतिचयन का एक उदाहरण है। इस विधि का प्रयोग परिणामों का सकल आकलन प्राप्त करने के लिए प्राथमिक अनुसन्धान प्रयासों के दौरान किया जाता है। इस विधि से प्रतिदर्श का चयन करने में कोई खर्च या समय व्यर्थ नहीं जाता।

प्रदत्त संकलन हेतु **सुविधानुसार प्रतिचयन विधि** का प्रयोग इसलिए किया गया क्योंकि कोरोना काल होने के कारण विद्यालयों/महाविद्यालयों का खुलना तथा उनमें शिक्षकों एवं विद्यार्थियों का भौतिक रूप से आना-जाना अनिश्चित था। अधिकांश अध्ययन-अध्यापन ऑनलाइन माध्यम से हो रहा था। अतः शोधकर्ता द्वारा प्रदत्त संकलन गूगल फॉर्म के माध्यम से करने का निश्चय किया गया, इस हेतु महाविद्यालयों के शिक्षकों द्वारा अध्ययन-अध्यापन के लिए विद्यार्थियों के what's app ग्रुप में गूगल फॉर्म का लिंक प्रेषित कर तथा मोबाइल रखने वाले कुछ विद्यार्थियों से सीधा सम्पर्क कर विद्यार्थियों का न्यादर्श रूप में चयन किया गया।

4.6 लक्षित प्रतिदर्श का चयन

लक्षित न्यादर्श के चयन हेतु निम्नांकित प्रक्रिया का अनुकरण किया गया—

4.6.1 जनपद का चयन एवं न्यायोचितता

जैसा कि पूर्व में स्पष्ट किया जा चुका है कि वर्तमान शोध अध्ययन हेतु शोधकर्ता द्वारा बाँदा जनपद के अन्तर्गत बाँदा नगर, बबेरू, अतर्रा, पैलानी तथा नरैनी तहसीलें आती हैं, जिसमें से न्यादर्श के चयन के लिए बाँदा नगर का चुनाव किया गया।

बुन्देलखण्ड में बाँदा जनपद की गिनती पिछड़े जिलों में होती है। इस जिले को विकास की मुख्यधारा में लाने हेतु अधिकाधिक शोध कार्य किये जाने की आवश्यकता है, जिसको समझते हुए शोधकर्ता ने अपने शोध कार्य हेतु बाँदा जनपद का चुनाव किया। साथ ही शोधकर्ता जन्म से ही बाँदा नगर का निवासी है एवं यहीं रहकर अध्ययन कार्य कर रहा है, जिस कारण शोधकर्ता का इस नगर से भावनात्मक जुड़ाव भी है। अतः शोधकर्ता ने अध्ययन हेतु न्यादर्श चयन में **सुविधानुसार प्रतिदर्श विधि** को अंगीकृत कर, उत्तर प्रदेश के बाँदा जनपद के बाँदा नगर को चयनित किया गया है।

4.6.2 संस्थाओं का चयन

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध बाँदा नगर की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में जागरूकता के अध्ययन से सम्बन्धित है। प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध में शोधकर्ता द्वारा बाँदा नगर के विभिन्न महाविद्यालयों में अध्ययनरत 200 विद्यार्थियों का चयन सुविधानुसार प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया **(परिशिष्ट–VI)** तथा उन्हें विभिन्न समूहों—छात्र-छात्राएँ, प्रशिक्षित-अप्रशिक्षित विद्यार्थियों में विभाजित किया गया, जिसका विवरण निम्नवत है—

तालिका संख्या 4.6.2.1
न्यादर्श वितरण तालिका

चर	वर्ग	संख्या	कुल संख्या
लिंग	छात्र	85	**200**
	छात्राएँ	115	
विद्यार्थी स्तर	प्रशिक्षित	124	**200**
	अप्रशिक्षित	76	

तालिका संख्या 4.6.2.2

लिंग-वार प्रतिदर्श को प्रदर्शित करती तालिका

क्रम संख्या	महाविद्यालय का नाम	छात्र	छात्राएँ
1.	राजकीय महिला डिग्री कॉलेज, बाँदा		25
2.	पंडित जवाहरलाल नेहरू पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, बाँदा	39	12
3.	राजा देवी पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, बाँदा	37	58
4.	KCNIT	02	07
5.	R. N. Institute	07	13
योग		**85**	**115**
		200	

तालिका संख्या 4.6.2.3

प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित विद्यार्थियों के आधार पर विभाजन को प्रदर्शित करती तालिका

क्रम संख्या	महाविद्यालय का नाम	प्रशिक्षित		अप्रशिक्षित	
		छात्र	छात्राएँ	छात्र	छात्राएँ
1.	राजकीय महिला डिग्री कॉलेज				25
2.	पंडित जवाहरलाल नेहरू पोस्ट ग्रैजुएट कॉलेज			39	12
3.	राजा देवी पोस्ट ग्रैजुएट कॉलेज	37	58		
4.	KCNIT	02	07		
5.	RN Institute	07	13		
योग		**46**	**78**	**39**	**37**
		124		**76**	

4.7 प्रदत्तों का स्रोत

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता ने प्रदत्तों के संकलन के लिए प्राथमिक स्रोत का ही प्रयोग किया है।

शोध में प्रदत्तों का स्रोत निम्न है—

उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयों के विद्यार्थी।

4.8 प्रदत्तों की प्रकृति

प्रस्तुत शोध में प्रदत्तों के रूप में विद्यार्थियों की जागरूकता जानने हेतु "बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूकता मापनी" का प्रयोग कर अनुक्रियायें प्राप्त की गयी हैं। तत्पश्चात उपकरण से प्राप्त अनुक्रियाओं का अंकन किया गया, अतः प्रदत्तों की प्रकृति मात्रात्मक है।

तालिका संख्या 4.8
बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूकता की विरासतानुसार प्रश्न संख्या को प्रदर्शित करती तालिका

क्र० सं०	आयाम	प्रश्न	कुल प्रश्नों की संख्या
1	राम निवास मन्दिर	2, 9, 20, 29, 31	5
2	नवाब टैंक	6, 7, 10, 15, 22, 26	6
3	पहाड़ी बाबा आश्रम	1, 4, 8, 12, 19, 23, 27, 28, 30, 32, 33	11
4	सिद्धन	3, 5, 11, 13, 14, 16, 17, 18, 21, 24, 25	11
कुल कथनों की संख्या		33	33

4.9 शोध उपकरण

शोध उपकरण वे उपकरण हैं जिनका उपयोग करके अनुसन्धान में डाटा एकत्र किया जाता है। यह अध्ययन के लिए डाटा संग्रह का साधन बन जाता है। यह विश्वसनीय और सटीक होना चाहिए। शिक्षा के क्षेत्र में तथ्यों के संकलन के लिये प्रायोगिक विधि में किसी उपकरण/यन्त्र का उपयोग होता है। इसके साथ-साथ निरीक्षणों का भी सहारा लिया जाता है। लेकिन जब अध्ययन प्रयोगात्मक विधि के अतिरिक्त अन्य वैज्ञानिक विधियों द्वारा किये जाते हैं तो तथ्यों के संकलन में मुख्यतः निम्न उपकरणों का उपयोग करते हैं—

- प्रेक्षण
- साक्षात्कार
- अनुसूची
- **प्रश्नावली**
- समाजमिति
- वैयक्तिक अध्ययन
- व्यक्तिवृत विधि
- वस्तुपरक मापनियाँ

(i) निर्धारण मापनी

(ii) पदांकन मापनी

(iii) चिह्नांकन सूची

- मनोवैज्ञानिक परीक्षण

(i) बुद्धि परीक्षण

(ii) अभियोग्यता परीक्षण

(iii) अभिरुचि सूची

(iv) व्यक्तित्व परीक्षण

- अभिवृत्ति मापनियाँ

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध में प्रदत्त संकलन के लिए शोधकर्ता द्वारा शोध उपकरण के रूप में **स्वनिर्मित प्रश्नावली** का प्रयोग किया गया है।

4.9.1 प्रश्नावली

प्रश्नावली प्रश्नों की वह सूची है जो शोध समस्या के सम्बन्ध में बनायी जाती है और जिसकी सहायता से अध्ययन इकाइयों से तथ्यों का संकलन करके शोध समस्या का अध्ययन पूर्ण किया जाता है।

गुड और हॉट (1952) के अनुसार, "सामान्य रूप से प्रश्नावली का अर्थ, प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने की उस प्रणाली से है जिसमें एक पत्रक, प्रारूप या प्रपत्र का उपयोग किया जाता है जिसे उत्तर दाता स्वयं भरता है।"
"In general the word questionnaire refers to a device for securing answers to questions by using a form which the respondent fills in himself."

— Goode and Hatt

लुण्डबर्ग (1957) के अनुसार, "मौलिक रूप से प्रश्नावली उद्दीपकों का वह समूह होता है जिसे शिक्षित लोगों के सामने, इन उद्दीपकों के अन्तर्गत उनके मौखिक व्यवहारों का निरीक्षण करने के लिए प्रस्तुत किया जाता है।"
"Fundamentally, the questionnaire is a set of stimuli to which literate people are exposed in order to observe their verbal behaviour under these stimuli."

—Lundberg

4.9.2 स्वनिर्मित प्रश्नावली की आवश्यकता

शोधकर्ता के समक्ष महाविद्यालयीन स्तर के विद्यार्थियों में बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरुकता का अध्ययन करने के लिए **कोई मानकीकृत उपकरण उपलब्ध न**

होने के कारण स्व-निर्मित प्रश्नावली का निर्माण किया गया। इसका निर्माण अध्ययन के लिए आवश्यक है। इस उपकरण का निर्माण अनुसन्धानकर्ता ने शोध समस्या के उद्देश्यों एवं समस्या के घटकों को ध्यान में रखकर किया है।

4.9.3 स्वनिर्मित प्रश्नावली निर्माण के सोपान

प्रस्तुत शोध हेतु बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण किया गया। प्रश्नावली निर्माण के सोपान निम्नवत हैं—

(i) प्रथम सोपान: सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

अनुसन्धानकर्ता द्वारा प्रश्नावली निर्माण से पूर्व सम्बन्धित साहित्य का व्यापक एवं गहन अध्ययन किया गया।

(ii) द्वितीय सोपान: विषय विशेषज्ञों से परामर्श

शोधकर्ता ने प्रश्नावली निर्माण हेतु विषय से सम्बन्धित विशेषज्ञों की राय ली तथा उनके परामर्श से प्रश्नावली के निर्माण के लिए क्षेत्र निर्धारित किये।

(iii) तृतीय सोपान: प्रश्नों का निर्माण

बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों से सम्बन्धित जागरूकता के अध्ययन हेतु प्रत्येक क्षेत्र से सम्बन्धित अधिकतम सम्भव प्रश्नों का निर्माण किया गया। इस प्रकार बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूकता के 45 प्रश्नों का निर्माण किया गया। **(परिशिष्ट—VII)** समस्या के उद्देश्य एवं न्यादर्श के स्तर के आधार पर संकलन हेतु बन्द प्रश्नावली का चयन किया गया। इनमें कथनों को विकल्पात्मक बनाया गया जिसमें चार विकल्प दिए गये, इन चार में से एक विकल्प को चुनना था।

(iv) चतुर्थ सोपान: विशेषज्ञों की राय

प्रश्नावली निर्माण के पश्चात इसे विशेषज्ञों को दिखाया गया। उनके द्वारा निरर्थक एवं दोहराव वाले प्रश्नों को हटाया गया तथा कुछ नवीन प्रश्न जोड़े गये। अतः सुझावों के पश्चात प्रश्नावली में प्रश्नों को क्रमवार रखा गया तथा अन्तिम रूप से कुल 33 प्रश्न बने। **(परिशिष्ट—VIII)**

4.10 परीक्षण का प्रशासन

परीक्षण का प्रशासन गूगल फॉर्म के माध्यम से ऑनलाइन रूप में किया जाना था। इस हेतु सर्वप्रथम शोधकर्ता ने राजकीय महिला महाविद्यालय, बाँदा की प्राचार्या डॉ० दीपाली गुप्ता से मिलकर उन्हें इस जागरूकता प्रश्नावली के विषय में बताया। उन्होंने इसे प्रशासित करने की अनुमति दी तथा प्रश्नावली के लिंक को अपने व्हाट्स एप नम्बर पर भेजने के लिए कहा तथा उन्होंने इस लिंक को अपने महाविद्यालय के विद्यार्थियों के ग्रुप में भेज दिया।

इसी प्रकार शोधकर्ता राजा देवी पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, बाँदा में गया तथा शिक्षक-शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष से मिलकर उनसे प्रश्नावली को प्रशासित करने की अनुमति प्राप्त की। उनकी अनुमति से शोधकर्ता ने स्वयं कक्षाओं में जाकर प्रशिक्षुओं को इस प्रश्नावली के विषय में समझाया तथा अपने समक्ष ही प्रश्नावली को छात्रों के ग्रुप में भेजकर ऑनलाइन भरवाया।

इसी प्रकार शोधकर्ता आर० एन० इन्स्टीट्यूट, बाँदा तथा KCNIT, बाँदा के प्रवक्ताओं से मिला तथा उनकी सहायता से प्रश्नावली को विद्यार्थियों के व्हाट्स एप ग्रुप में भेजकर प्रश्नावली को भरवाया।

शोधकर्ता ने पण्डित जवाहर लाल नेहरू महाविद्यालय, बाँदा में स्वयं जाकर वहाँ के छात्र नेताओं की सहायता से प्रश्नावली को छात्रों को ऑनलाइन भेजकर भरवाया।

गूगल फॉर्म के माध्यम से विद्यार्थियों के प्रत्युत्तर शोधार्थी को gmail द्वारा प्राप्त हुए। कुछ विद्यार्थियों ने गूगल फॉर्म को एक से अधिक बार भर दिया। अतः उनके द्वारा भरे गये प्रथम गूगल फॉर्म को ही न्यादर्श में सम्मिलित किया गया। इसके अतिरिक्त कुछ ऐसे विद्यार्थियों ने भी गूगल फॉर्म भरा जो शोध हेतु चयनित महाविद्यालयों में अध्ययनरत् नहीं थे। ऐसे विद्यार्थियों को पहचानकर शोधकर्ता द्वारा उन्हें न्यादर्श में

सम्मिलित नहीं किया गया। न्यादर्श में दिनांक 30/03/2022 तक प्राप्त विद्यार्थियों की अनुक्रियाओं को ही न्यादर्श में सम्मिलित किया गया। इस प्रकार अन्तिम रूप से कुल 200 विद्यार्थियों की न्यादर्श के रूप में अनुक्रियायें प्राप्त हुईं। **(चित्रावली परिशिष्ट—IX)**

4.11 परीक्षण का फलांकन

शोधकर्ता ने प्रश्नावली का निर्माण गूगल फॉर्म के माध्यम से क्विज के रूप में किया था जिसमें प्रत्येक प्रश्न के लिए 1 अंक निर्धारित था। सही उत्तर के लिए 1 अंक तथा गलत उत्तर देने पर 0 अंक प्रदान किया गया। गूगल फॉर्म में response पर क्लिक करने पर वह स्वतः ही उसका फलांकन करके परिणाम प्रस्तुत कर देता है। **(विस्तृत विवरण परिशिष्ट—X)**

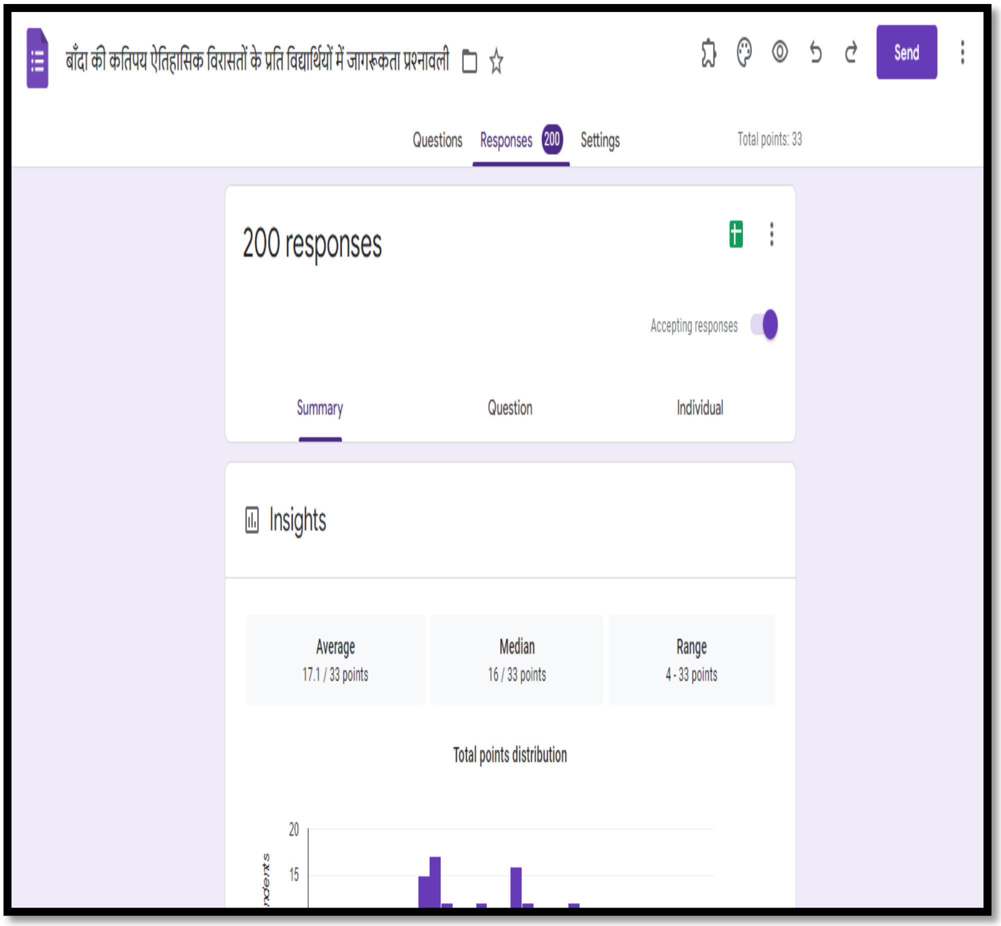

4.12 सांख्यिकीय प्रविधियाँ

सांख्यिकी, गणित की वह शाखा है, जिसमें आँकड़ों का संग्रहण, प्रदर्शन, वर्गीकरण और उसके गुणों का आकलन तथा अध्ययन किया जाता है। सांख्यिकी एक गणितीय विज्ञान है, जिसमें किसी वस्तु/अवयव/तन्त्र/समुदाय से सम्बन्धित आँकड़ों का संग्रह, विश्लेषण, व्याख्या या स्पष्टीकरण और प्रस्तुति की जाती है।

एम० जी० कैण्डाल के अनुसार—" सांख्यिकी प्रदत्तों के संकलन तथा विश्लेषण और निष्कर्ष निकालने का विज्ञान है।"

"Statistics is the science of collecting, analyzing and interpreting numerical data."

—M.G. Kendall.

स्लिगमैन के अनुसार—"सांख्यिकी वह विज्ञान है जिसमें किसी क्षेत्र विशेष की जानकारी हेतु संख्यात्मक आँकड़ों के संकलन, वर्गीकरण, प्रस्तुतीकरण, तुलना और व्याख्या करने की विधियों का वर्णन होता है।"

"Statistics is the science which deals with the methods of collecting, classifying, presenting, comparing and interpreting numerical data collected to throw some light on any sphere of inquiry."

—Sligman.

प्रस्तुत लघु-शोध प्रबन्ध में प्रश्नावली की सहायता से संग्रहित किए गये आँकड़ों से प्राप्त सूचनाओं का विवेचनात्मक अध्ययन करने से पहले इनको एक निश्चित रूप प्रदान करना था। इसके लिए शोधकर्ता ने सामान्य सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया।

शोध के उद्देश्य तथा आँकड़ों की प्रकृति के आधार पर निम्नलिखित सांख्यिकी प्रविधियों का प्रयोग किया गया—

- प्रतिशत
- मध्यमान
- प्रमाप विचलन
- क्रान्तिक अनुपात
- दण्ड आरेख

4.12.1 प्रतिशत (Percentage)

प्रतिशत गणित में किसी अनुपात को व्यक्त करने का एक तरीका है। इसे (%) द्वारा व्यक्त किया जाता है। प्रतिशत को ज्ञात करने का सूत्र निम्नवत है—

प्रतिशत(%) = (प्राप्तांक/ पूर्णांक)×100

4.12.2 मध्यमान (Mean)

मध्यमान को समान्तर माध्य या अंकगणितीय माध्य भी कहा जाता है।

किंग के अनुसार—"समंक माला के पदों के योग में उनकी संख्या से भाग देने पर जो अंक प्राप्त होता है उसी को अंकगणितीय माध्य या मध्यमान के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।"

"The arithmetic average may be defined as the sum of aggregate of a series of items, divided by their number."

—W. I. King

मध्यमान प्राप्तांकों का केन्द्रीय मान होता है जो सभी आँकड़ों का प्रतिनिधित्व करता है। मध्यमान के आधार पर एक समूह की दूसरे समूह से तुलना की जाती है।

मध्यमान की गणना निम्नलिखित सूत्र के द्वारा की जाती है—

$$\overline{X} = \frac{\sum X}{N}$$

यहाँ—

$\bar{x}$ = मध्यमान

$\sum x$ = प्राप्तांकों का योग

N = विद्यार्थियों की कुल संख्या

***मध्यमान की गणना हेतु एम० एस० एक्सेल के चरण*—**

(i) किसी भी संख्या समूह का मध्यमान निकालने के लिए एक्सेल के **AVERAGE** Function का प्रयोग करते हैं। एक्सेल स्प्रेडशीट में संख्याओं को प्रविष्ट करके जहाँ पर एवरेज जानना चाहते हैं, वहाँ पर क्लिक करें।

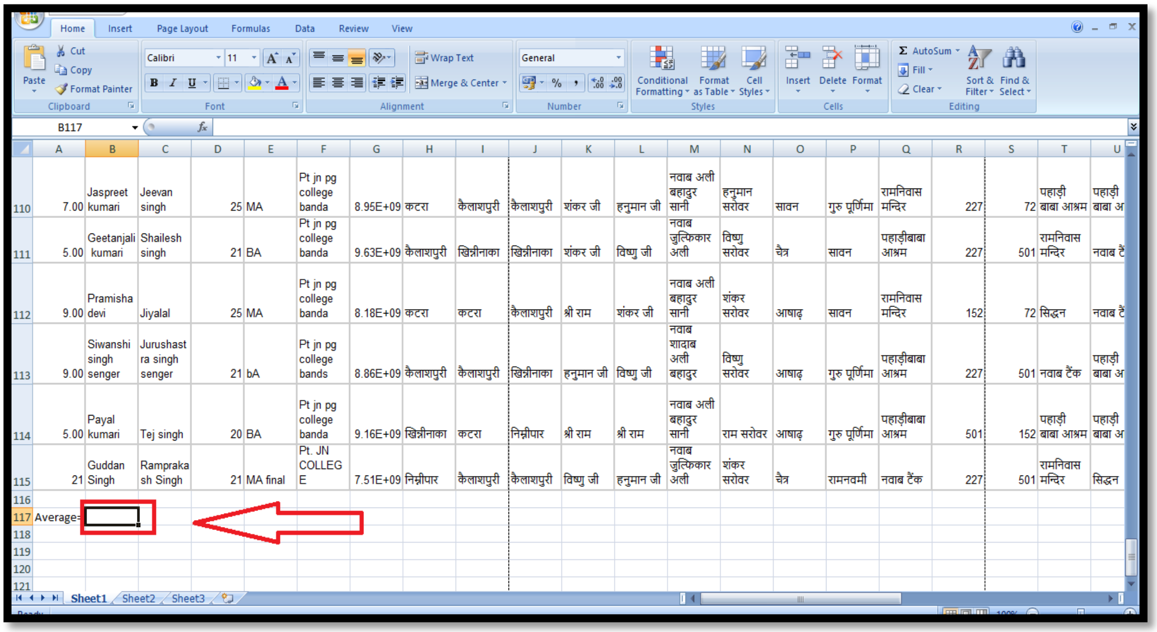

(ii) Formulas में क्लिक करें और 'Insert Function' tab को चुनें।

एक्सेल स्प्रेडशीट की row या column में enter करें।

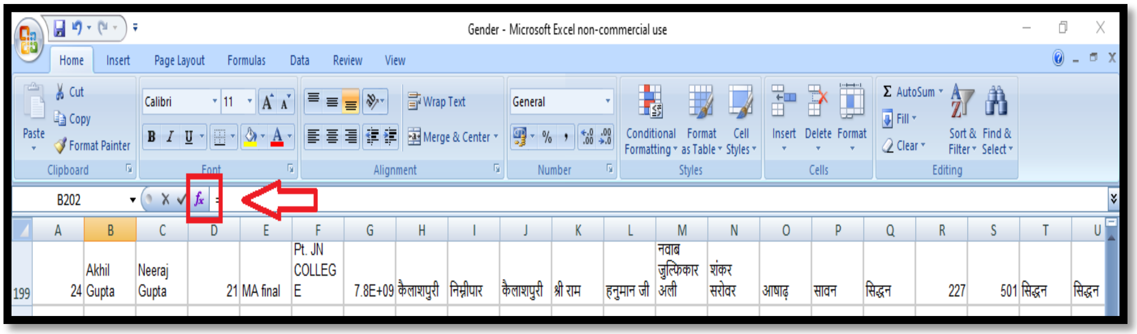

(iii) नीचे स्क्रॉल करें और **AVERAGE** Function चुनें।

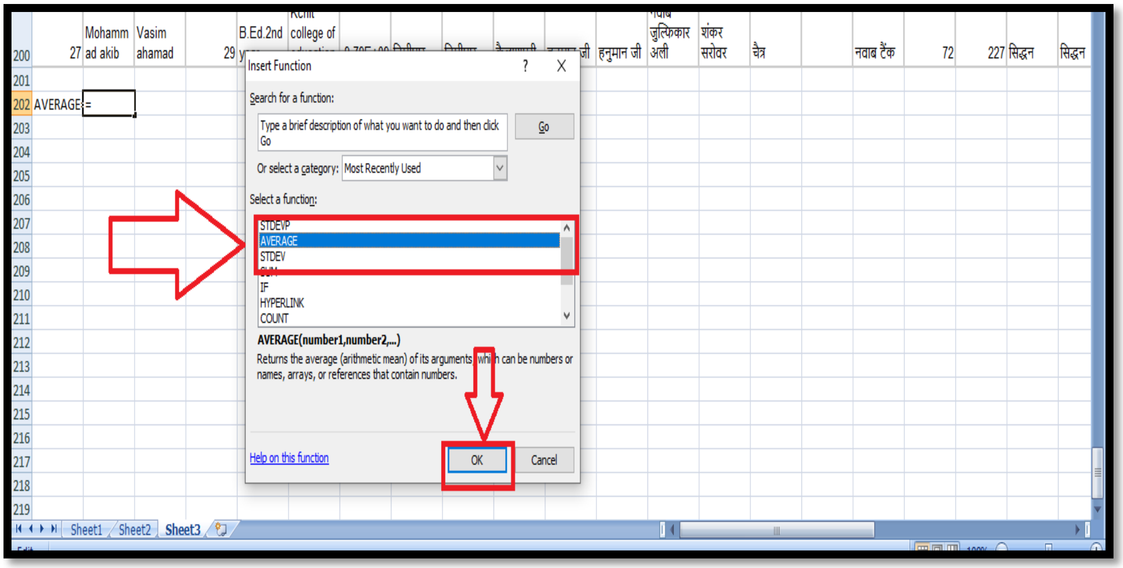

(iv) नम्बर 1 box में आपके नम्बर की लिस्ट के लिए, एक cell range (जैसे—A1:A200) enter करें और ok क्लिक करें।

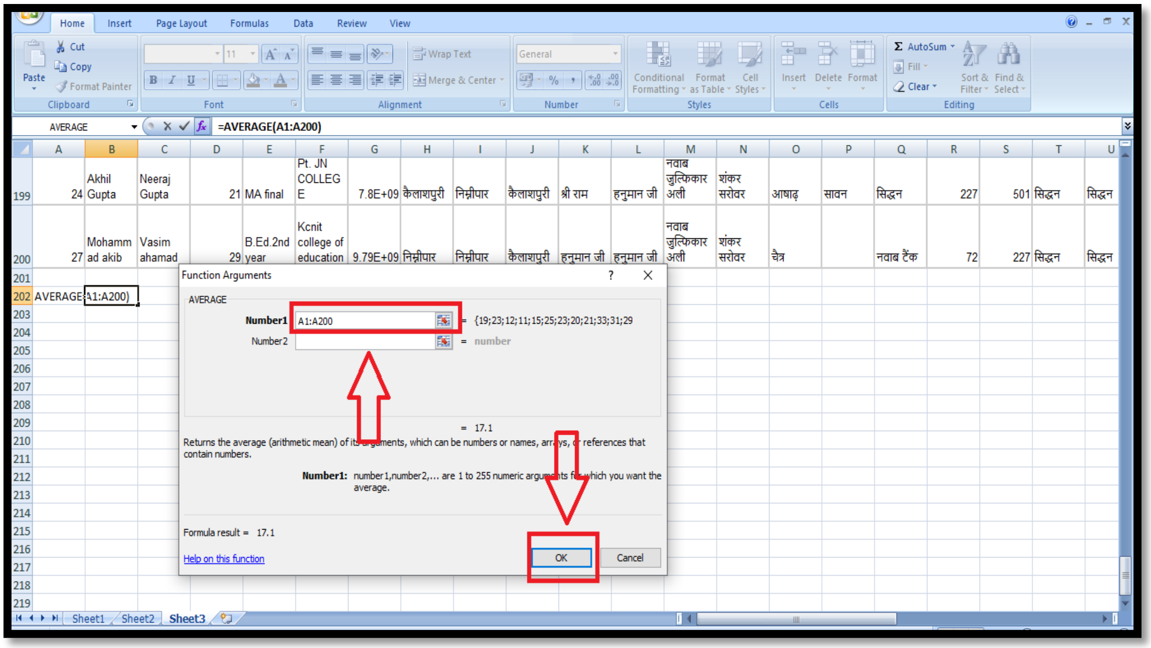

(v). अब आपके द्वारा चुनी हुई cell में उस लिस्ट का मध्यमान (average) नजर आयेगा।

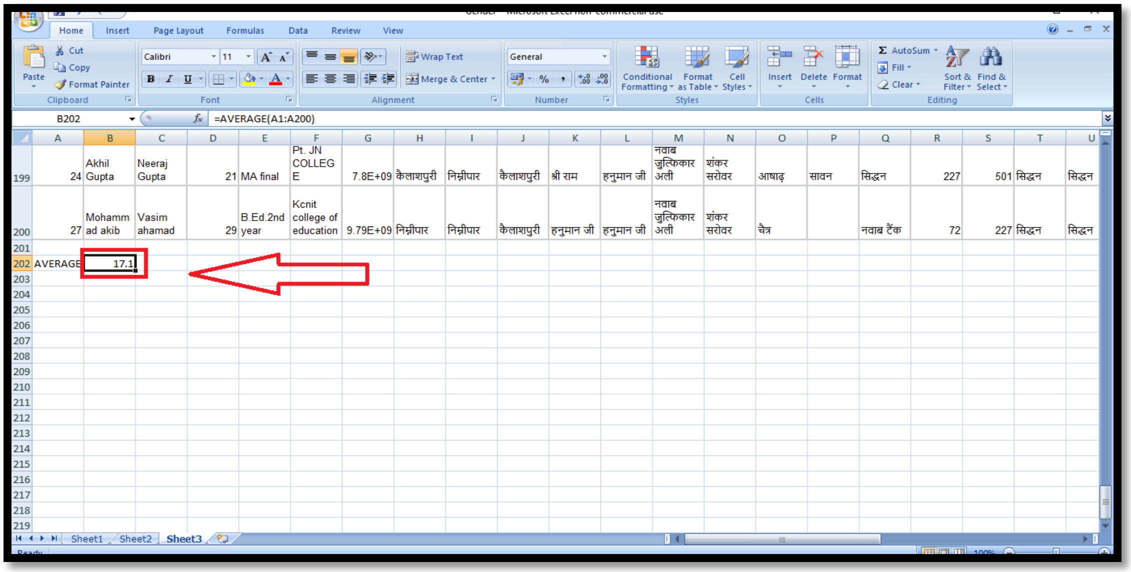

जब आपको इस फंक्शन का प्रयोग करने की आदत हो जायेगी फिर आप 'Insert Function' feature process का इस्तेमाल करना बन्द कर सकते हैं और इसकी जगह पर cell में सीधे इस सूत्र को type कर सकते हैं—

- Mean- "=AVERAGE (cell range)"

  e.g. "AVERAGE (A1:A200)"

4.12.3 प्रमाप विचलन (Standard Deviation)

प्रमाप विचलन समंक माला के विभिन्न पदों के समान्तर माध्य से लिए गये विचलनों के वर्गों के समान्तर माध्य का वर्गमूल होता है।

एलहान्स के अनुसार— "मानक विचलन अंकगणितीय माध्य से मापे गये विचलनों के वर्गों के माध्य का वर्गमूल होता है।"

"Standard deviation is the square root of the arithmetic average of the squares of deviations measured from the mean."

—Elhance.

प्रमाप विचलन को मानक विचलन या प्रामाणिक विचलन भी कहा जाता है। इसका संकेताक्षर **σ** है।

प्रमाप विचलन की गणना करने का सूत्र निम्नलिखित है—

$$\sigma = \sqrt{\frac{\sum (x - \text{mean})^2}{n}}$$

- x is a set of numbers
- mean is the average of the set of numbers
- n is the size of the set
- σ is the standard deviation

प्रमाप विचलन की गणना हेतु एम० एस० एक्सेल के चरण—

(i) प्रमाप विचलन की गणना के लिए **STDEVP** Function का प्रयोग करें।

आपके कर्सर को उस जगह पर रखें, आप जहाँ इसे देखना चाहते हैं।

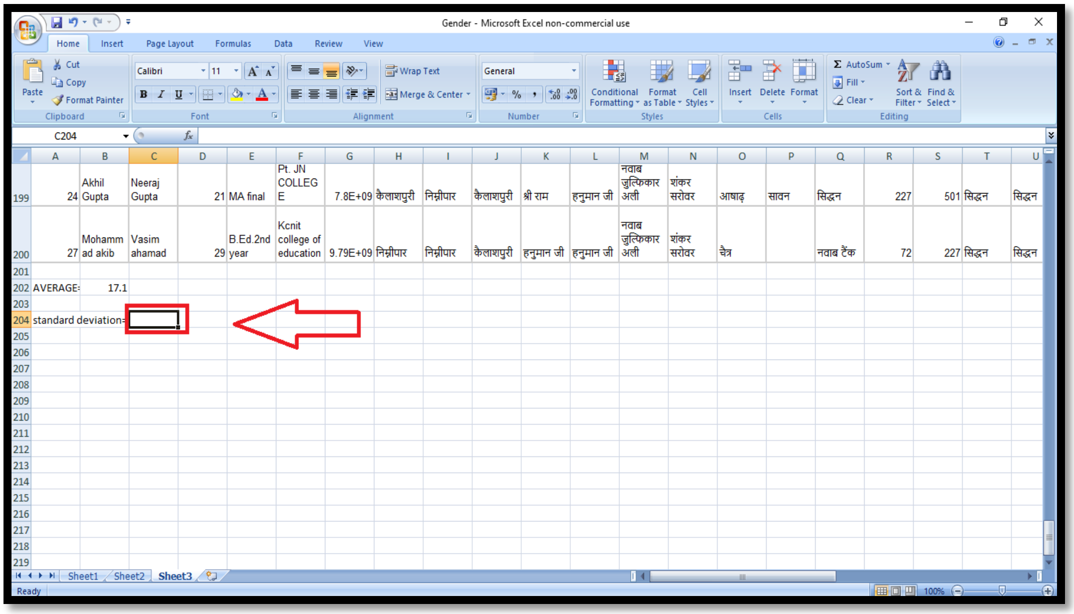

(ii). **FORMULAS** पर क्लिक करें और एक बार फिर से **Insert Function tab** चुनें।

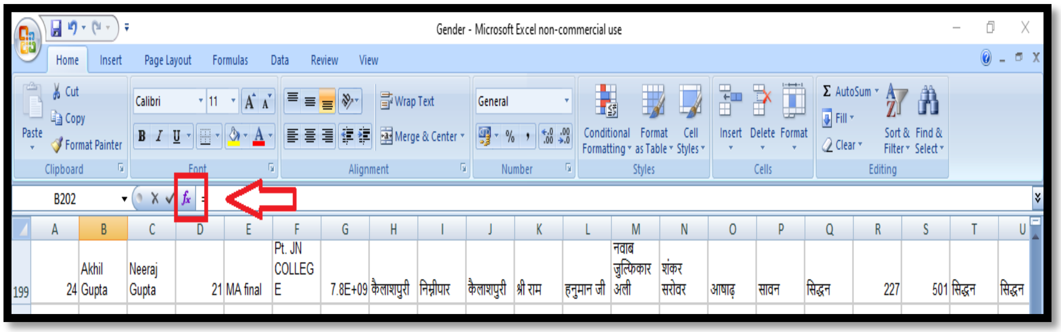

(iii). Dialog box पर scroll down करें और **STDEVP** Function चुनें।

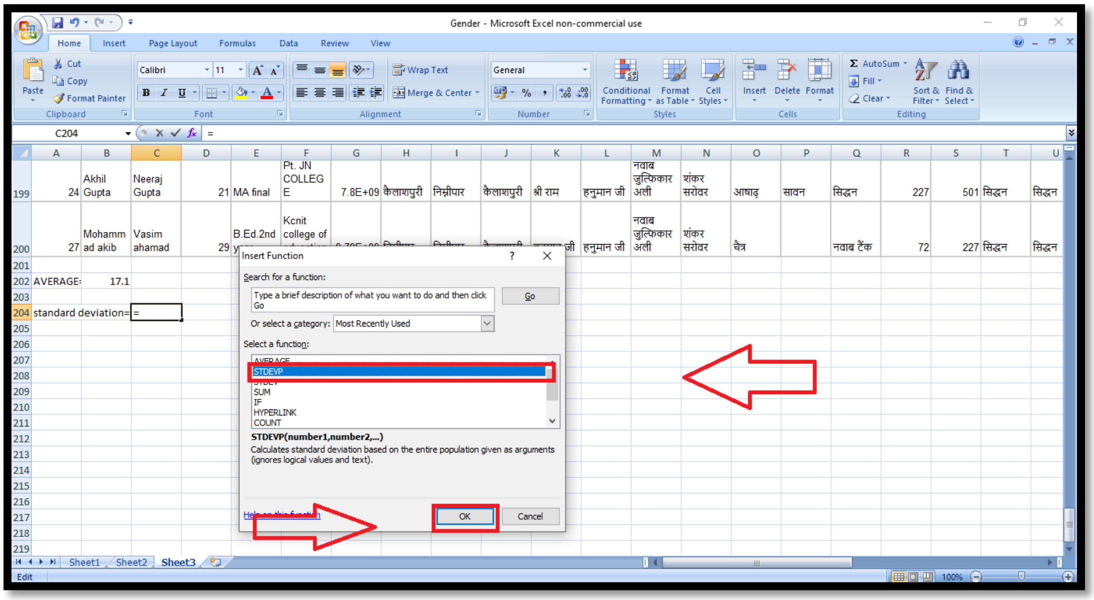

(iv) नम्बर 1 box में आपके नम्बर की लिस्ट के लिए cell range enter करें और ok करें।

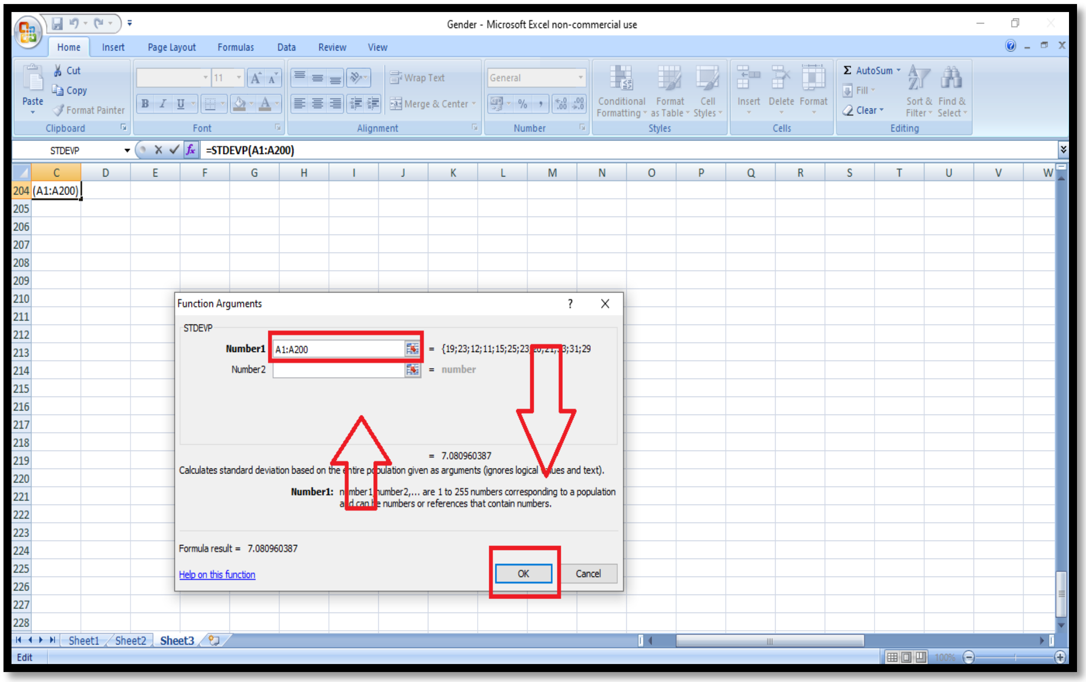

(v) अब आपके द्वारा चुनी हुई cell में उस लिस्ट का प्रमाप विचलन नजर आयेगा।

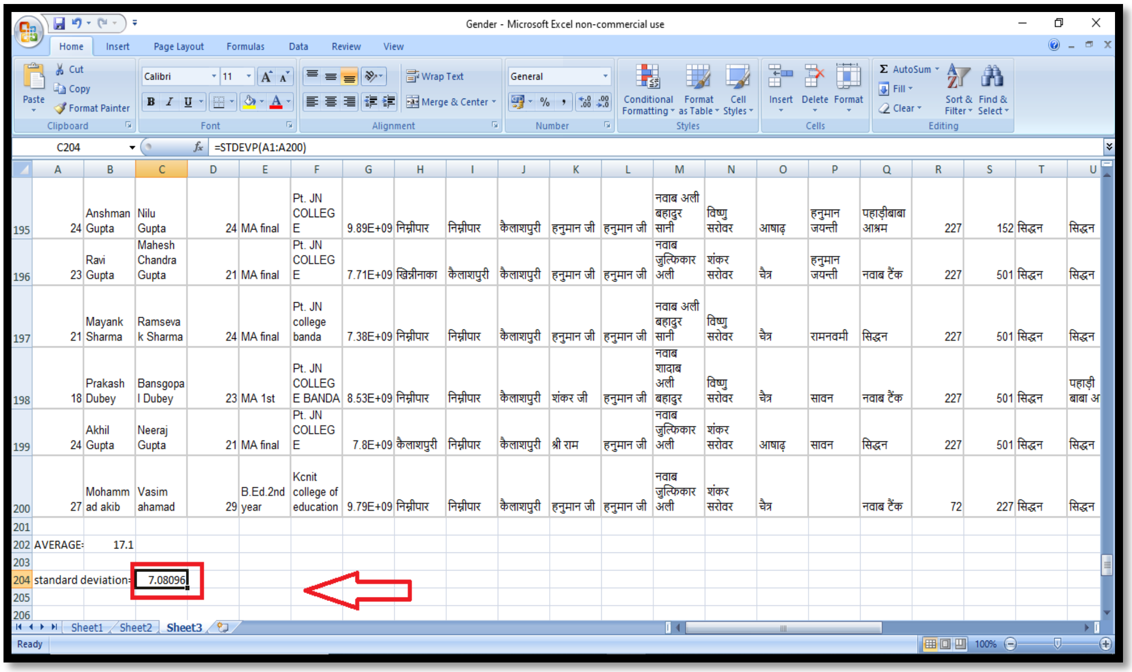

C204 =STDEVP(A1:A200)

	A	B	C	D	E	F	G	H	I	J	K	L	M	N	O	P	Q	R	S	T	U
195	24	Anshman Gupta	Nilu Gupta	24	MA final	Pt. JN COLLEGE	9.89E+09	निम्नीपार	निम्नीपार	कैलाशपुरी	हनुमान जी	हनुमान जी	नवाब अली बहादुर सानी	विष्णु सरोवर	आषाढ़	हनुमान जयन्ती	पहाड़ीबाबा आश्रम	227	152	सिद्धन	सिद्धन
196	23	Ravi Gupta	Mahesh Chandra Gupta	21	MA final	Pt. JN COLLEGE	7.71E+09	खिन्नीनाका	कैलाशपुरी	कैलाशपुरी	हनुमान जी	हनुमान जी	नवाब जुल्फिकार अली	शंकर सरोवर	चैत्र	हनुमान जयन्ती	नवाब टैंक	227	501	सिद्धन	सिद्धन
197	21	Mayank Sharma	Ramsevak Sharma	24	MA final	Pt. JN college banda	7.38E+09	निम्नीपार	निम्नीपार	कैलाशपुरी	हनुमान जी	हनुमान जी	नवाब अली बहादुर सानी	विष्णु सरोवर	चैत्र	रामनवमी	सिद्धन	227	501	सिद्धन	सिद्धन
198	18	Prakash Dubey	Bansgopal Dubey	23	MA 1st	Pt. JN COLLEGE BANDA	8.53E+09	निम्नीपार	निम्नीपार	कैलाशपुरी	शंकर जी	हनुमान जी	नवाब शादाब अली बहादुर	विष्णु सरोवर	चैत्र	सावन	नवाब टैंक	227	501	सिद्धन	पहाड़ी बाबा अ
199	24	Akhil Gupta	Neeraj Gupta	21	MA final	Pt. JN COLLEGE	7.8E+09	कैलाशपुरी	निम्नीपार	कैलाशपुरी	श्री राम	हनुमान जी	नवाब जुल्फिकार अली	शंकर सरोवर	आषाढ़	सावन	सिद्धन	227	501	सिद्धन	सिद्धन
200	27	Mohammad akib	Vasim ahamad	29	B.Ed.2nd year	Kcnit college of education	9.79E+09	निम्नीपार	निम्नीपार	कैलाशपुरी	हनुमान जी	हनुमान जी	नवाब जुल्फिकार अली	शंकर सरोवर	चैत्र		नवाब टैंक	72	227	सिद्धन	सिद्धन
201																					
202	AVERAGE:	17.1																			
203																					
204	standard deviation:		7.08096																		

जब आपको इस फंक्शन का प्रयोग करने की आदत हो जायेगी फिर आप Insert Function feature process का प्रयोग करना बन्द कर सकते हैं और इसकी जगह पर cell में सीधे सूत्र को type कर सकते हैं।

- Standard Deviation- "STDEVP (Cell range)

  e.g. "STDEVP (A1:A200)"

4.12.4 वैषम्यता तथा कुकुदता (Skewness and Kurtosis)

वैषम्यता से तात्पर्य सामान्य वक्र में होने वाले अपसरण से है, जो किसी जनसंख्या के माध्य और माध्यिका में होने वाले अंतर से उत्पन्न होता है। सामान्य वक्र में माध्य, माध्यिका तथा बहुलांक वक्र की आधार रेखा के मध्य एक ही बिन्दु पर पड़ते हैं तथा इन तीनों का मान भी संख्यात्मक रूप से भी बराबर होता है। इसके फलस्वरूप सामान्य वक्र का चित्र काफी सन्तुलित दिखाई पड़ता है क्योंकि इसका दायाँ और बायाँ भाग समान ढाल वाला और एक दूसरे के बराबर होता है। परन्तु जब वितरण सामान्य न होकर विषम होता है

तो माध्य तथा माध्यिका एक ही बिन्दु पर न पड़कर अलग-अलग पड़ते हैं और प्राप्तांकों का केन्द्रीकरण वितरण के बायीं या दायीं ओर हो जाता है। सामान्य वक्र में माध्य और माध्यिका दोनों बराबर होते हैं इसलिए विषमता शून्य होती है, परन्तु विषम वितरण में माध्य और माध्यिका में अन्तर होता है, यह अन्तर जितना ज्यादा होता है; विषमता उतनी अधिक होती है।

'विषमता' को इन दो 'सूत्रों' द्वारा ज्ञात किया जा सकता है–

(क) $Sk = \frac{3\,(\text{माध्य} - \text{मध्यि का})}{\sigma}$

यहाँ – Sk = विषमता, σ = मानक विचलन।

(ख) $Sk = \frac{(P_{99} + P_{10})}{2} - P_{50}$

जहां, SK = विषमता

P_{90} = प्रतिशतता 90

P_{10} = प्रतिशतता 10

P_{50} = प्रतिशतता 50 या मध्यिका

सामान्य वैषम्यता प्रसार

- If skewness is less than -1 or greater than 1, the distribution is highly skewed.
- If skewness is between -1 and -0.5 or between 0.5 and 1, the distribution is moderately skewed.
- If skewness is between -0.5 and 0.5, the distribution is approximately symmetric.

एक 'आवृत्ति वितरण वक्र', प्रसामान्य वक्र की तुलना में कितना **चपटा** अथवा **शिखरीय** है, इसकी जानकारी **कुकुदता** से मिलती है।

'ककुदता या 'कुर्टोसिस' को नीचे दिये गये 'सूत्र' द्वारा निकाला जा सकता है।

$Ku = \frac{Q}{(P_{90} + P_{10})}$ (प्रतिशित के आधार पर वक्रता को निकालना।)

जहां, Ku = ककुदता

Q = चतुर्थक विचलन

P_{90} = प्रतिशतता 90

P_{100} = प्रतिशतता 10

सामान्य कुकुदता प्रसार

A standard normal distribution has kurtosis of 3 and is recognized as mesokurtic. An increased kurtosis (>3) can be visualized as a thin “bell” with a high peak whereas a decreased kurtosis corresponds to a broadening of the peak and “thickening” of the tails.

ऑनलाइन वैषम्यता और कुकुदता ज्ञात करने के चरण—

Step 1: सबसे पहले गूगल क्रोम ब्राउज़र को खोलें।

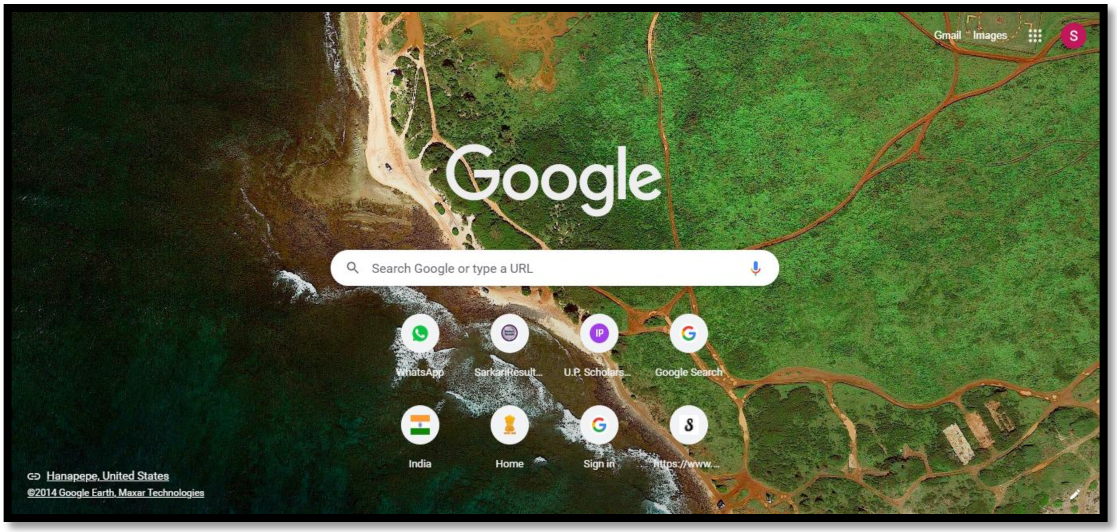

Step 2: Online Skewness and Kurtosis ungrouped data खोजें।

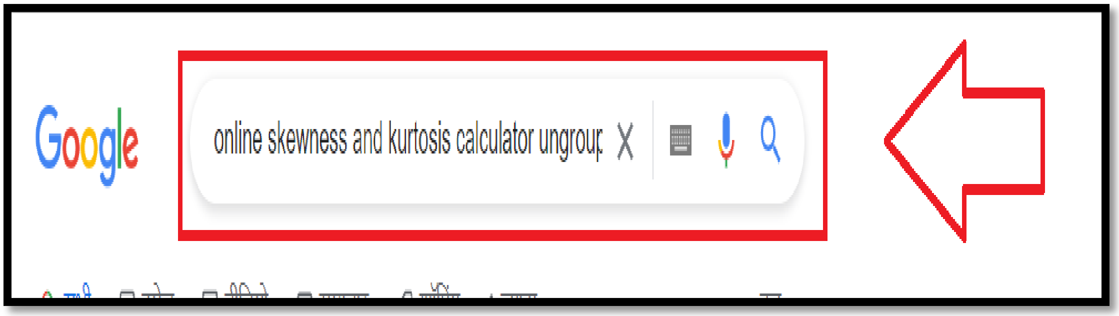

Step 3: पहले सर्च रिजल्ट (A to Z math) को खोलें।

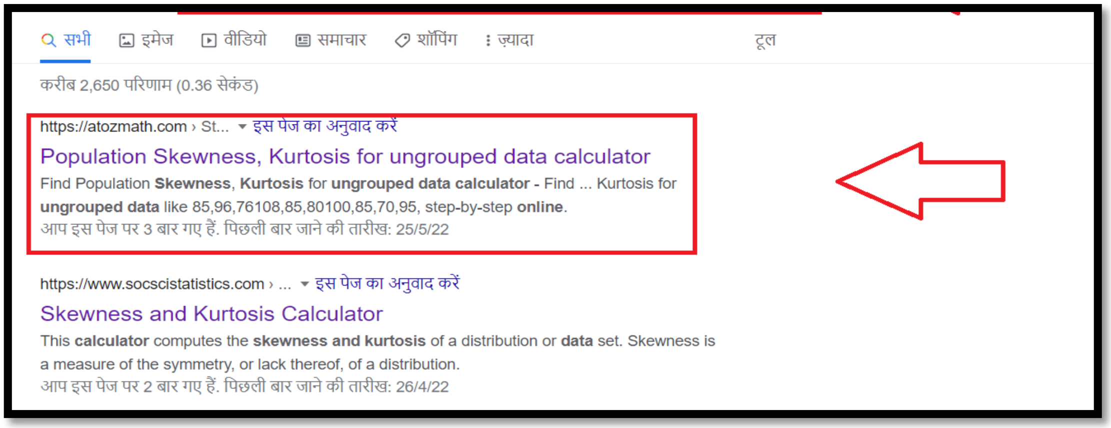

Step 4: Data enter करें।

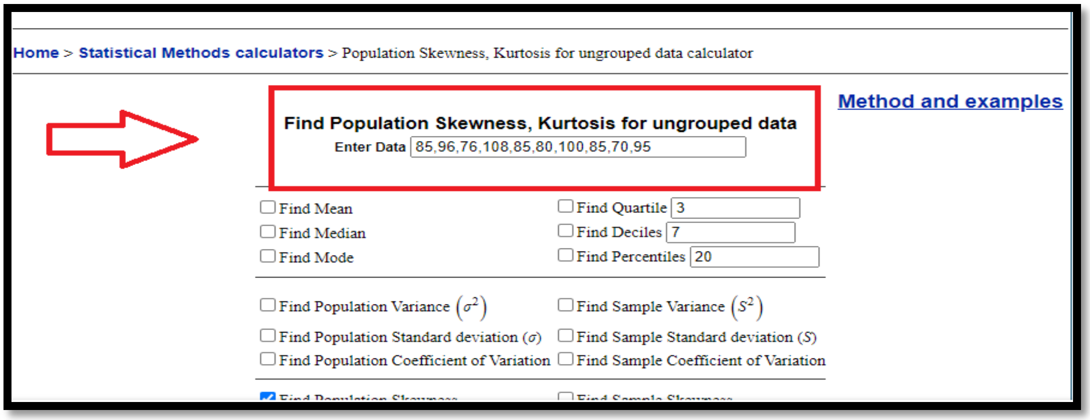

Step 5: Mean, Skewness तथा Kurtosis option को select करें।

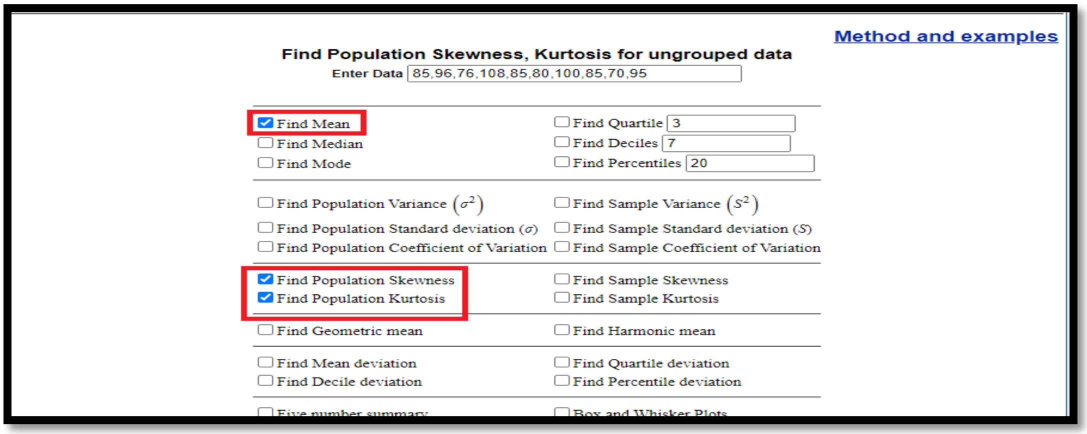

Step 6: Find पर click करें।

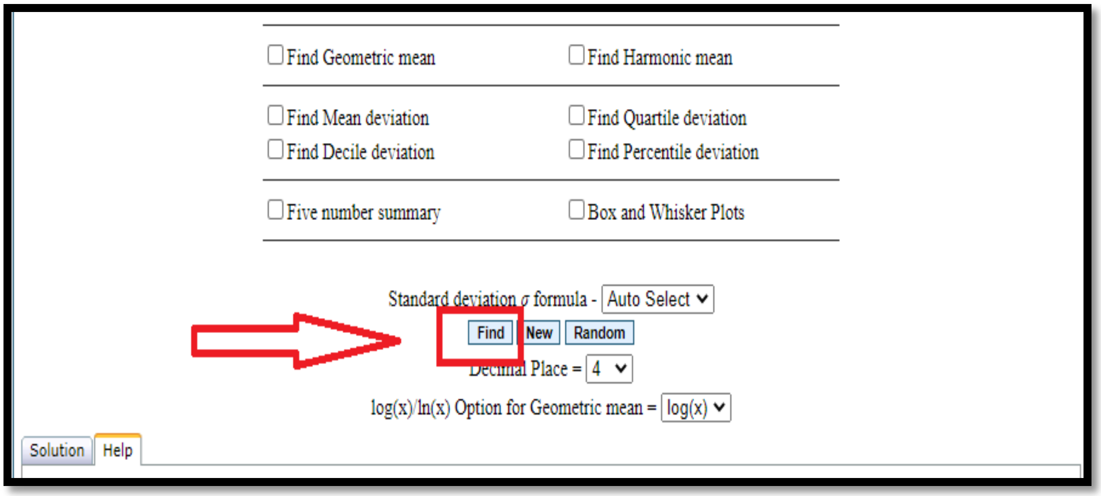

Step 7: आपका Result आपके सामने Open हो जायेगा।

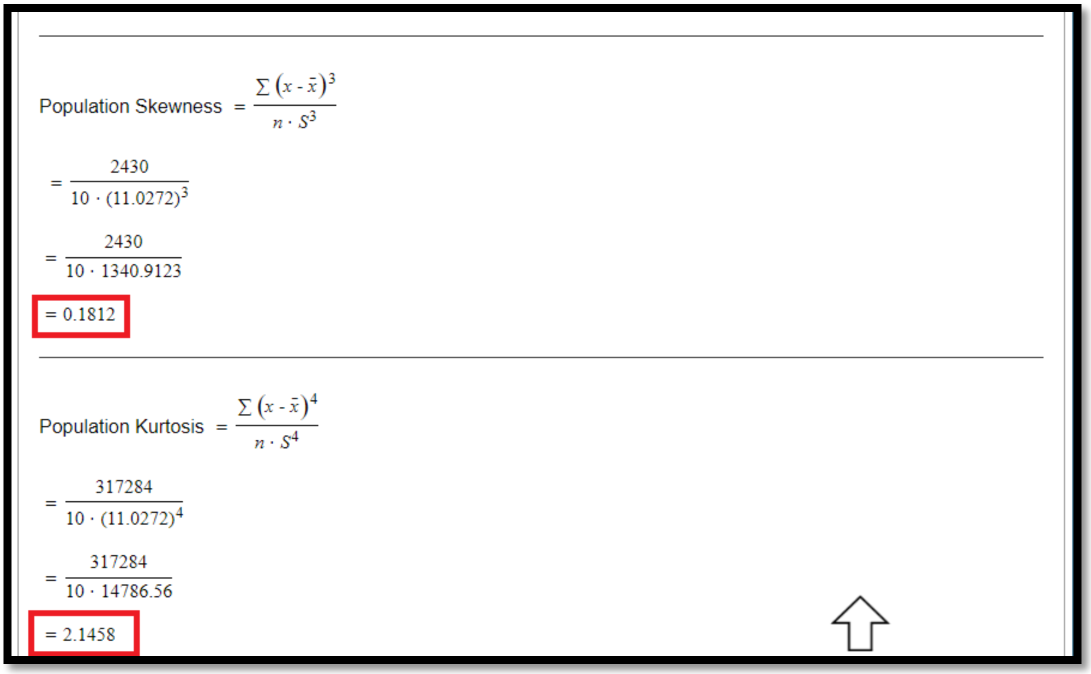

4.12.5 सामान्य सम्भाव्यता वक्र (Normal Probability Curve)

सामान्य सम्भाव्यता वक्र को सामान्य वक्र भी कहते हैं। इसका विकास 'त्रुटि के नियम' के आधार पर हुआ है। इस वक्र के जन्मदाता **ए० डी० मोरे** कहे जाते हैं। वे एक फ्रेंच गणितज्ञ थे और उन्होंने जुएं के खेल में संयोग की घटना की व्याख्या सामान्य सम्भाव्यता के आधार पर की। खगोलविद **कार्ल फ्रेडरिक गॉस** ने भी भौतिक विज्ञान में निरीक्षण सम्बन्धित त्रुटियों की व्याख्या सामान्यता के आधार पर की तथा त्रुटियों का सामान्य वक्र बनाया।

सामान्य वितरण की विशेषता यह होती है कि वितरण के मध्य में सर्वाधिक प्राप्तांक होते हैं तथा क्रमशः दोनों किनारों पर घटते जाते हैं। इसी सामान्य वितरण के आधार पर जो वक्र बनता है, उसे सामान्य वितरण वक्र या सामान्य सम्भाव्यता वक्र या सामान्य वक्र कहते हैं। यह वक्र सममित होता है तथा इसकी ऊँचाई मध्य में सर्वाधिक होती है। दोनों किनारों की ओर इसकी ऊँचाई घटती जाती है परन्तु आधार रेखा को स्पर्श नहीं करती है।

सामान्य सम्भाव्यता वक्र की गणना हेतु एम० एस० एक्सेल के चरण—

Step 1: Ms Excel में first cell lowest range से लेकर highest range तक data enter करें।

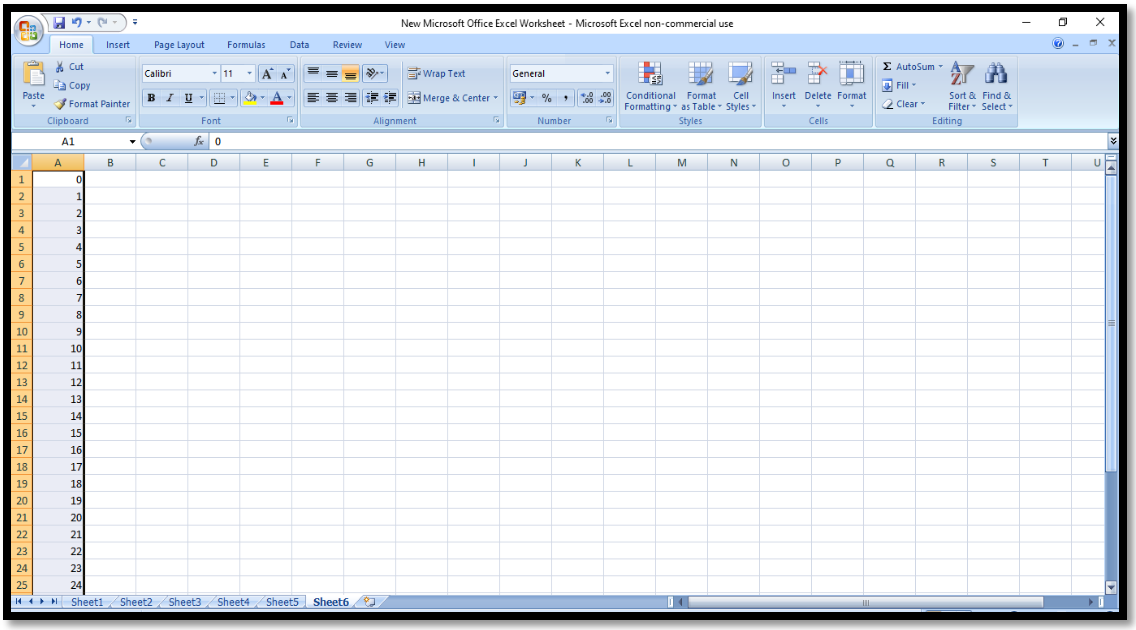

Step 2: Function option पर click करें।

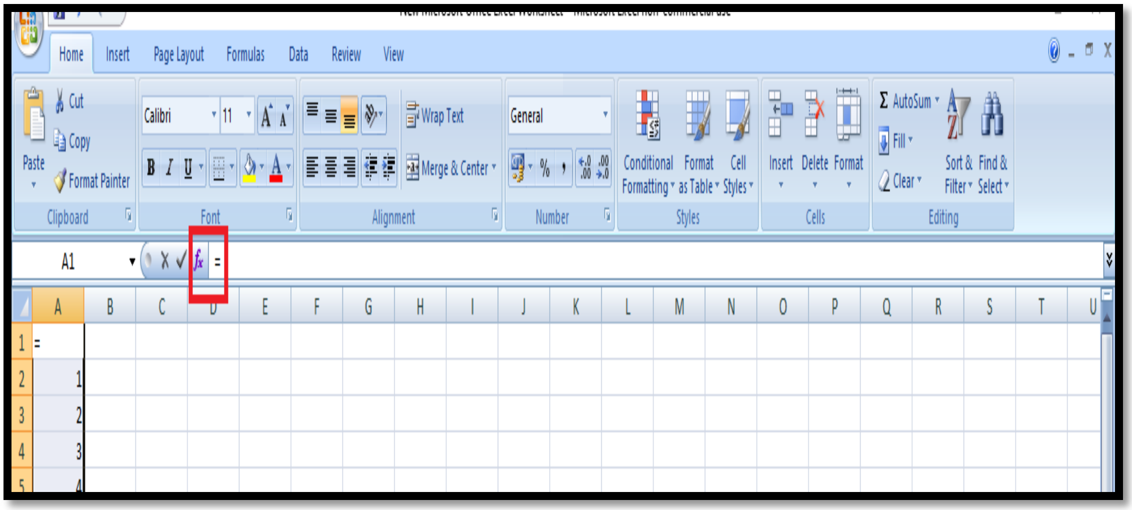

Step 3: NORMDIST को सेलेक्ट करें।

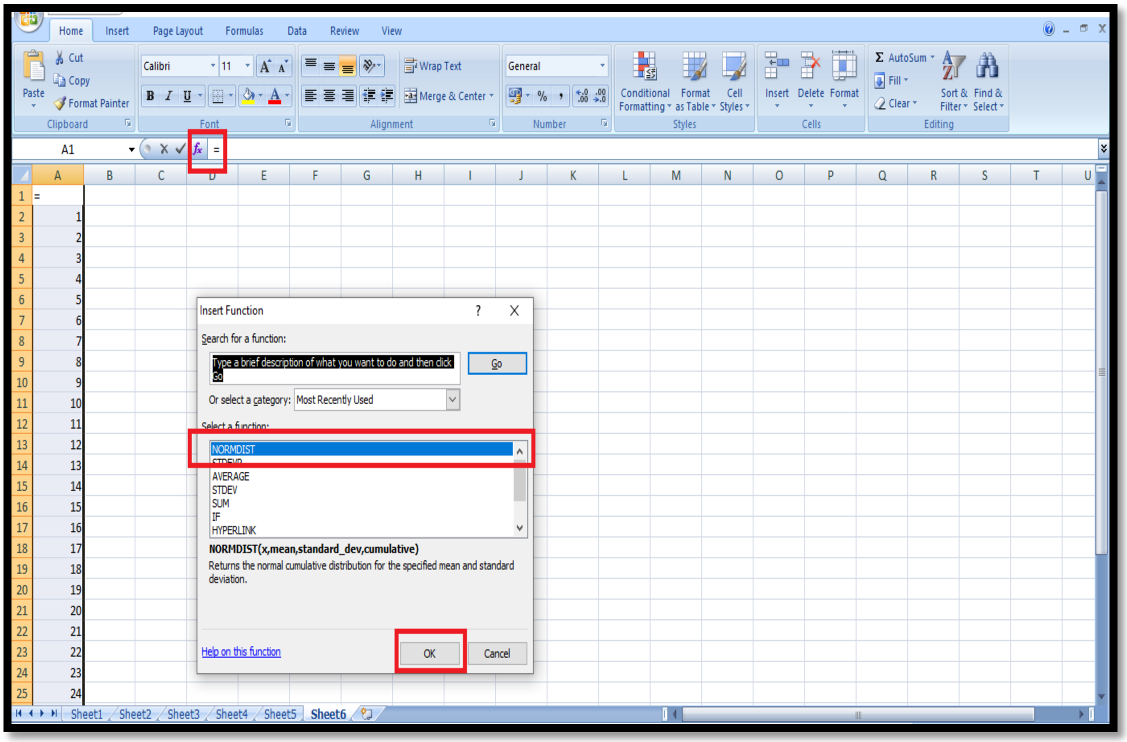

Step 4: Cell range, Mean, Standard deviation तथा Cumulative Frequency को भरें।

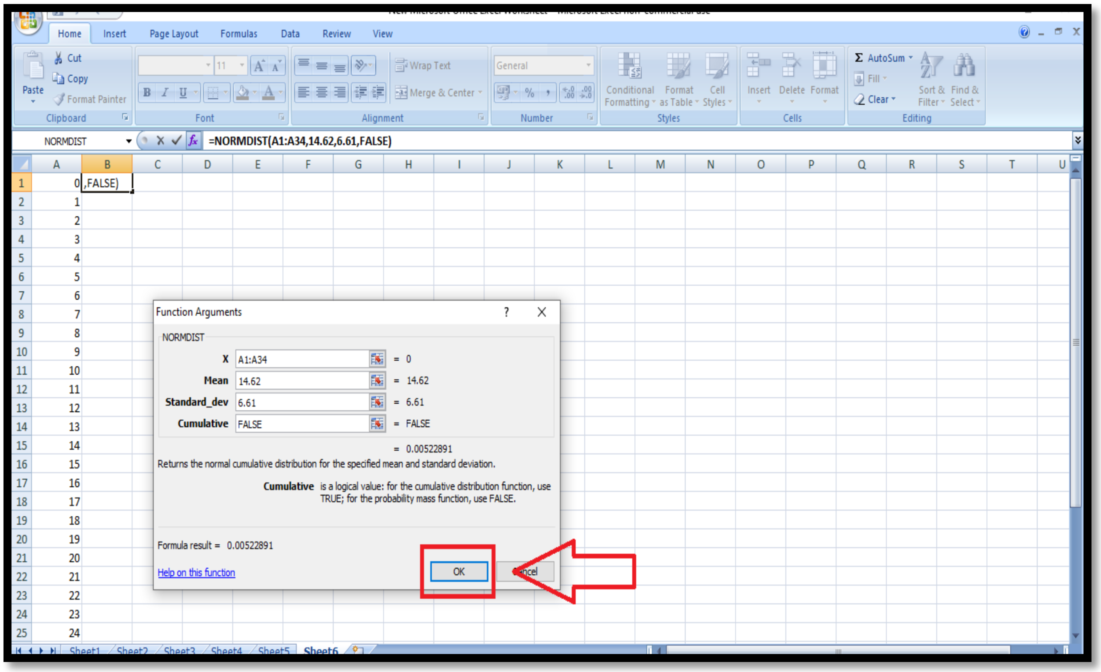

Step 5: चयनित cell तक Drag करें।

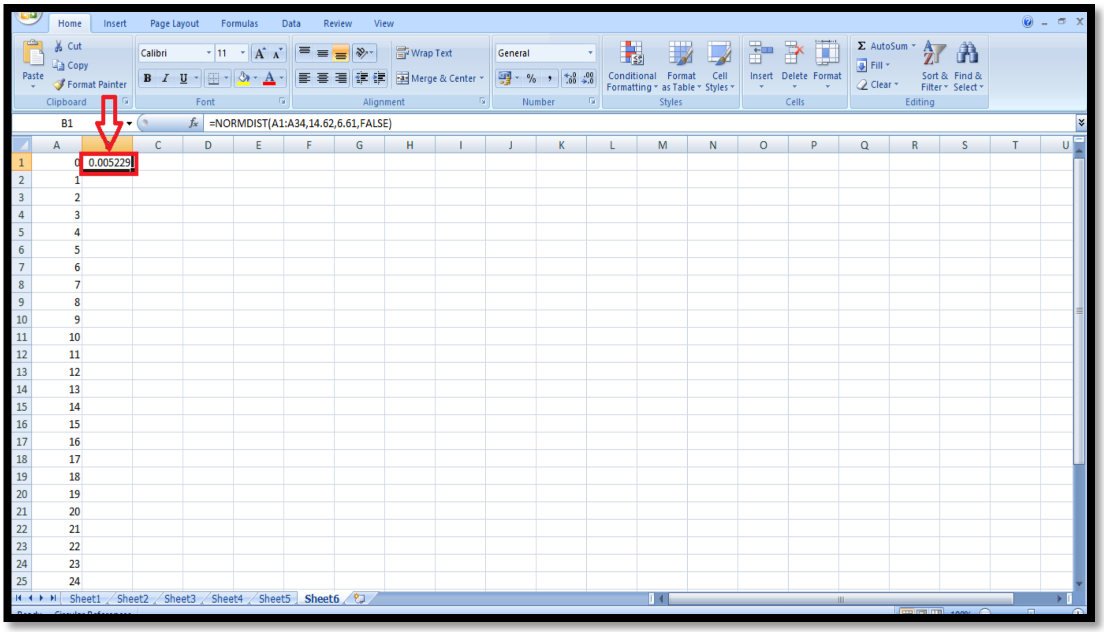

Step 6: Insert option पर जाकर Scatter को select करें।

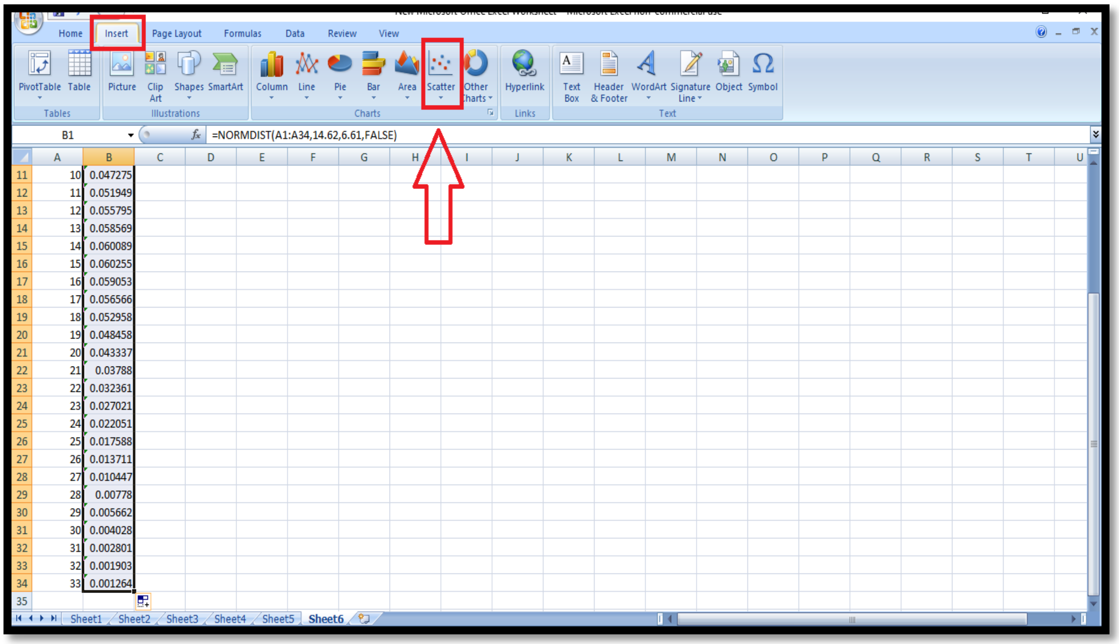

Step 7: Scatter with smooth lines select करें।

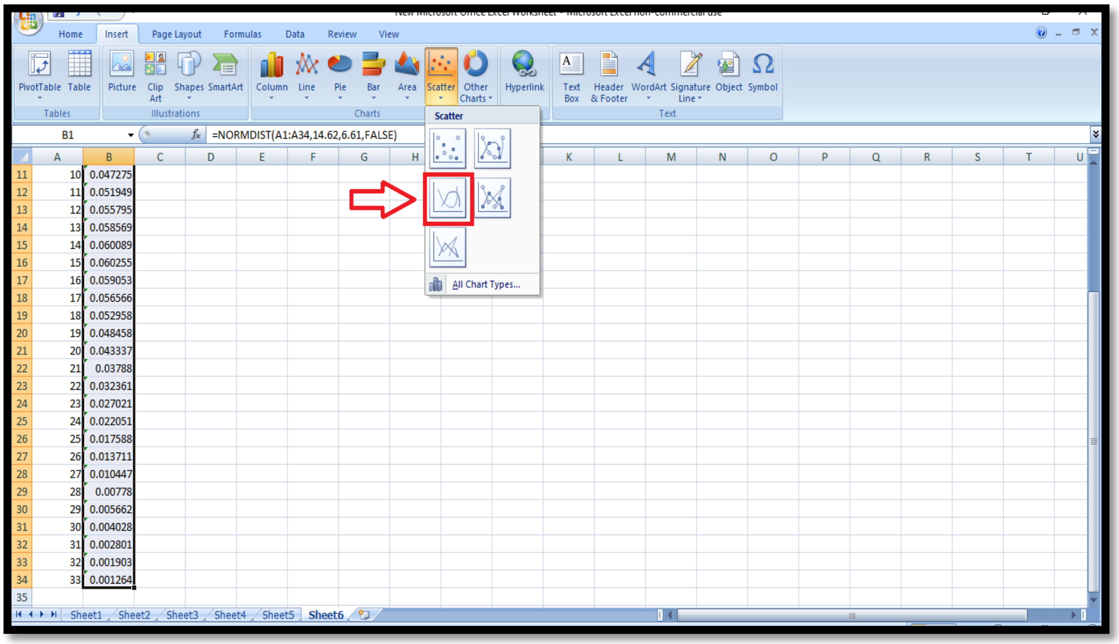

Step 8: अब आपको NPC नजर आएगा।

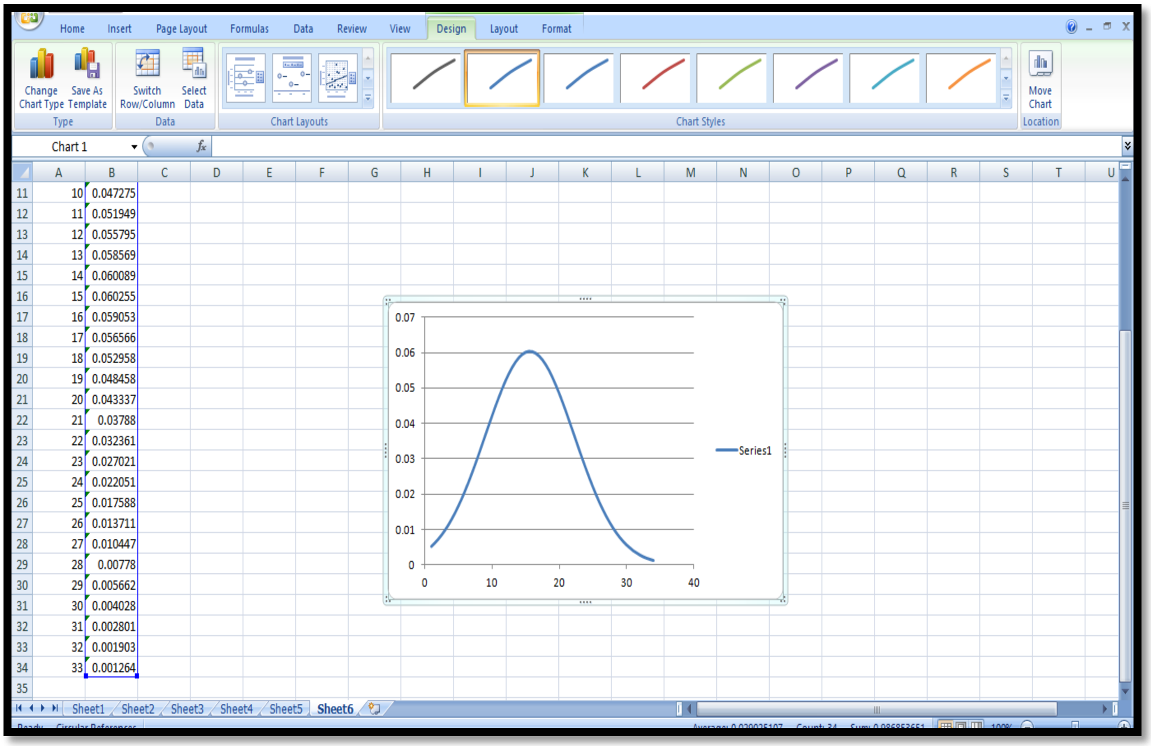

4.12.6 क्रान्तिक अनुपात (Critical Ratio)

दो समूहों के मध्यमानों के मध्य अन्तर की सार्थकता की जाँच करने के लिए क्रान्तिक अनुपात का प्रयोग किया जाता है। इसका प्रयोग तब किया जाता है जब समूह के प्राप्तांकों की संख्या 30 या 30 से अधिक होती है। क्रान्तिक अनुपात की गणना निम्नलिखित सूत्र के द्वारा की जाती है—

$$t = \frac{(X_1 - X_2)}{\sqrt{\dfrac{(S_1)^2}{n_1} + \dfrac{(S_2)^2}{n_2}}}$$

जहाँ–

X_1 = पहले समूह का मध्यमान

X_2 = दूसरे समूह का मध्यमान

n_1 = पहले समूह का आकार

n_2 = दूसरे समूह का आकार

S_1 = पहले समूह का प्रमाप विचलन

S_2 = दूसरे समूह का प्रमाप विचलन

स्वतन्त्रता की कोटि (df) को सूत्र– $df = (N_1+N_2) - 2$ द्वारा ज्ञात किया गया है। क्रान्तिक अनुपात गणना मान की सार्थकता टी- तालिका में .05 सार्थकता स्तर पर तालिका मान से तुलना करके ज्ञात किया जाता है।

क्रान्तिक अनुपात की online गणना के चरण—

Online माध्यम से क्रान्तिक अनुपात की गणना निम्नलिखित चरणों में करते हैं—

Step 1: सर्वप्रथम Google chrome browser को open करते हैं।

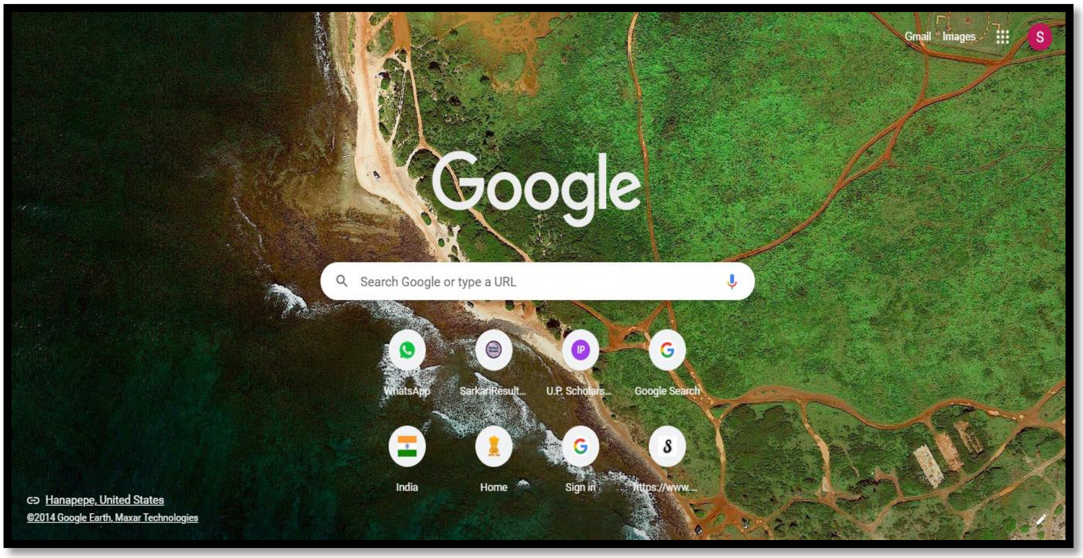

Step 2: Chrome में online t-test calculator search करते हैं।

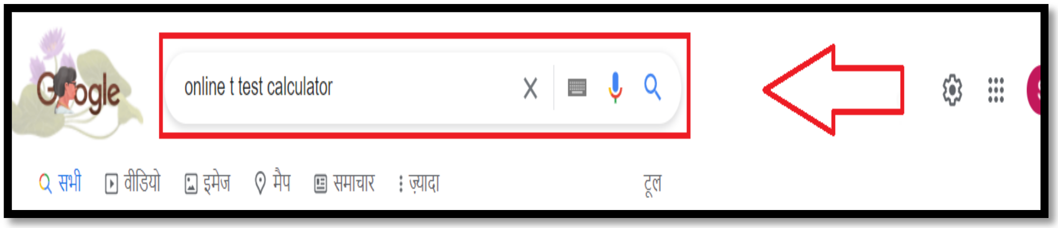

Step 3: विभिन्न search results में से प्रथम calculator (graph pad) को open करते हैं।

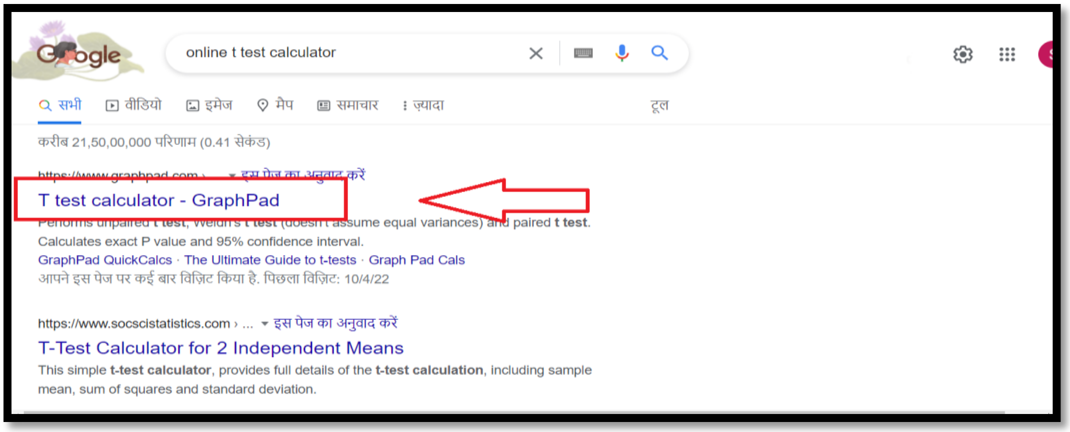

Step 4: Mean, S.D. तथा N Data fill करने वाले option पर क्लिक करते हैं।

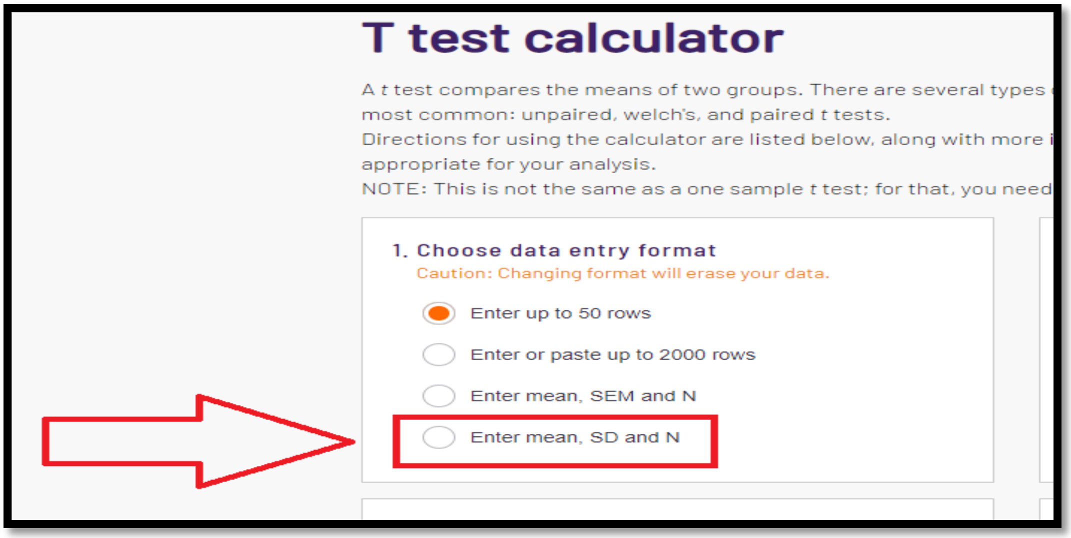

Step 5: Welch's unpaired t-test को चुनते हैं।

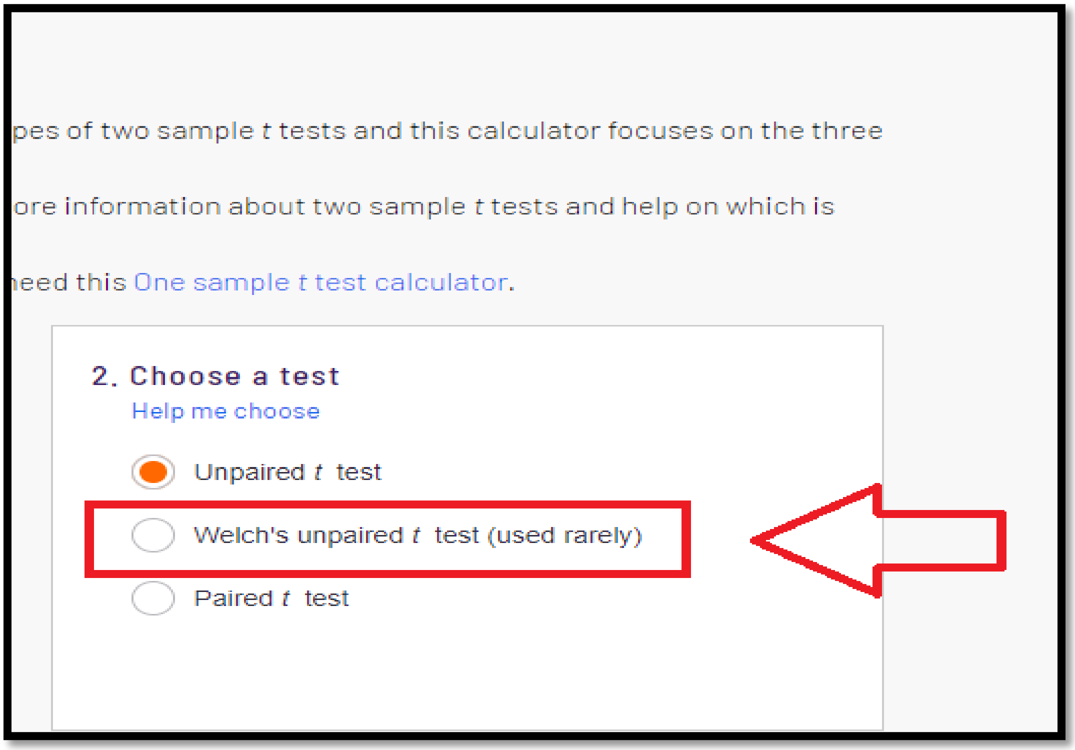

Step 6—आपके सामने data enter करने वाला option आयेगा। यहाँ पर प्रश्न में उपलब्ध data enter करते हैं। Group one में पहले समूह का data तथा Group two में दूसरे समूह का data enter करते हैं।

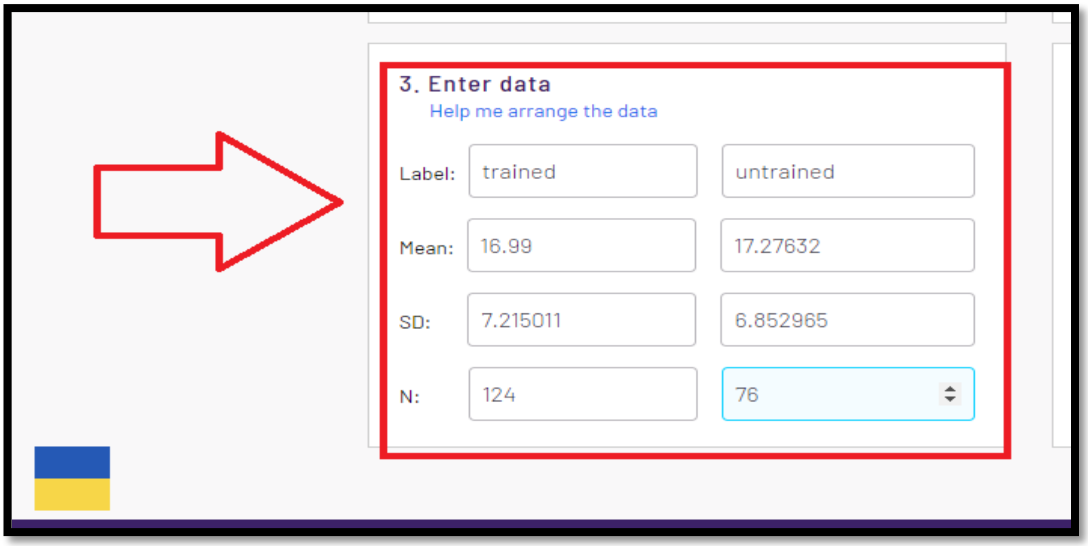

Step 7— परिणाम देखने के लिए calculate now पर क्लिक करते हैं।

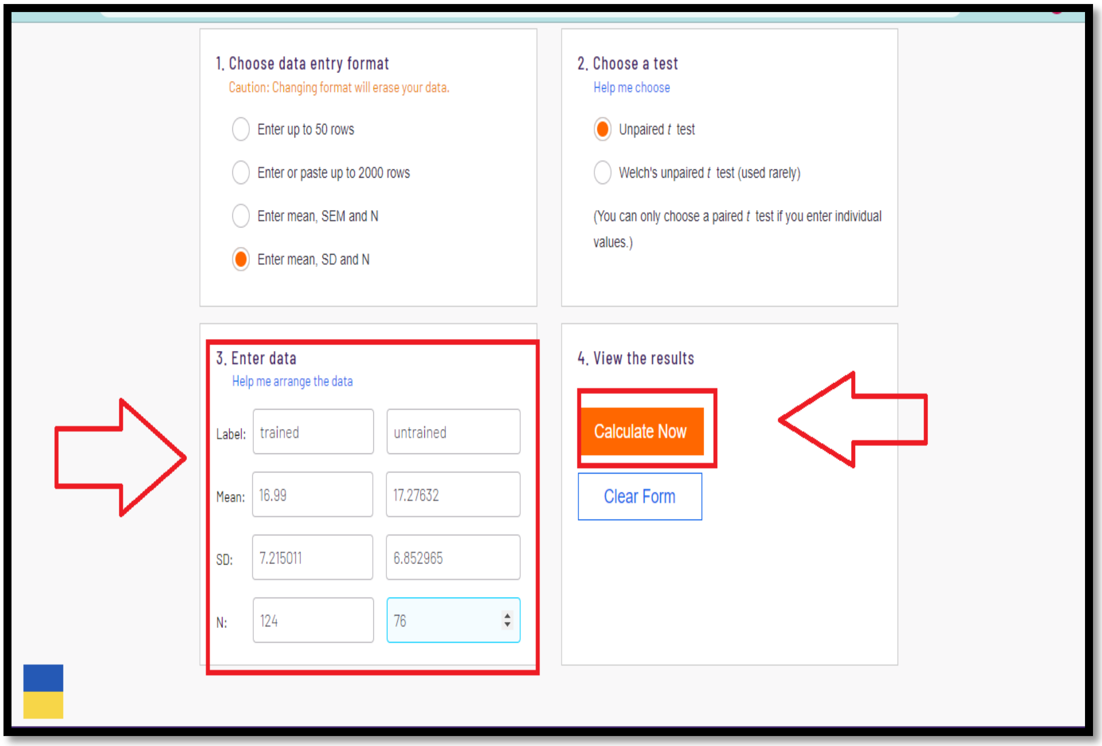

आपका परिणाम निम्न प्रकार दिखायी देगा—

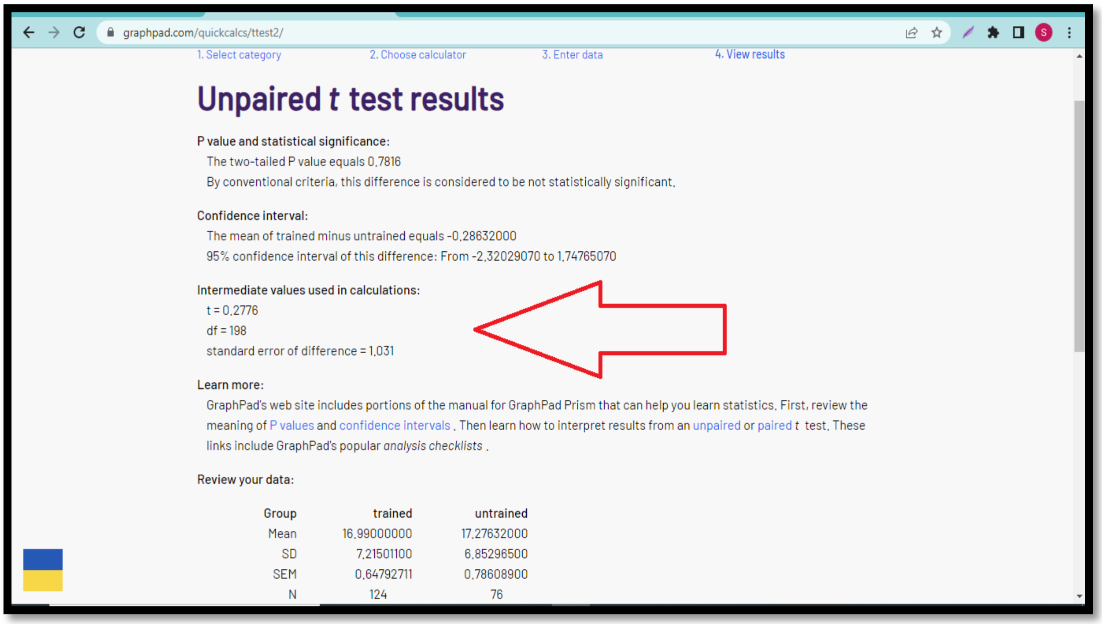

4.12.7 दण्ड आरेख (Bar Graph)

जब प्राप्त आँकड़ों को ग्राफ पेपर पर खड़े स्तम्भों के रूप में प्रदर्शित किया जाता है तो उसे दण्ड आरेख या स्तम्भ आरेख कहते हैं। इसका प्रयोग सामान्यतः स्कूलों में छात्रों और शिक्षकों की संख्या और साक्षर-निरक्षरों की संख्या आदि स्पष्ट करने के लिए किया जाता है। दण्ड आरेख के द्वारा दो या दो से अधिक समूहों की मध्यमान योग्यता को भी स्पष्ट किया जा सकता है। दण्ड आरेख लम्बवत या क्षैतिज किसी भी दिशा में बनाए जा सकते हैं परन्तु सामान्यतः इन्हें लम्बवत ही बनाया जाता है।

अध्याय पञ्चम

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं निर्वचन

प्रस्तुत अध्याय का उद्देश्य वर्णित शोध-विधि द्वारा एकत्रित प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण तथा विवेचन करना है। प्रस्तुत अध्याय में सांख्यिकी गणना से प्राप्त परिणामों का विश्लेषण किया गया है।

5.1 बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति छात्र छात्राओं की जागरूकता का अध्ययन करना

तालिका संख्या 5.1

बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति छात्र-छात्राओं की जागरूकता विश्लेषण तालिका

लिंग	संख्या (N)	मध्यमान (M)	माध्यिका (Md)	प्रमाप विचलन (S.D.)	वैषम्यता (Sk)	कुकुदता (Ku)
छात्र	85	15.94	15	6.74	0.7558	3.0949
छात्राएँ	115	17.96	18	7.21	0.3312	2.3202
कुल विद्यार्थी	200	17.1	16	7.08	0.5038	2.5392

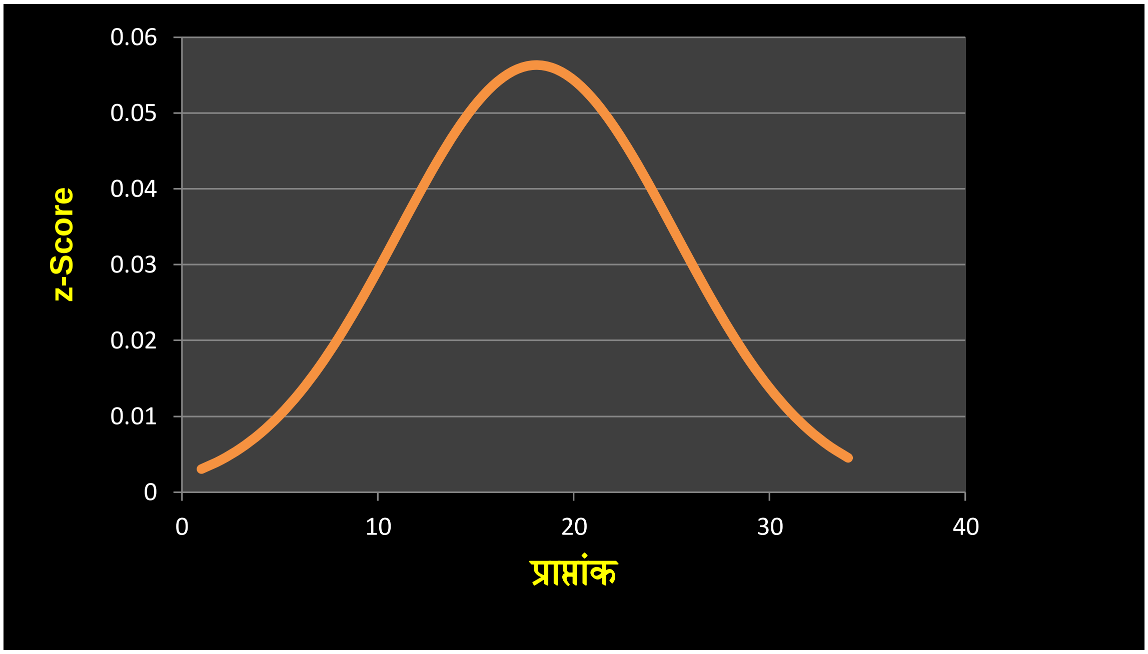

चित्र संख्या 5.1.1

कुल विद्यार्थियों की जागरूकता से सम्बन्धित सामान्य सम्भावना वक्र (NPC)

विश्लेषण—छात्र-छात्राओं की जागरूकता का अध्ययन करने के सम्बन्ध में शोधकर्ता ने जागरूकता प्रश्नावली पर प्राप्त अंको के वितरण की प्रकृति का विश्लेषण किया। तालिका संख्या 5.1 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि कुल विद्यार्थियों के लिए वैषम्यता का मान 0.50 है, जब वैषम्यता का मान -0.5 तथा 0.5 के मध्य होता है तब वितरण सममित/सन्तुलित माना जाता है। प्रस्तुत तालिका के विश्लेषण में कुकुदता 2.54 पाई गयी, जब कुकुदता का स्तर -3 से 3 के मध्य होता है तब वितरण सामान्य माना जाता है।

विवेचना—न्यादर्श में कुल विद्यार्थियों की संख्या पर्याप्त होने के कारण वैषम्यता तथा कुकुदता का स्तर सामान्य है/सामान्य वितरण के अनुरूप है, जो चित्र संख्या 5.1.1 में स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। अतः न्यादर्श से प्राप्त निष्कर्षों को जनसंख्या पर लागू किया जा सकता है। प्रदत्त सामान्य सम्भावना वक्र के अनुसार वितरित हैं।

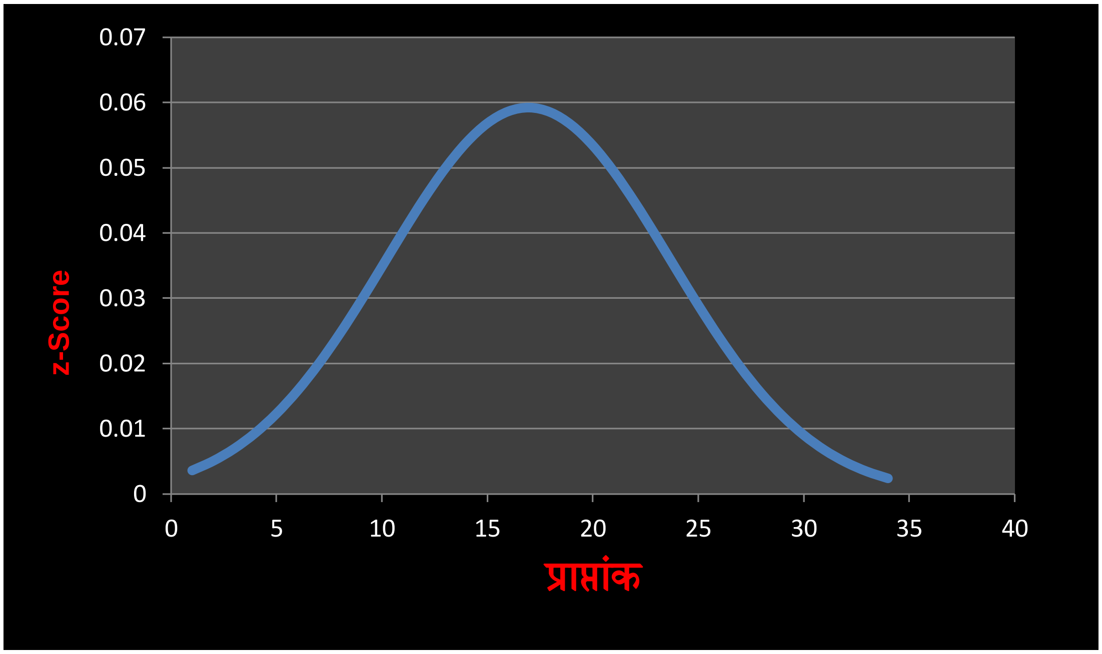

चित्र संख्या 5.1.2

छात्रों की जागरूकता से सम्बन्धित सामान्य सम्भावना वक्र (NPC)

विश्लेषण—तालिका संख्या 5.1 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि छात्रों का मध्यमान 15.94 तथा प्रमाप विचलन 6.74 है। छात्रों के लिए वैषम्यता का मान 0.7558 है, जब वैषम्यता का मान 0.5 से 1 के मध्य होता है तब वितरण मध्यम रूप से वैषम्य माना जाता है। प्रस्तुत तालिका के विश्लेषण में कुकुदता 3.0949 पाई गयी, जब कुकुदता का स्तर -3 से 3 के मध्य होता है तब वितरण सामान्य माना जाता है।

विवेचना—न्यादर्श में छात्रों की संख्या पर्याप्त न होने के कारण वैषम्यता तथा कुकुदता का स्तर सामान्य है/सामान्य वितरण के अनुरूप नहीं है, उनकी वैषम्यता तथा कुकुदता का स्तर सामान्य से थोड़ा सा अधिक है। इस कारण से सामान्य सम्भावना वक्र में थोड़ा सा झुकाव है, जो चित्र संख्या 5.1.2 में स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। परन्तु यह अन्तर बहुत ही मामूली-सा है, अतः न्यादर्श से प्राप्त निष्कर्षों को जनसंख्या पर लागू किया जा सकता है।

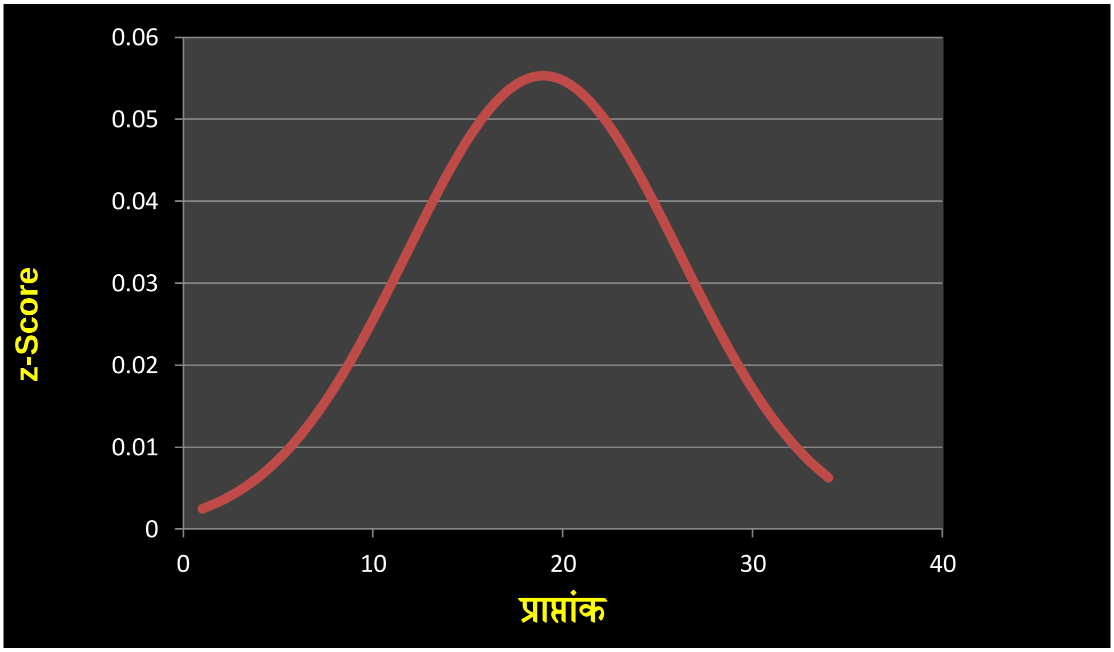

चित्र संख्या 5.1.3

छात्राओं की जागरूकता से सम्बन्धित सामान्य सम्भावना वक्र (NPC)

विश्लेषण—तालिका संख्या 5.1 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि छात्राओं का मध्यमान 17.96 तथा प्रमाप विचलन 7.21 है। छात्राओं के लिए वैषम्यता का मान 0.33 है, जब वैषम्यता का मान -0.5 तथा 0.5 के मध्य होता है तब वितरण सममित/सन्तुलित माना जाता है। प्रस्तुत तालिका के विश्लेषण में कुकुदता 2.32 पाई गयी, जब कुकुदता का स्तर -3 से 3 के मध्य होता है तब वितरण सामान्य माना जाता है।

विवेचना—न्यादर्श में छात्राओं की संख्या पर्याप्त होने के कारण वैषम्यता तथा कुकुदता का स्तर सामान्य है/सामान्य वितरण के अनुरूप है, जो चित्र संख्या 5.1.3 में स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। अतः न्यादर्श से प्राप्त निष्कर्षों को जनसंख्या पर लागू किया जा सकता है। प्रदत्त सामान्य सम्भावना वक्र के अनुसार वितरित हैं।

5.2 बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति प्रशिक्षित और अप्रशिक्षित विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन

तालिका संख्या 5.2

बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति प्रशिक्षित और अप्रशिक्षित विद्यार्थियों की जागरूकता विश्लेषण तालिका

प्रशिक्षण स्तर	संख्या (N)	मध्यमान (M)	माध्यिका (Md)	प्रमाप विचलन (S.D.)	वैषम्यता (Sk)	कुकुदता (Ku)
प्रशिक्षित विद्यार्थी	124	16.99	16	7.22	0.6981	2.5735
अप्रशिक्षित विद्यार्थी	76	17.28	18	6.85	0.1416	2.5204
कुल विद्यार्थी	200	17.1	16	7.08	0.5038	2.5392

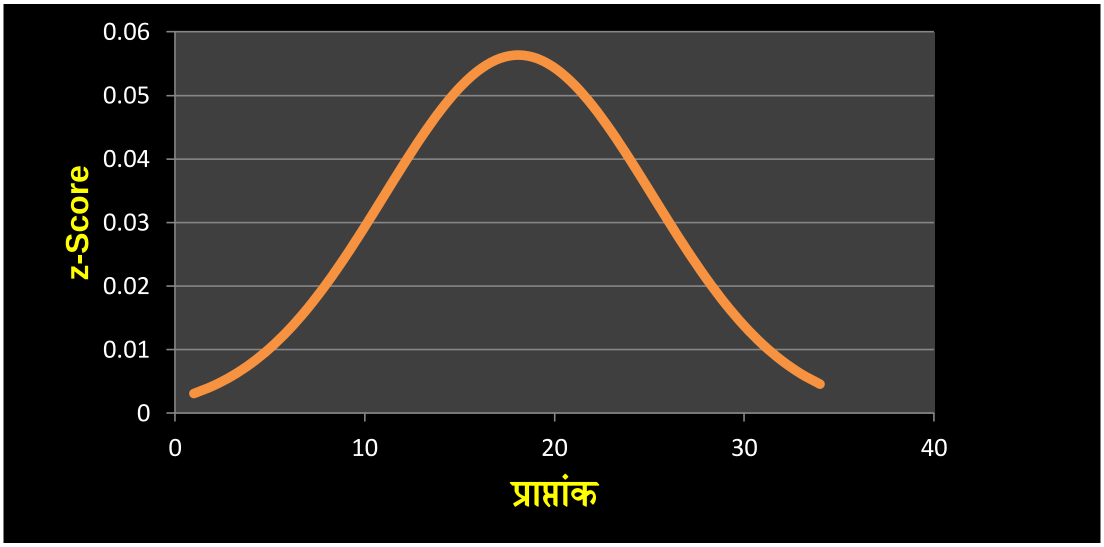

चित्र संख्या 5.2.1

कुल विद्यार्थियों की जागरूकता से सम्बन्धित सामान्य सम्भावना वक्र (NPC)

विश्लेषण—प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन करने के सम्बन्ध में शोधकर्ता ने जागरूकता प्रश्नावली पर प्राप्त अंको के वितरण की प्रकृति का विश्लेषण किया। तालिका संख्या 5.2 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि कुल विद्यार्थियों के लिए वैषम्यता का मान 0.50 है, जब वैषम्यता का मान -0.5 तथा 0.5 के मध्य होता है तब वितरण सममित/सन्तुलित माना जाता है। प्रस्तुत तालिका के विश्लेषण में कुकुदता 2.54 पाई गयी, जब कुकुदता का स्तर -3 से 3 के मध्य होता है तब वितरण सामान्य माना जाता है।

विवेचना—न्यादर्श में कुल विद्यार्थियों की संख्या पर्याप्त होने के कारण वैषम्यता तथा कुकुदता का स्तर सामान्य है/सामान्य वितरण के अनुरूप है, जो चित्र संख्या 5.2.1 में स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। अतः न्यादर्श से प्राप्त निष्कर्षों को जनसंख्या पर लागू किया जा सकता है। प्रदत्त सामान्य सम्भावना वक्र के अनुसार वितरित हैं।

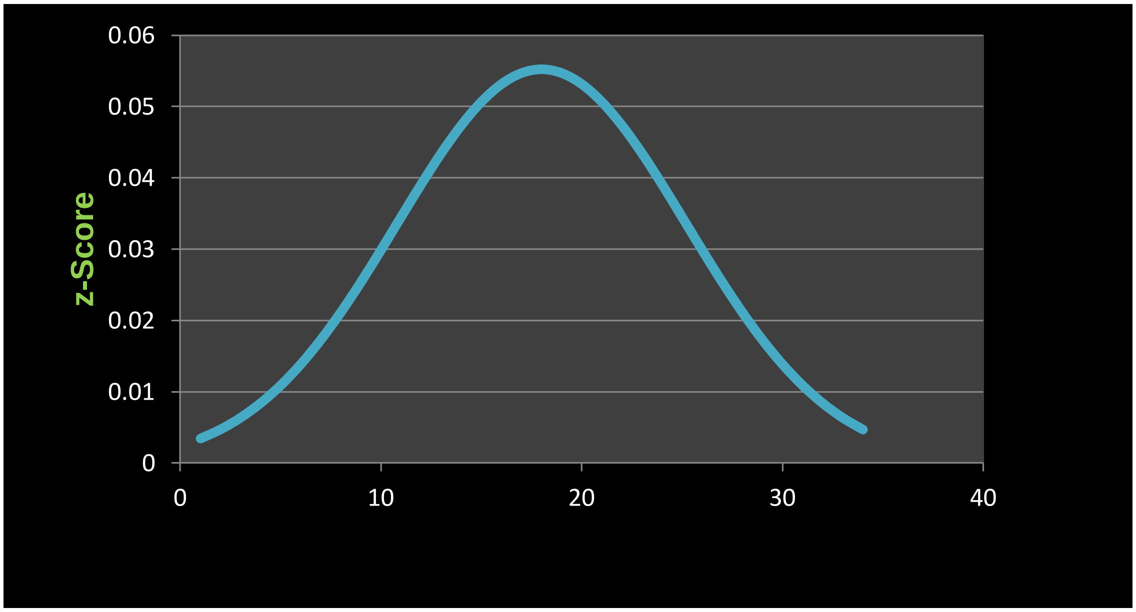

चित्र संख्या 5.2.2

प्रशिक्षित विद्यार्थियों की जागरूकता से सम्बन्धित सामान्य सम्भावना वक्र (NPC)

विश्लेषण—तालिका संख्या 5.1 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि प्रशिक्षित विद्यार्थियों का मध्यमान 16.99 तथा प्रमाप विचलन 7.22 है। प्रशिक्षित विद्यार्थियों के लिए वैषम्यता 0.6981 है, जब वैषम्यता का मान 0.5 से 1 के मध्य होता है तब वितरण मध्यम रूप से वैषम्य माना जाता है। प्रस्तुत तालिका के विश्लेषण में कुकुदता 2.57 पाई गयी, जब कुकुदता का स्तर -3 से 3 के मध्य होता है तब वितरण सामान्य माना जाता है।

विवेचना—न्यादर्श में प्रशिक्षित विद्यार्थियों का चयन असम्भाव्य विधि से होने के कारण वैषम्यता तथा कुकुदता का स्तर सामान्य है/सामान्य वितरण के अनुरूप नहीं है, उनकी वैषम्यता तथा कुकुदता का स्तर सामान्य से थोड़ा सा अधिक है। इस कारण से सामान्य सम्भावना वक्र में थोड़ा सा झुकाव है, जो चित्र संख्या 5.2.2 में स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। परन्तु यह अन्तर बहुत ही मामूली-सा है, अतः न्यादर्श से प्राप्त निष्कर्षों को जनसंख्या पर लागू किया जा सकता है।

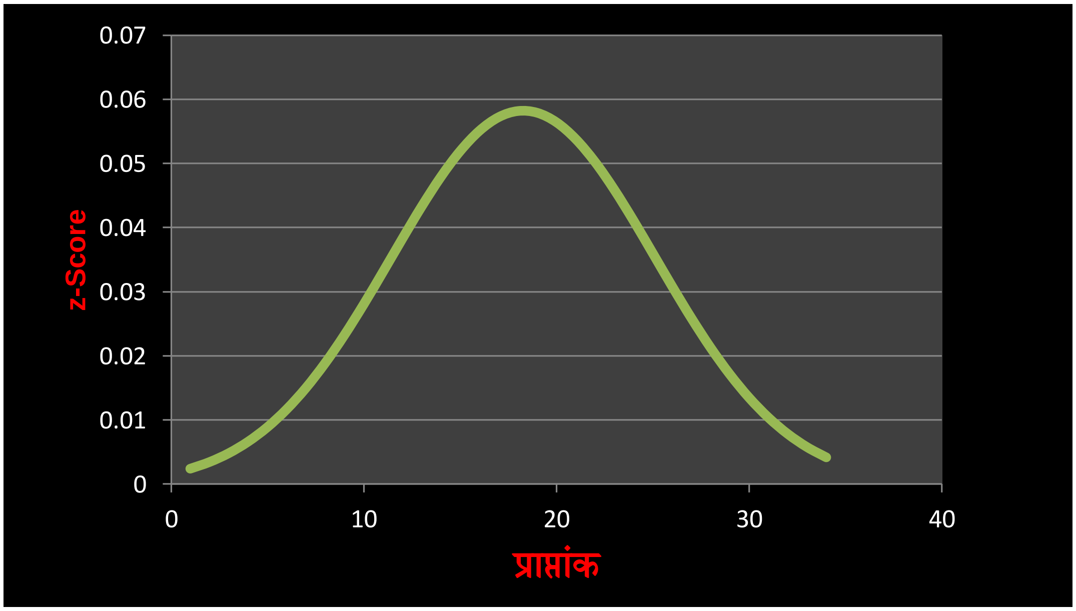

चित्र संख्या5.2.3

अप्रशिक्षित विद्यार्थियों की जागरूकता से सम्बन्धित सामान्य सम्भावना वक्र (NPC)

विश्लेषण—तालिका संख्या 5.2 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि अप्रशिक्षित विद्यार्थियों का मध्यमान 17.28 तथा प्रमाप विचलन 6.85 है। अप्रशिक्षित विद्यार्थियों के लिए वैषम्यता का मान 0.14 है, जब वैषम्यता का मान -0.5 तथा 0.5 के मध्य होता है तब वितरण सममित/सन्तुलित माना जाता है। प्रस्तुत तालिका के विश्लेषण में कुकुदता 2.52 पाई गयी, जब कुकुदता का स्तर -3 से 3 के मध्य होता है तब वितरण सामान्य माना जाता है।

विवेचना—न्यादर्श में अप्रशिक्षित विद्यार्थियों का चयन असम्भाव्य विधि से होने के कारण वैषम्यता तथा कुकुदता का स्तर सामान्य है/सामान्य वितरण के अनुरूप है, जो चित्र संख्या 5.2.3 में स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। अतः न्यादर्श से प्राप्त निष्कर्षों को जनसंख्या पर लागू किया जा सकता है। प्रदत्त सामान्य सम्भावना वक्र के अनुसार वितरित हैं।

5.3 बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता का विरासतानुसार विश्लेषण

5.3.1 राम निवास मन्दिर के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता का प्रश्नवार विश्लेषण

तालिका संख्या 5.3.1.1

राम निवास मन्दिर के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता की प्रश्नवार विश्लेषण तालिका

	N	प्रश्न संख्या 2		प्रश्न संख्या 9		प्रश्न संख्या 20		प्रश्न संख्या 29		प्रश्न संख्या 31	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	85	46	54.12%	22	25.88%	27	31.76%	67	78.82%	39	45.88%
छात्राएँ	115	54	46.96%	38	33.04%	46	40%	100	86.96%	49	42.61%
कुल विद्यार्थी	200	100	50%	60	30%	73	36.5%	167	83.5%	88	44 %

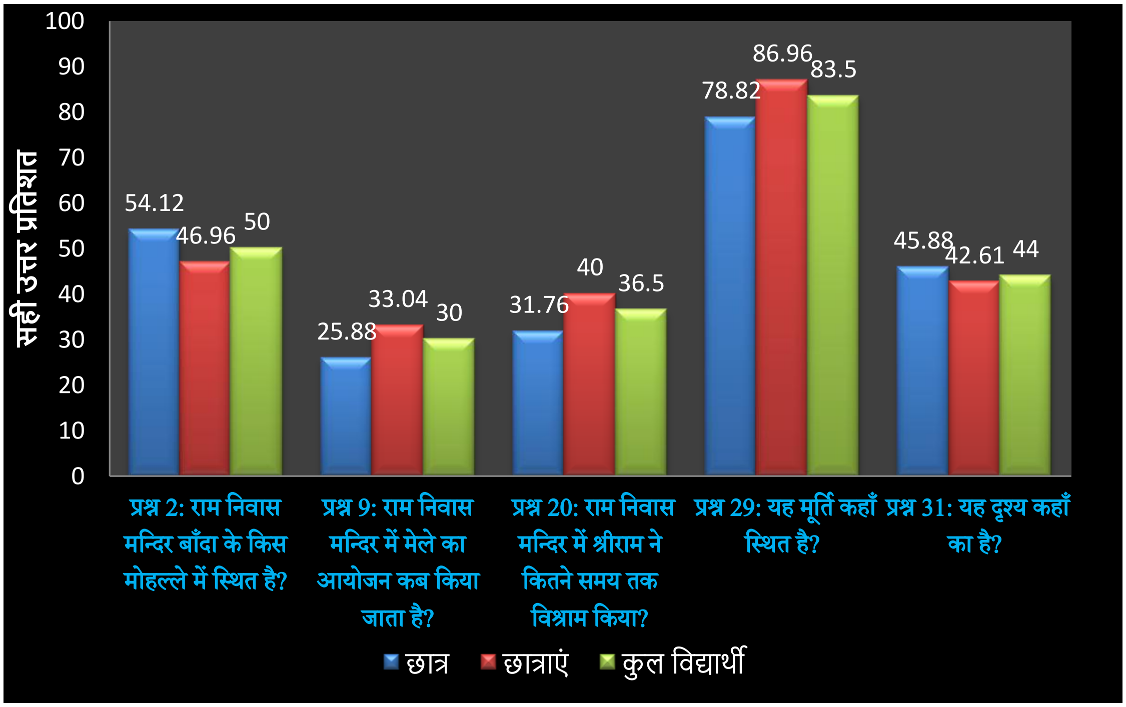

चित्र संख्या 5.3.1.1

राम निवास मन्दिर के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता का प्रश्नवार विश्लेषण रेखा-चित्र

तालिका संख्या 5.3.1.2

राम निवास मन्दिर के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की समग्र जागरूकता विश्लेषण तालिका

लिंग	N	सही उत्तर	
		M	प्रतिशत
छात्र	85	40.2	47.29%
छात्राएँ	115	57.4	49.91%
कुल विद्यार्थी	200	48.8	48.8%

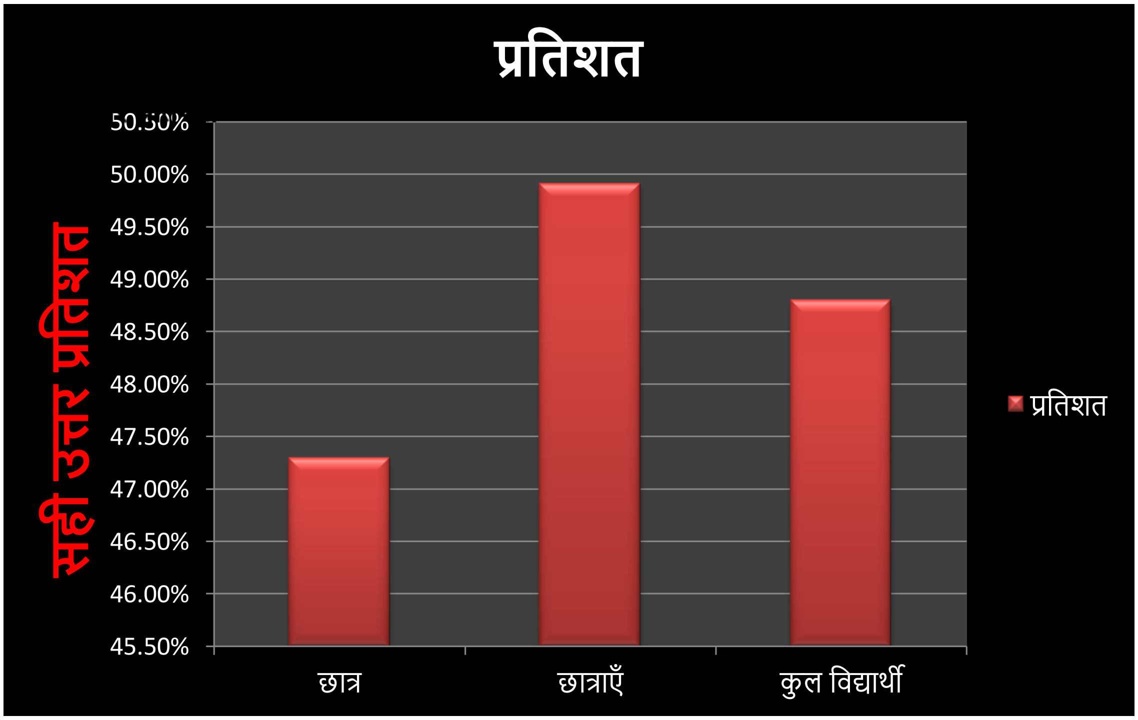

चित्र संख्या 5.3.1.2

राम निवास मन्दिर के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों का समग्र जागरूकता विश्लेषण रेखा-चित्र

विश्लेषण—तालिका संख्या 5.3.1.1 एवं चित्र संख्या 5.3.1.1 के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है राम निवास मन्दिर के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता से सम्बन्धित **द्वितीय प्रश्न** "राम निवास मन्दिर बाँदा के किस मोहल्ले में स्थित है?" के **प्रति** 54.12% छात्र, 46.96% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से **50% विद्यार्थी जागरूक हैं।** प्रश्न संख्या 9 " राम निवास मन्दिर में मेले का आयोजन कब किया जाता है?" के प्रति 25.88% छात्र, 33.04% छात्राएँ तथा कुल 30% विद्यार्थी जागरूक हैं। प्रश्न संख्या 20 "राम निवास मन्दिर में श्री राम ने कितने समय तक विश्राम किया?" के प्रति 31.76% छात्र, 40% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से कुल 36.5% विद्यार्थी ही जागरूक हैं। प्रश्न संख्या 29 "यह मूर्ति कहाँ स्थित है?" के प्रति 78.82% छात्र, 86.96% छात्राएँ तथा 83.5% कुल विद्यार्थी जागरूक हैं। प्रश्न संख्या 31 " यह दृश्य कहाँ का है?" के प्रति 45.88% छात्र, 42.61% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से कुल 44% विद्यार्थी जागरूक हैं।

तालिका संख्या 5.3.1.2 एवं चित्र संख्या 5.3.1.2 के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि **राम निवास मन्दिर** के प्रति औसत रूप में 47.29% छात्र, 49.91% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से **48.8% विद्यार्थी जागरूक** हैं।

विवेचना—तालिका संख्या 5.3.1.1 एवं चित्र संख्या 5.3.1.1 के अध्ययन से ज्ञात होता है कि **राम निवास मन्दिर स्थित मूर्ति को अधिकांश विद्यार्थी पहचानते हैं, यह अच्छी बात है किन्तु बाहरी परिदृश्य को आधे से भी कम विद्यार्थी पहचानते हैं।** यह अत्यन्त ही आश्चर्य का विषय है कि मन्दिर के अन्दर स्थित मूर्ति को तो लगभग तीन तिहाई विद्यार्थी पहचानते हैं जबकि बाहरी प्राङ्गण से आधे से भी कम विद्यार्थी परिचित हैं। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि विद्यार्थियों द्वारा प्रश्न में दर्शाए गये चित्र में राम दरबार की मूर्ति को देखकर अनुमान स्वरूप 'राम निवास मन्दिर' विकल्प का चयन किया गया है। इसी तरह राम निवास मन्दिर की स्थिति के विषय में मात्र आधे विद्यार्थी ही जानकारी रखते हैं तथा मात्र एक तिहाई विद्यार्थियों को यह जानकारी है कि राम निवास मन्दिर में श्रीराम ने कितने समय तक विश्राम किया एवं यहाँ पर मेले का आयोजन कब किया जाता है। यह इस बात को इन्गित करता है कि विद्यार्थियों में अपनी क्षेत्रीय विरासत राम निवास मन्दिर के प्रति सजगता का अभाव है।

तालिका संख्या 5.3.1.2 एवं चित्र संख्या 5.3.1.2 के अध्ययन से ज्ञात होता है कि **आधे से भी कम विद्यार्थी राम निवास मन्दिर के प्रति जागरूक हैं। इसका कारण आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में मात्र नौकरी पर जोर देने वाले पाठ्यक्रम को सम्मिलित किया गया है** एवं ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक विरासतों के महत्व को कोई स्थान नहीं दिया गया है।

5.3.2 नवाब टैंक के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता का प्रश्नवार विश्लेषण

तालिका संख्या 5.3.2.1
नवाब टैंक के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता की प्रश्नवार विश्लेषण तालिका

	N	प्रश्न संख्या 6		प्रश्न संख्या 7		प्रश्न संख्या 10		प्रश्न संख्या 15		प्रश्न संख्या 22		प्रश्न संख्या 26	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	85	34	40%	32	37.65 %	41	48.24 %	44	51.76 %	52	61.18 %	58	68.23 %
छात्राएँ	115	31	26.96 %	53	46.09 %	88	76.52 %	67	58.26 %	73	63.47 %	95	85.81 %
कुल विद्यार्थी	200	65	32.5%	85	42.5%	129	64.5%	111	55.7%	125	62.5%	153	76.5%

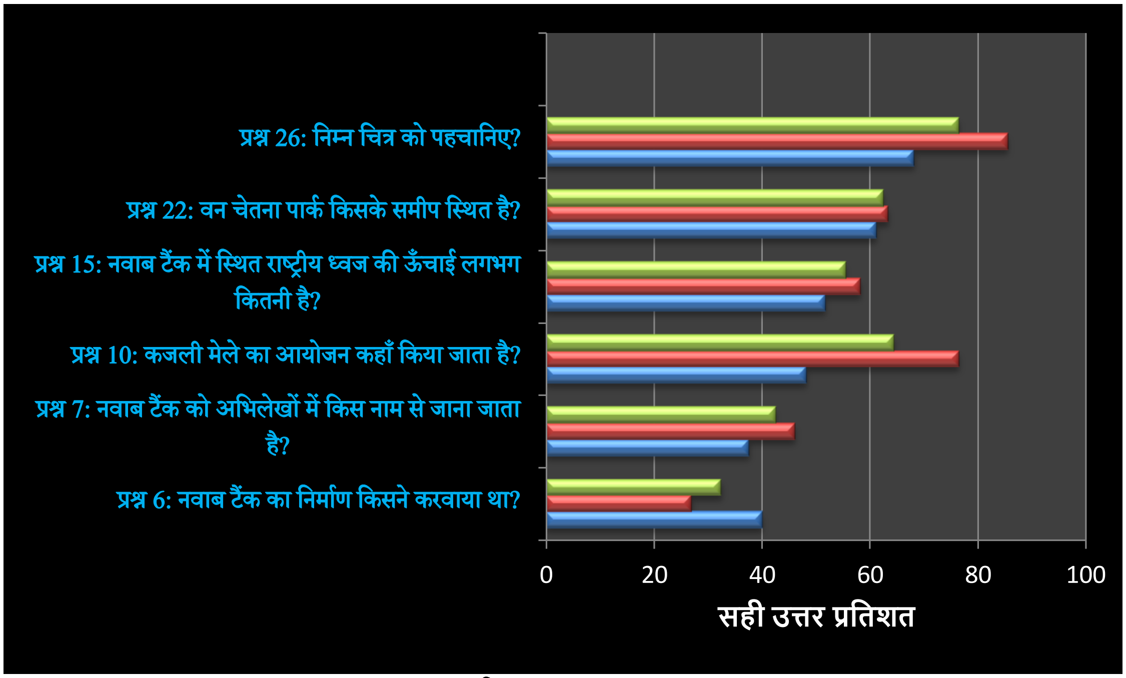

चित्र संख्या 5.3.2.1

नवाब टैंक के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता का प्रश्नवार विश्लेषण रेखा-चित्र

तालिका संख्या 5.3.2.2

नवाब टैंक के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की समग्र जागरूकता विश्लेषण तालिका

लिंग	N	सही उत्तर	
		M	प्रतिशत
छात्र	85	43.5	51.18%
छात्राएँ	115	67.83	58.99%
कुल विद्यार्थी	200	55.87	55.87%

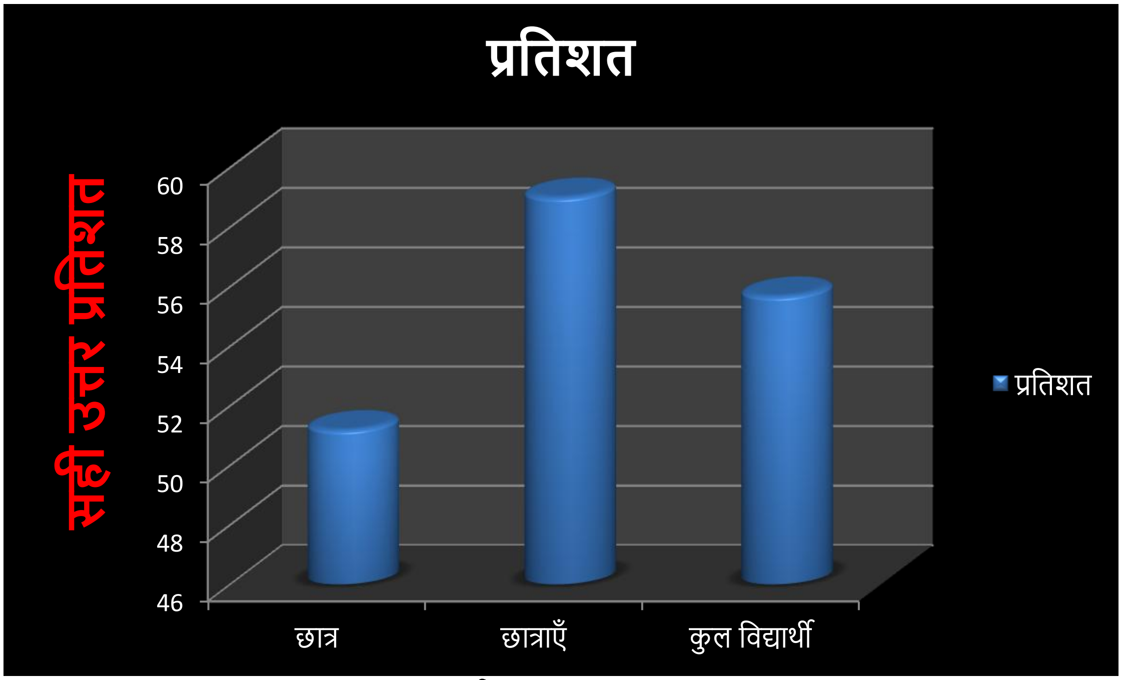

चित्र संख्या 5.3.2.2
नवाब टैंक के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों का समग्र जागरूकता विश्लेषण रेखा-चित्र

विश्लेषण—तालिका संख्या 5.3.2.1 एवं चित्र संख्या 5.3.2.1 के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि प्रश्न संख्या 6 "नवाब टैंक का निर्माण किसने करवाया था?" के प्रति 40% छात्र, 26.56% तथा सामूहिक रूप से 32.5% विद्यार्थी जागरूक हैं। प्रश्न संख्या 7 "नवाब टैंक को अभिलेखों में किस नाम से जाना जाता है?" के प्रति 37.65% छात्र, 46.05% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 42.5% विद्यार्थी जागरूक हैं। प्रश्न संख्या 10 "कजली मेले का आयोजन कहाँ किया जाता है?" के प्रति 48% छात्र, 76.52% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 64.5% विद्यार्थी जागरूक हैं। **प्रश्न संख्या 15** "नवाब टैंक में स्थित राष्ट्रीय ध्वज की ऊँचाई लगभग कितनी है?" के प्रति 51.76% छात्र, 58.26% छात्राएँ तथा **सामूहिक रूप से 55.7% विद्यार्थी जागरूक** हैं। प्रश्न संख्या 22 "वन चेतना पार्क किसके समीप स्थित है?" के प्रति 61.18 छात्र, 63.47 छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 62.5% विद्यार्थी जागरूक हैं। प्रश्न संख्या 26 "निम्न चित्र को पहचानिए?" के प्रति 68.23% छात्र, 82.6% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 76.5% विद्यार्थी जागरूक हैं।

तालिका संख्या 5.3.2.2 एवं चित्र संख्या 5.3.2.2 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि **नवाब टैंक** के प्रति औसत रूप से 51.18% छात्र 58.99% छात्राएँ तथा **55.87% कुल विद्यार्थी जागरूक** हैं।

विवेचना—तालिका संख्या 5.3.2.1 एवं चित्र संख्या 5.3.2.1 के अनुसार लगभग तीन चौथाई से अधिक विद्यार्थी नवाब टैंक को पहचानते हैं जबकि मात्र एक तिहाई विद्यार्थी यह जानते हैं कि नवाब टैंक का निर्माण किसने करवाया एवं नवाब टैंक को अभिलेखों में किस नाम से जाना जाता है। यह बात चिन्ताजनक है क्योंकि विद्यार्थियों को अपनी क्षेत्रीय विरासत के इतिहास के विषय में कोई जानकारी नहीं है। इसका कारण आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में क्षेत्रीय विरासतों के प्रति नीरसता हो सकता है। लगभग दो तिहाई विद्यार्थियों को नवाब टैंक के समीप स्थित वन चेतना पार्क एवं यहाँ लगने वाले कजली मेले के विषय में जानकारी है, यह स्थिति सन्तोषजनक है। **नवाब टैंक में स्थित राष्ट्रीय ध्वज की ऊँचाई के सम्बन्ध में मात्र आधे विद्यार्थियों को ही जानकारी है, यह अत्यन्त गम्भीर स्थिति है। इसका कारण विद्यार्थियों में तथ्यों के संकलन के प्रति रुझान न होना हो सकता है। राष्ट्रीय ध्वज हमारे राष्ट्र का गौरव है और इससे सम्बन्धित सूचनाओं का ज्ञान होना आवश्यक है।**

तालिका संख्या 5.3.2.2 एवं चित्र संख्या 5.3.2.2 के अध्ययन से पता चलता है कि औसत रूप से **आधे विद्यार्थी नवाब टैंक के प्रति जागरूक हैं जिसमें छात्राओं की संख्या अधिक है। इसका कारण छात्राओं द्वारा धार्मिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभाना एवं स्थानीय स्थलों में भ्रमण की प्रवृत्ति का पाया जाना हो सकता है।**

5.3.3 पहाड़ी बाबा आश्रम के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता का प्रश्नवार विश्लेषण

तालिका संख्या 5.3.3.1

पहाड़ी बाबा आश्रम के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता की प्रश्नवार विश्लेषण तालिका

	N	प्रश्न संख्या 1		प्रश्न संख्या 4		प्रश्न संख्या 8		प्रश्न संख्या 12		प्रश्न संख्या 19		प्रश्न संख्या 23		प्रश्न संख्या 27		प्रश्न संख्या 28		प्रश्न संख्या 30		प्रश्न संख्या 32		प्रश्न संख्या 33	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	85	43	51%	43	51%	18	21%	25	29%	24	28%	33	39%	45	53%	39	46%	28	33%	52	61%	50	59%
छात्राएँ	115	73	64.4%	68	59.1%	35	30.4%	62	53.9%	46	40%	42	36.5%	58	50.4%	59	51.3%	64	55.8%	70	60.8%	74	64.3%
कुल विद्यार्थी	200	116	58%	111	55.7%	53	26.5%	87	43.5%	70	35%	75	37.5%	103	51.5%	98	49%	92	46%	122	61%	124	62%

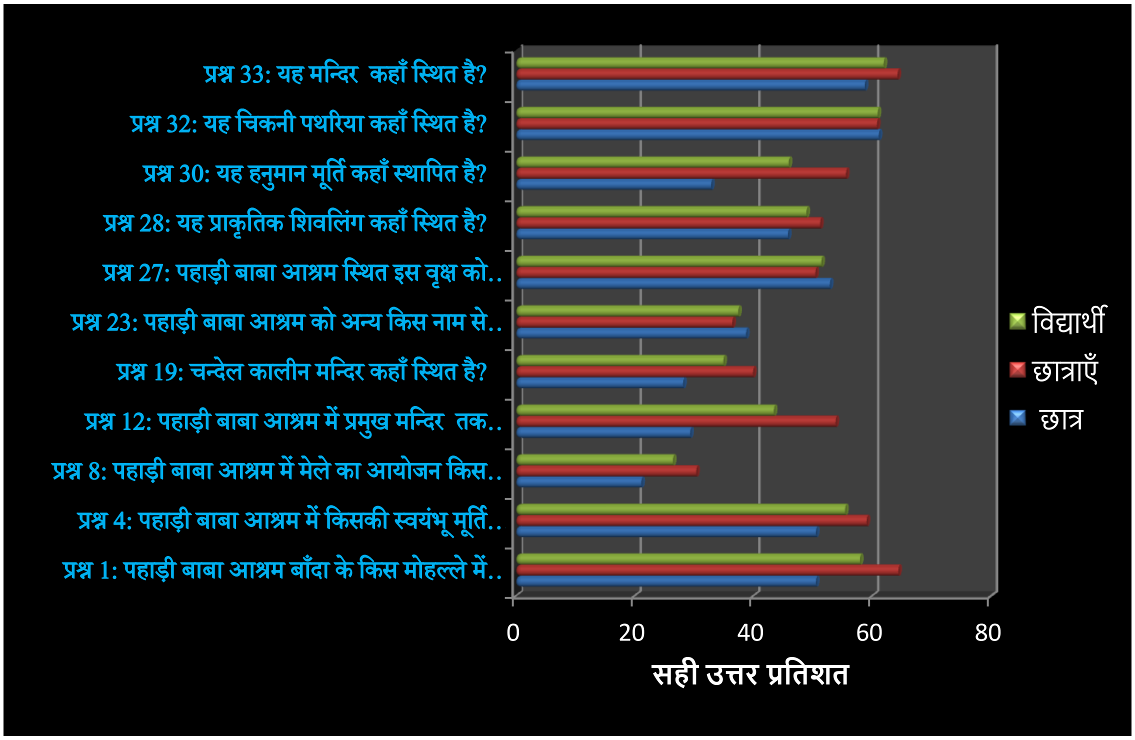

चित्र संख्या 5.3.3.1
पहाड़ी बाबा आश्रम के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता का प्रश्नवार विश्लेषण रेखा-चित्र

तालिका संख्या 5.3.3.2
पहाड़ी बाबा आश्रम के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की समग्र जागरूकता विश्लेषण तालिका

लिंग	N	सही उत्तर	
		M	प्रतिशत
छात्र	85	36.36	42.78%
छात्राएँ	115	59.19	51.46%
कुल विद्यार्थी	200	47.77	47.77%

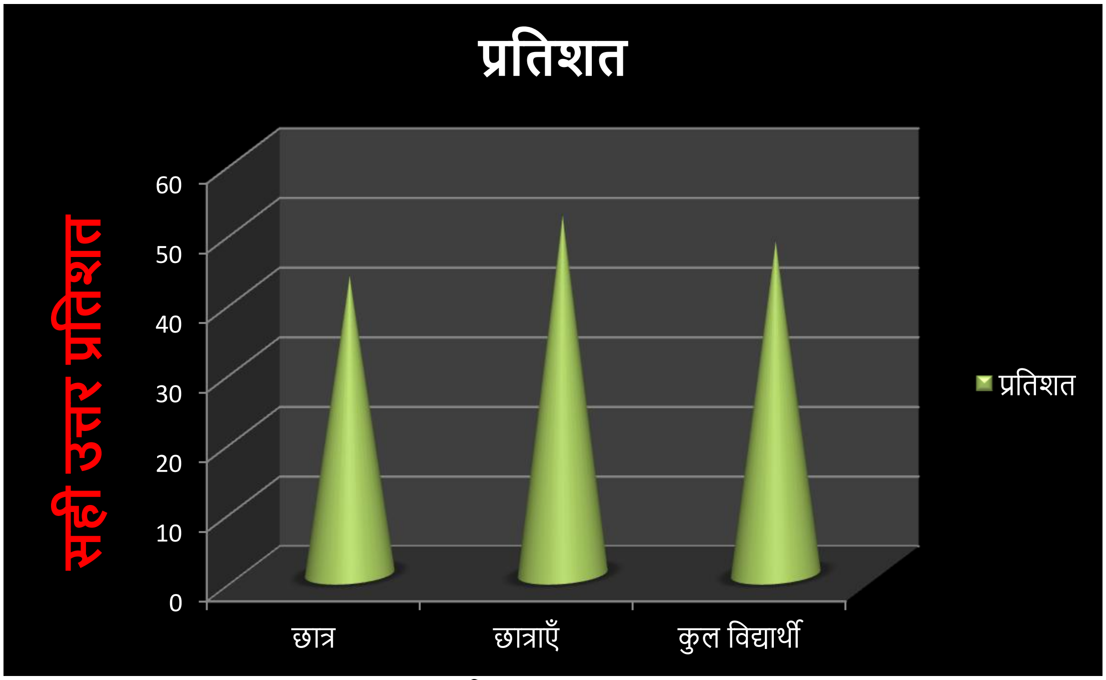

चित्र संख्या 5.3.3.2
पहाड़ी बाबा आश्रम के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों का समग्र जागरूकता विश्लेषण रेखा-चित्र

विश्लेषण—तालिका संख्या 5.3.3.1 एवं चित्र संख्या 5.3.3.1 के विश्लेषण से पता चलता है कि प्रश्न संख्या 1 "पहाड़ी बाबा आश्रम बाँदा के किस मोहल्ले में स्थित है?" के प्रति 50.59% छात्र, 64.47% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 58% विद्यार्थी जागरूक हैं। प्रश्न संख्या 4 "पहाड़ी बाबा आश्रम में किसकी स्वयंभू मूर्ति स्थापित है?" के प्रति 50.59% छात्र, 59.13% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 55.7% विद्यार्थी जागरूक हैं। **प्रश्न संख्या** 8 "पहाड़ी बाबा आश्रम में मेले का आयोजन किस माह किया जाता है?" के प्रति 21.18% छात्र, 30.43% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से **26.5% विद्यार्थी जागरूक** हैं। प्रश्न संख्या 12 "पहाड़ी बाबा आश्रम में प्रमुख मन्दिर तक पहुँचने के लिए कितनी सीढ़ियाँ चढ़नी होती हैं?" के प्रति 29.41% छात्र, 53.91% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 43.5% विद्यार्थी जागरूक हैं। प्रश्न संख्या 19 "चन्देल कालीन मन्दिर कहाँ स्थित है?" के प्रति 28.23% छात्र, 40% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 35% विद्यार्थी जागरूक हैं। प्रश्न संख्या 23 "पहाड़ी बाबा आश्रम को अन्य किस नाम से जाना जाता है?" के प्रति 38.82% छात्र, 36.52%छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 37.5% विद्यार्थी जागरूक हैं। प्रश्न संख्या 27 "पहाड़ी बाबा आश्रम

स्थित इस वृक्ष को पहचानिए?" के प्रति 52.94% छात्र, 50.49% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 51.5% विद्यार्थी जागरूक हैं। प्रश्न संख्या 28 "यह प्राकृतिक शिवलिंग कहाँ स्थित है?" के प्रति 45.88% छात्र, 51.30% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 49% विद्यार्थी जागरूक हैं। प्रश्न संख्या 30 "यह हनुमान मूर्ति कहाँ स्थापित है?" के प्रति 32.94% छात्र, 55.85% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 46% विद्यार्थी जागरूक हैं। प्रश्न संख्या 32 "यह चिकनी पथरिया कहाँ स्थित है?" के प्रति 61.18% छात्र, 60.87% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 61% विद्यार्थी जागरूक हैं। प्रश्न संख्या 33 "यह मन्दिर कहाँ स्थित है?" के प्रति 58.82% छात्र, 64.34% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 62% विद्यार्थी जागरूक हैं।

तालिका संख्या 5.3.3.2 एवं चित्र संख्या 5.3.3.2 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि **पहाड़ी बाबा आश्रम** के प्रति औसत रूप में 42.78% छात्र, 51.46% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से **47.77% विद्यार्थी जागरूक** हैं।

विवेचना—तालिका संख्या 5.3.3.1 एवं चित्र संख्या 5.3.3.1 के अनुसार लगभग दो तिहाई विद्यार्थी पहाड़ी बाबा आश्रम की स्थिति एवं बाहरी परिदृश्य से परिचित हैं जबकि आधे से भी कम विद्यार्थी पहाड़ी बाबा आश्रम के मुख्य मूर्ति,स्थापित शिवलिंग एवं पौराणिक वृक्ष से को पहचानते हैं। इसका कारण विद्यार्थियों द्वारा आश्रम के महत्व को न समझ पाना एवं इसे मात्र साधु-सन्तों के रहने का स्थान समझ लेना हो सकता है। आश्रम के अन्य नाम एवं आश्रम पहुँचने हेतु सीढ़ियों की संख्या से मात्र एक तिहाई से कुछ अधिक छात्र ही परिचित हैं जबकि **आश्रम में लगने वाले मेले से तो एक तिहाई से कम से कम विद्यार्थी परिचित हैं यह स्थिति अत्यन्त दयनीय है। इसका कारण विद्यार्थियों द्वारा आश्रम को मात्र धार्मिक गतिविधि का केंद्र समझना हो सकता है।** आश्रम स्थित चन्देल कालीन मन्दिर के चित्र को दो तिहाई विद्यार्थी पहचानते हैं तो हैं परन्तु इस मन्दिर की स्थिति का ज्ञान मात्र एक चौथाई विद्यार्थियों को ही है, यह बेहद चिंताजनक स्थिति है। इसका कारण शिक्षकों द्वारा क्षेत्रीय विरासतों के प्रति विद्यार्थियों में रुचि विकसित न कर पाना है।

तालिका संख्या 5.3.3.2 व चित्र संख्या 5.3.3.2 के अध्ययन से पता चलता है कि **आधे से भी कम विद्यार्थी पहाड़ी बाबा आश्रम के प्रति जागरूक हैं जिसमें से छात्रों की संख्या तो और भी कम है। इसका**

कारण शैक्षिक पाठ्यक्रम में ऐतिहासिक विरासतों को कम महत्व प्रदान करना एवं आश्रमों को मात्र एक धर्म की गतिविधि का केन्द्र समझ लेना हो सकता है।

5.3.4 सिद्धन के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में जागरुकता का प्रश्नवार विश्लेषण

तालिका संख्या 5.3.4.1
सिद्धन के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता की प्रश्नवार विश्लेषण तालिका

	N	प्रश्न संख्या 3		प्रश्न संख्या 5		प्रश्न संख्या 11		प्रश्न संख्या 13		प्रश्न संख्या 14		प्रश्न संख्या 16		प्रश्न संख्या 17		प्रश्न संख्या 18		प्रश्न संख्या 21		प्रश्न संख्या 24		प्रश्न संख्या 25	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	85	57	67%	54	64%	38	45%	42	49%	44	52%	42	49%	44	52%	35	41%	49	58%	40	47%	48	56%
छात्राएँ	115	86	74.7%	88	76.5%	50	43.4%	67	58.2%	59	51.3%	80	69.5%	50	43.4%	64	55.8%	76	66.0%	57	49.5%	43	37.3%
कुल विद्यार्थी	200	143	71.5%	142	71%	88	44%	109	54.5%	103	51.5%	122	61%	94	47%	99	49.5%	125	62.5%	97	48.5%	91	45.7%

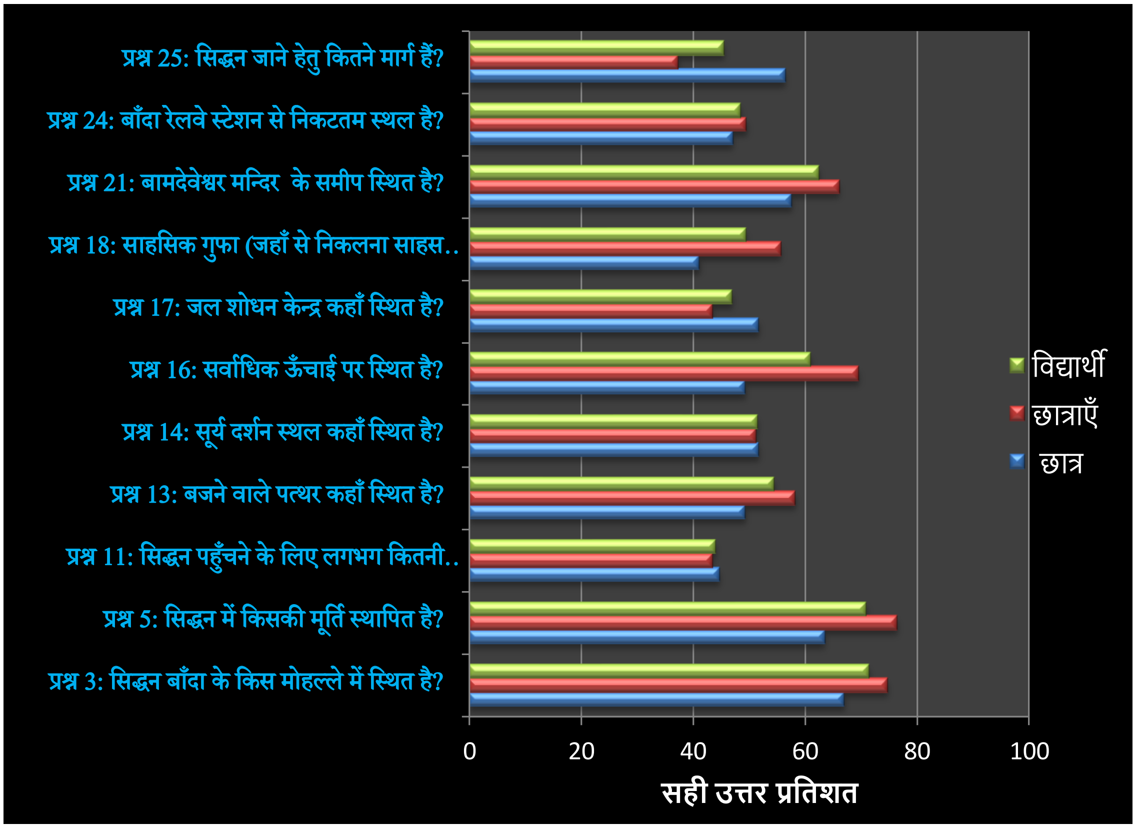

चित्र संख्या 5.3.4.1

सिद्धन के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता का प्रश्नवार विश्लेषण रेखा-चित्र

तालिका संख्या 5.3.4.2

सिद्धन के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की समग्र जागरूकता विश्लेषण तालिका

लिंग	N	सही उत्तर	
		M	प्रतिशत
छात्र	85	44.82	52.73%
छात्राएँ	115	65.65	56.92%
कुल विद्यार्थी	200	55.34	55.34%

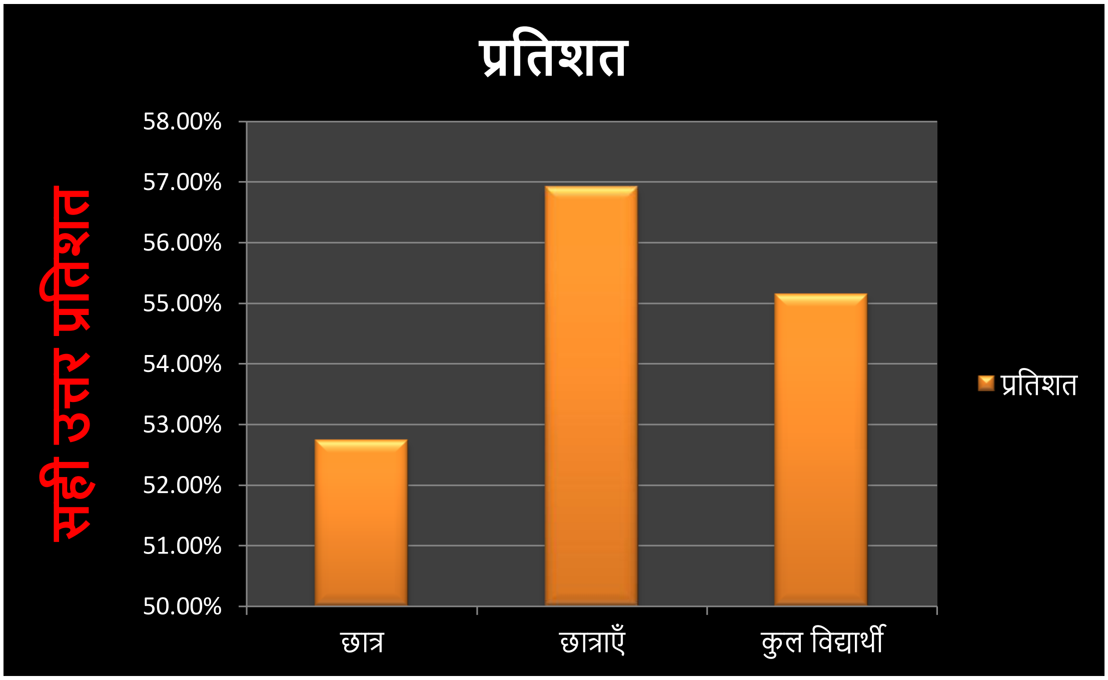

चित्र संख्या 5.3.4.2
सिद्धन के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों का समग्र जागरूकता विश्लेषण रेखा-चित्र

विश्लेषण—तालिका संख्या 5.3.4.1 एवं चित्र संख्या 5.3.4.1 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि प्रश्न संख्या 3 "सिद्धन बाँदा के किस मोहल्ले में स्थित है?" के प्रति 67.06% छात्र, 74.78% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 71.5% विद्यार्थी जागरूक हैं। प्रश्न संख्या 5 "सिद्धन में किसकी मूर्ति स्थापित है?" के प्रति 63.53% छात्र, 76.52% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 71% विद्यार्थी जागरूक हैं। प्रश्न संख्या 11 "सिद्धन पहुँचने के लिए लगभग कितनी सीढ़ियाँ चढ़नी होती हैं?" के प्रति 44.71% छात्र, 43.48% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 44% विद्यार्थी जागरूक हैं। प्रश्न संख्या 13 "बजने वाले पत्थर कहाँ स्थित है?" के प्रति 49.41% छात्र, 58.26% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 54.5% विद्यार्थी पर जागरूक हैं। **प्रश्न संख्या 14** "सूर्य दर्शन स्थल कहाँ स्थित है?" के प्रति 51.76% छात्र, 51.30% छात्राएँ तथा **51.5% विद्यार्थी सामूहिक रूप से जागरूक** हैं। प्रश्न संख्या 16 "सर्वाधिक ऊँचाई पर स्थित है?" के प्रति 49.41% छात्र, 69.57% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 61% विद्यार्थी जागरूक हैं। प्रश्न संख्या 17 "जल शोधन केन्द्र कहाँ स्थित है?" के प्रति 51.76% छात्र, 43.48% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 47% विद्यार्थी जागरूक हैं। प्रश्न संख्या 18 "साहसिक गुफा (जहाँ से निकलना साहस का कार्य है) कहाँ स्थित है?" के प्रति 41.18% छात्र, 55.85% छात्राएँ तथा

सामूहिक रूप से 49.5% विद्यार्थी जागरूक है। प्रश्न संख्या 21 "बामदेवेश्वर मन्दिर के समीप स्थित है?" के प्रति 57.65% छात्र, 66.09% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 62.5% विद्यार्थी जागरूक हैं। प्रश्न संख्या 24 "बाँदा रेलवे स्टेशन से निकटतम स्थल है?" के प्रति 47.06% छात्र, 49.57% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 48.5% विद्यार्थी जागरूक हैं। प्रश्न संख्या 25 "सिद्धन जाने हेतु कितने मार्ग हैं?" के प्रति 56.47% छात्र, 37.39% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 45.7% विद्यार्थी जागरूक हैं।

तालिका संख्या 5.3.4.2 एवं चित्र संख्या 5.3.4.2 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि **सिद्धन** के प्रति औसत रूप से 52.73% छात्र, 56.92% छात्राएँ **तथा 55.34% कुल विद्यार्थी जागरूक** हैं।

विवेचना—तालिका संख्या 5.3.4.1 एवं चित्र संख्या 5.3.4.1 के अध्ययन से ज्ञात होता है कि सिद्धन की स्थिति एवं यहाँ स्थापित मूर्ति से लगभग तीन चौथाई विद्यार्थी परिचित हैं जो कि सन्तोषजनक स्थिति है। परन्तु सिद्धन जाने हेतु मार्गों की संख्या एवं सीढ़ियों की संख्या से आधे से भी कम विद्यार्थी परिचित हैं, जिसमें छात्राओं की अपेक्षा छात्र अधिक जागरूक हैं। इसका कारण यह हो सकता है कि जब छात्र किसी स्थान का भ्रमण करते हैं तो वह वहाँ आने-जाने के अन्य मार्गों पर भी ध्यान देते हैं तथा भ्रमण के लिए अलग-अलग मार्गों को चुनते रहते हैं जबकि छात्राओं के साथ कोई न कोई अभिभावक होते हैं, जो उन्हें सुगम मार्ग से ही यात्रा कराते हैं, साथ ही छात्राएँ छात्रों की अपेक्षा कम घुमक्कड़ प्रवृत्ति की होती हैं। इसी प्रकार सिद्धन स्थित जल शोधन केन्द्र, **सूर्य दर्शन स्थल**, साहसिक गुफा एवं बजने वाले पत्थरों के विषय में भी **मात्र आधे विद्यार्थियों को ही जानकारी है जोकि आश्चर्यचकित करने वाली बात है। इसका कारण यह हो सकता है कि विद्यार्थी किसी स्थान का भ्रमण करते समय मात्र मुख्य मूर्ति या मन्दिर को ही महत्व देते हैं और आसपास स्थित प्राकृतिक एवं महत्वपूर्ण दृश्यों को महत्व नहीं देते हैं।** बाँदा के प्रसिद्ध बामदेवेश्वर मन्दिर के विषय में मात्र दो तिहाई विद्यार्थियों को जानकारी है जो थोड़ा आश्चर्यचकित करने वाली बात है क्योंकि यह बाँदा का सुप्रसिद्ध मन्दिर है। सिद्धन की ऊँचाई तथा रेलवे स्टेशन से दूरी के विषय में भी मात्र आधे विद्यार्थियों को ज्ञान है। इसका कारण महाविद्यालयीन पाठ्यक्रम में मात्र किताबी ज्ञान को महत्व प्रदान करना तथा स्थानीय धरोहरों की अनदेखी करना हो सकता है।

तालिका संख्या 5.3.4.2 तथा चित्र संख्या 5.3.4.2 के विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है **कि मात्र आधे से कुछ अधिक विद्यार्थियों को सिद्धन के विषय में ज्ञान है जो विस्मित करने वाली बात है क्योंकि सिद्धन बाँदा की एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक धरोहर है एवं सुप्रसिद्ध बामदेवेश्वर मन्दिर के समीप ही स्थित है।** छात्राओं के जागरूकता छात्रों की अपेक्षा कुछ अधिक है परन्तु इसमें बहुत ज्यादा अन्तर नहीं है। इसका कारण छात्रों का सिद्धन को मात्र पिकनिक स्पॉट की तरह मानना और छात्राओं का अपने धर्म एवं संस्कृति में गहन रुचि लेना हो सकता है।

5.4 बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका संख्या 5.4

बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन तालिका

श्रेणी	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (σ)	क्रान्तिक अनुपात (CR) गणना मान	क्रान्तिक अनुपात तालिका मान	सार्थकता स्तर	परिणाम
छात्र	85	15.94	6.74	2.0314	1.962	0.05	सार्थक अन्तर है
छात्राएँ	115	17.96	7.21				

df=198

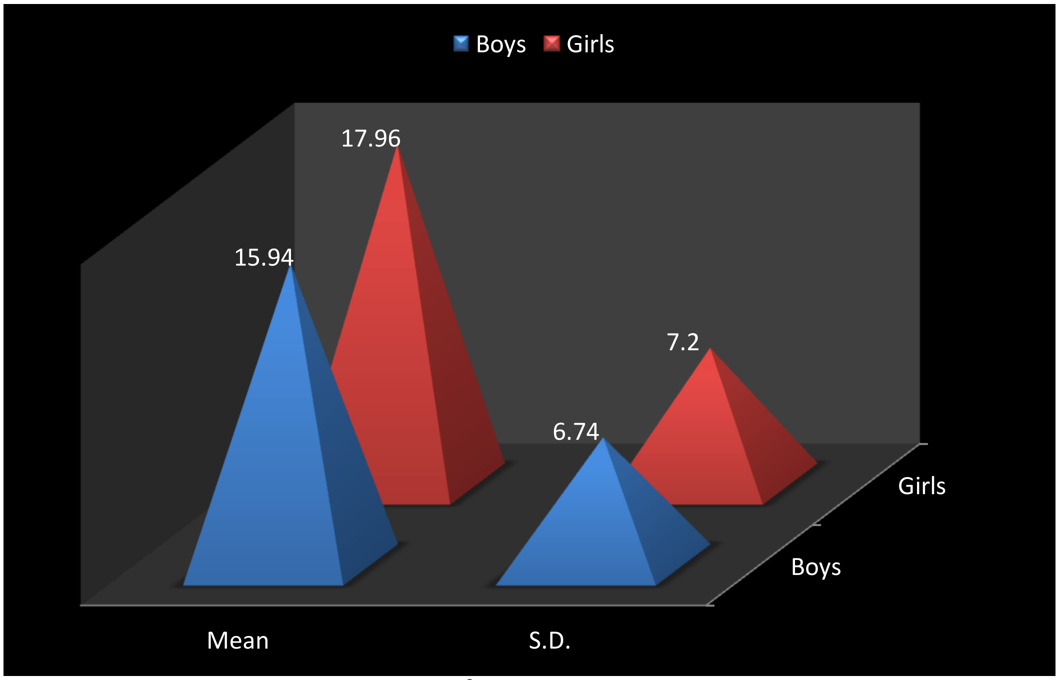

चित्र संख्या 5.4

बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन रेखा-चित्र

विश्लेषण—तालिका संख्या 5.4 एवं चित्र संख्या 5.4 से स्पष्ट है कि **महाविद्यालयीन छात्रों का मध्यमान 15.94** तथा **महाविद्यालयीन छात्राओं का मध्यमान 17.96** है। गणना द्वारा प्राप्त CR का मान 2.0314 है जो कि स्वतन्त्रांश 198 के लिए, 0.05 सार्थकता स्तर पर CR के तालिका मान 1.962 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना "बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है", **0.05 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है तथा वैकल्पिक परिकल्पना** "बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति महाविद्यालयीन छात्राओं की जागरूकता छात्रों से अधिक है" **स्वीकृत की जाती है।**

विवेचना—तालिका संख्या 5.4 एवं चित्र संख्या 5.4 के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता का स्तर समान नहीं है, **छात्राओं की जागरूकता का स्तर छात्रों से अधिक है।** इसका कारण यह हो सकता है कि छात्राएँ अधिक धार्मिक तथा कला एवं संस्कृति प्रेमी होती हैं।

5.5 बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति महाविद्यालयीन प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित विद्यार्थियों की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका संख्या 5.5

बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति महाविद्यालयीन प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित विद्यार्थियों की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन तालिका

विद्यार्थी स्तर	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (σ)	क्रान्तिक अनुपात (CR) गणना मान	क्रान्तिक अनुपात तालिका मान	सार्थकता स्तर	परिणाम
प्रशिक्षित विद्यार्थी	124	16.99	7.22	0.2811	1.962	0.05	सार्थक अन्तर नहीं है
अप्रशिक्षित विद्यार्थी	76	17.28	6.85				

df=198

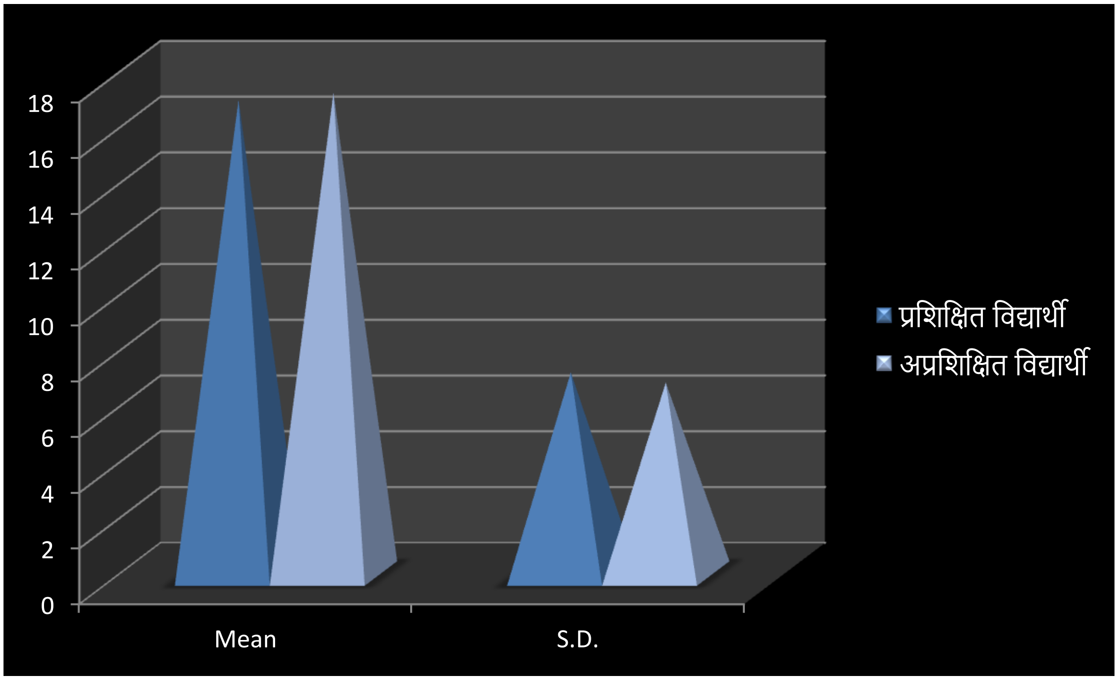

चित्र संख्या 5.5

बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति महाविद्यालयीन प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित विद्यार्थियों की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन रेखा-चित्र

विश्लेषण—तालिका संख्या 5.5 एवं चित्र संख्या 5.5 से स्पष्ट है कि महाविद्यालयीन प्रशिक्षित विद्यार्थियों का मध्यमान 16.99 एवं मानक विचलन 7.22 है तथा महाविद्यालयीन अप्रशिक्षित विद्यार्थियों का मध्यमान 17.28 एवं मानक विचलन 6.85 है। गणना द्वारा प्राप्त CR का मान 0.2811 है, जो कि स्वतन्त्रांश 198 के लिए, 0.05 सार्थकता स्तर पर CR के तालिका मान 1.962 से काफी कम है।

अतः शून्य परिकल्पना "बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति महाविद्यालयीन प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित विद्यार्थियों की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है"**, 0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है।**

विवेचना—तालिका संख्या 5.5 एवं चित्र संख्या 5.5 के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति महाविद्यालयीन प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित विद्यार्थियों की **जागरूकता का स्तर समान** है।

5.6 बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति प्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका संख्या 5.6

बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति प्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन तालिका

विद्यार्थी स्तर	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (σ)	क्रान्तिक अनुपात (CR) गणना मान	क्रान्तिक अनुपात तालिका मान	सार्थकता स्तर	परिणाम
प्रशिक्षित छात्र	46	15.87	7.57	1.3061	1.962	0.05	सार्थक अन्तर नहीं है
प्रशिक्षित छात्राएँ	78	17.65	6.91				

df=122

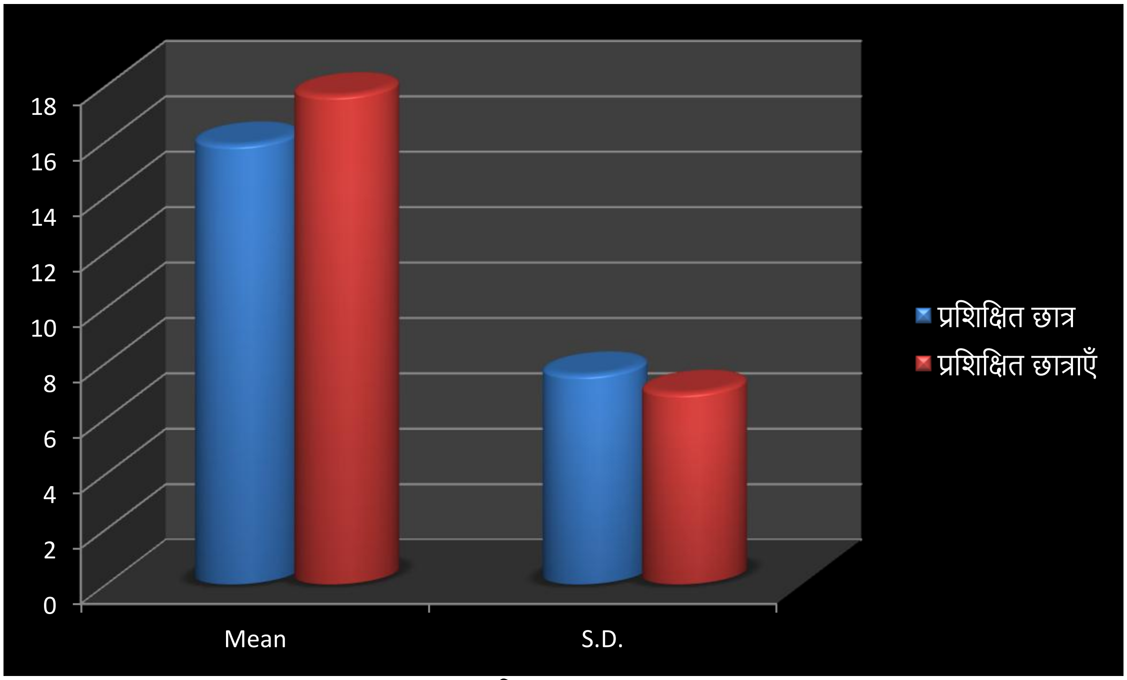

चित्र संख्या 5.6

बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति प्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन रेखा-चित्र

विश्लेषण—तालिका संख्या 5.6 एवं चित्र संख्या 5.6 से स्पष्ट है कि महाविद्यालयीन प्रशिक्षित छात्रों का मध्यमान 15.87 एवं मानक विचलन 7.57 है तथा महाविद्यालयीन प्रशिक्षित छात्राओं का मध्यमान 17.65 एवं मानक विचलन 6.91 है। गणना द्वारा प्राप्त CR का मान 1.3061 है, जो कि स्वतन्त्रांश 122 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर CR के तालिका मान 1.962 से काफी कम है।

अतः शून्य परिकल्पना "बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति प्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है", **0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है।**

विवेचना—तालिका संख्या 5.6 एवं चित्र संख्या 5.6 के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति प्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की **जागरूकता का स्तर समान** है।

5.7 बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका संख्या 5.7

बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन तालिका

विद्यार्थी स्तर	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (σ)	क्रान्तिक अनुपात (CR) गणना मान	क्रान्तिक अनुपात तालिका मान	सार्थकता स्तर	परिणाम
अप्रशिक्षित छात्र	39	16.03	5.80	1.6492	1.990	0.05	सार्थक अन्तर नहीं है
अप्रशिक्षित छात्राएँ	37	18.59	7.75				

df=74

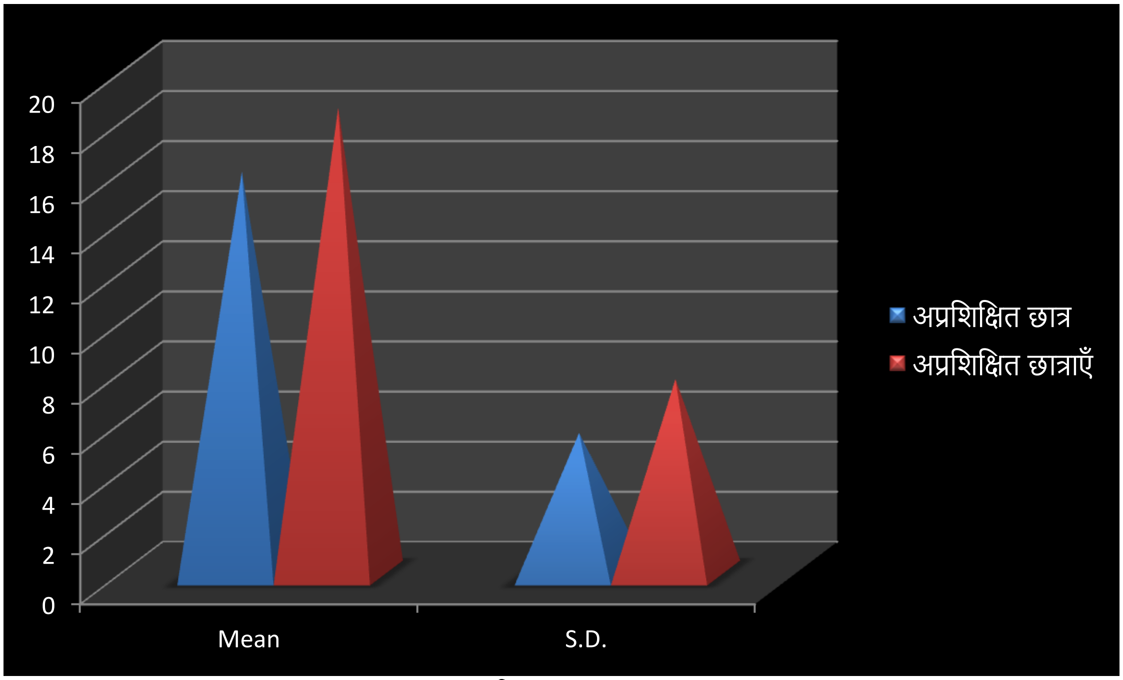

चित्र संख्या 5.7

बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन रेखा-चित्र

विश्लेषण—तालिका संख्या 5.7 एवं चित्र संख्या 5.7 से स्पष्ट है कि महाविद्यालयीन अप्रशिक्षित छात्रों का मध्यमान 16.03 एवं मानक विचलन 5.80 है तथा महाविद्यालयीन अप्रशिक्षित छात्राओं का मध्यमान 18.75 एवं मानक विचलन 7.75 है। गणना द्वारा प्राप्त CR का मान 1.6492 है, जो कि स्वतन्त्रांश 74 के लिए, 0.05 सार्थकता स्तर पर CR के तालिका मान 1.990 से काफी कम है।

अतः **शून्य परिकल्पना** "बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है", **0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है।**

विवेचना—तालिका संख्या 5.7 एवं चित्र संख्या 5.7 के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की **जागरूकता का स्तर समान** है।

5.8 बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्रों की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका संख्या 5.8

बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्रों की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन तालिका

विद्यार्थी स्तर	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (σ)	क्रान्तिक अनुपात (CR) गणना मान	क्रान्तिक अनुपात तालिका मान	सार्थकता स्तर	परिणाम
प्रशिक्षित छात्र	46	15.87	7.57	0.1118	1.984	0.05	सार्थक अन्तर नहीं है
अप्रशिक्षित छात्र	39	16.03	5.80				

df=83

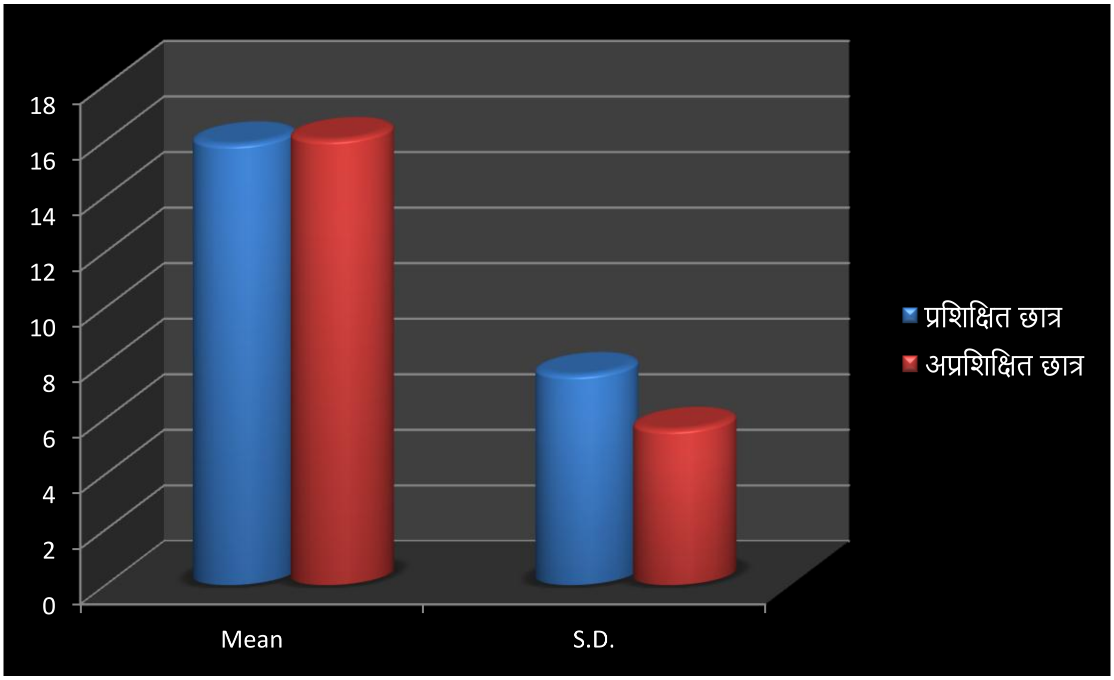

चित्र संख्या 5.8

बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्रों की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन रेखा-चित्र

विश्लेषण—तालिका संख्या 5.8 एवं चित्र संख्या 5.8 से स्पष्ट है कि महाविद्यालयीन प्रशिक्षित छात्रों का मध्यमान 15.87 एवं मानक विचलन 7.57 है तथा अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्रों का मध्यमान 16.03 एवं मानक विचलन 5.80 है। गणना द्वारा प्राप्त CR का मान 0.1118 है, जो कि स्वतन्त्रांश 83 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर CR के तालिका मान 1.984 से काफी कम है।

अतः **शून्य परिकल्पना** "बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्रों की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ", **0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है।**

विवेचना—तालिका संख्या 5.8 एवं चित्र संख्या 5.8 के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्रों की **जागरूकता का स्तर समान** है।

5.9 बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका संख्या 5.9

बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन तालिका

विद्यार्थी स्तर	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (σ)	क्रान्तिक अनुपात (CR) गणना मान	क्रान्तिक अनुपात तालिका मान	सार्थकता स्तर	परिणाम
प्रशिक्षित छात्राएँ	78	17.65	6.91	0.6354	1.962	0.05	सार्थक अन्तर नहीं है
अप्रशिक्षित छात्राएँ	37	18.59	7.75				

df=113

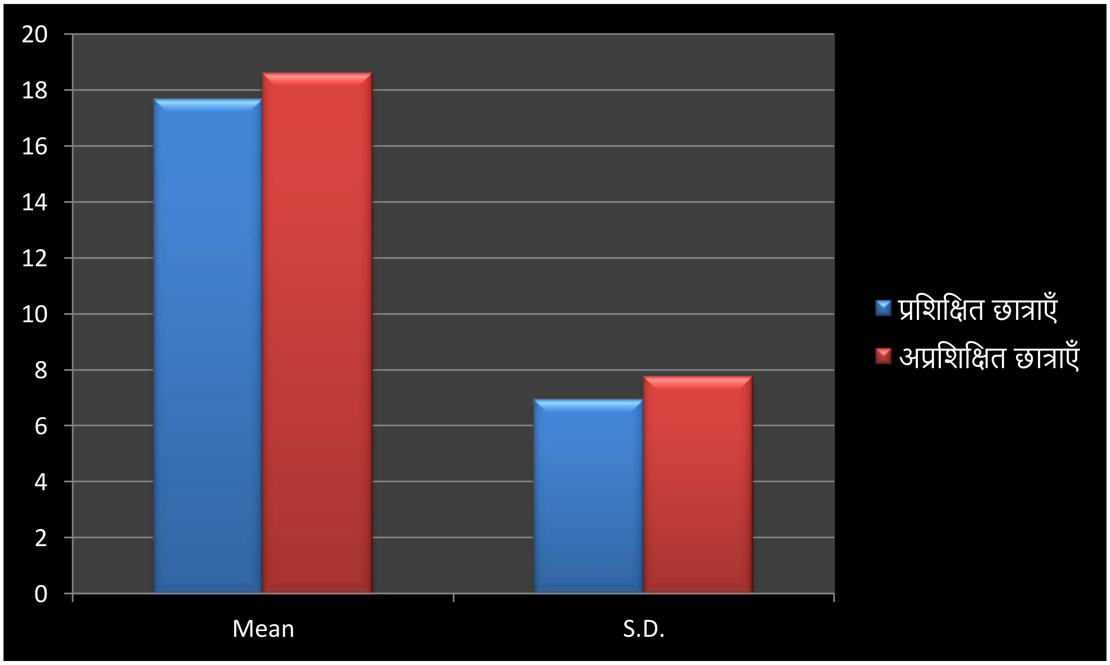

चित्र संख्या 5.9

बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन रेखा-चित्र

विश्लेषण—तालिका संख्या 5.9 एवं चित्र संख्या 5.9 से स्पष्ट है कि महाविद्यालयीन प्रशिक्षित छात्राओं का मध्यमान 17.65 एवं मानक विचलन 6.91 है तथा महाविद्यालयीन अप्रशिक्षित छात्राओं का मध्यमान 18.75 एवं मानक विचलन 7.75 है। गणना द्वारा प्राप्त CR का मान 0.6354 है, जो कि स्वतन्त्रांश 113 के लिए, 0.05 सार्थकता स्तर पर CR के तालिका मान 1.962 से काफी कम है।

अतः शून्य परिकल्पना "बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है", **0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है।**

विवेचना—तालिका संख्या 5.9 एवं चित्र संख्या 5.9 के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्राओं की **जागरूकता का स्तर समान** है।

अध्याय षष्ठ

निष्कर्ष एवं सुझाव

कोई भी शोध अध्ययन तब तक पूर्ण नहीं माना जाता जब तक उसके द्वारा किसी निष्कर्ष में न पहुँचा जाये। अनुसन्धान की वैज्ञानिक प्रक्रिया में तथ्यों को सापेक्षित कर, निष्कर्षों का सामान्यीकरण करके वर्ग विशेष के लिए अनुमोदित करना, अनुसन्धान का अन्तिम चरण माना गया। एक उत्तम शोध प्रबन्ध की सबसे बड़ी विशेषता यह होती है कि उसके निष्कर्ष वस्तुनिष्ठ तथा वैज्ञानिक विधियों द्वारा संग्रहित प्रदत्त पर आधारित हों, उन पर शोधार्थी की व्यक्तिगत धारणाओं एवं अनुमानों का किञ्चित मात्र भी प्रभाव न पड़े। इस अध्याय को निम्न सोपानों में प्रस्तुत किया गया है—

- अध्ययन के निष्कर्ष
- अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता
- अध्ययन के सुझाव
- अध्ययन की सीमाएँ
- भावी शोध हेतु सुझाव

6.1 अध्ययन के निष्कर्ष

सम्पूर्ण शोध कार्य के विश्लेषण एवं व्याख्या के पश्चात मुख्य कार्य उद्देश्यों की पूर्ति करना है। प्रस्तुत शोध कार्य में छः उद्देश्य लिए गये हैं, जिनका विवरण प्रथम अध्याय में प्रस्तुत किया जा चुका है। लघु शोध प्रबन्ध के उद्देश्यों के सन्दर्भ में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए—

उद्देश्य 1: चयनित ऐतिहासिक विरासतों का अध्ययन करना

चयनित ऐतिहासिक विरासतों से सम्बन्धित न्यादर्शों की वैषम्यता तथा कुकुदता के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि इनका स्तर सामान्य है/सामान्य वितरण के अनुरूप है। अतः **न्यादर्श से प्राप्त निष्कर्षों को जनसंख्या पर लागू किया जा सकता है।**

उद्देश्य 2: चयनित ऐतिहासिक विरासतों के प्रति विद्यार्थी जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण करना

शोधकर्ता द्वारा बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण किया गया जिसमें 33 बहुविकल्पीय (4 विकल्प) प्रश्नों को सम्मिलित किया गया। इस जागरूकता प्रश्नावली का प्रशासन गूगल फॉर्म की सहायता से किया गया।

उद्देश्य 3: चयनित ऐतिहासिक विरासतों के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता का उनके लिंग एवं प्रशिक्षण स्तरानुसार अध्ययन करना

चयनित ऐतिहासिक विरासतों के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन निम्न परिकल्पनाओं के अन्तर्गत किया गया है, जिनका निष्कर्ष निम्न प्रकार है—

I. **बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना**

   बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता में सार्थक अन्तर पाया गया। **छात्राओं की जागरूकता,** छात्रों की अपेक्षा **अधिक पाई गयी।** महाविद्यालयीन छात्राओं का मध्यमान 17.96 पाया गया, जोकि छात्रों के मध्यमान 15.94 से अधिक है। **छात्राएँ विरासतों के प्रति लगभग 50% ही जागरूक हैं,** जागरूकता का **यह स्तर सन्तोषजनक नहीं है।**

II. बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति महाविद्यालयीन प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित विद्यार्थियों की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना

बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति महाविद्यालयीन प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित विद्यार्थियों की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति महाविद्यालयीन **प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित विद्यार्थियों की जागरूकता का स्तर समान है। वे विरासतों के प्रति मात्र 50% ही जागरूक हैं,** जागरूकता का **यह स्तर सन्तोषजनक नहीं है।**

III. बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति प्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना

बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति प्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति **प्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता का स्तर समान है। वे विरासतों के प्रति 50% से भी कम जागरूक हैं,** जागरूकता का **यह स्तर सन्तोषजनक नहीं है।**

IV. बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना

बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति **अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता समान स्तर की है। वे विरासतों के प्रति 50% से कुछ अधिक ही जागरूक हैं,** जागरूकता का **यह स्तर सन्तोषजनक नहीं है।**

V. बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्रों की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना

बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्रों की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति **प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्रों की जागरूकता समान स्तर की है। वे विरासतों के प्रति 50% से भी कम जागरूक हैं,** जागरूकता का **यह स्तर सन्तोषजनक नहीं है।**

VI. बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना

बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति **प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्राओं की जागरूकता का स्तर समान है। वे विरासतों के प्रति 50% से कुछ अधिक जागरूक ही हैं,** जागरूकता का **यह स्तर सन्तोषजनक नहीं है।**

उद्देश्य 4: चयनित ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूकता संवर्धन के सम्बन्ध में सुझाव प्रस्तुत करना

बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थी पर्याप्त जागरूक नहीं हैं। उनकी जागरूकता संवर्धन के लिए सुझाव नीचे 'अध्ययन के सुझाव' के अन्तर्गत प्रस्तुत किए गये हैं।

उद्देश्य 5: चयनित ऐतिहासिक विरासतों का ई-ब्रोशुर (E-brochure) तैयार करना

चयनित ऐतिहासिक विरासतों का ई ब्रोशुर (E-brochure) (**परिशिष्ट—XI**) में संलग्न है।

उद्देश्य 6: चयनित ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूकता संवर्धन के सम्बन्ध में व्यावहारिक कार्य करना

चयनित ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूकता संवर्धन के सम्बन्ध में निम्न व्यावहारिक कार्य किए गये—

- चयनित ऐतिहासिक विरासतों के पेज तैयार कर इण्टरनेट पर प्रकाशित किये गये, जिनका लिंक **(परिशिष्ट—XII)** में संलग्न है।
- चयनित ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूकता संवर्धन के सम्बन्ध में विभिन्न प्रशासनिक अधिकारियों से पत्राचार करना, जिसका लिंक **(परिशिष्ट—XIII)** में संलग्न है।

6.2 अध्ययन के सुझाव

- ❖ महाविद्यालयों में समय-समय पर सांस्कृतिक कार्यक्रम किए जायें।
- ❖ विद्यार्थियों की जागरूकता के लिए संगोष्ठी एवं कार्यशालाओं का आयोजन किया जाये।
- ❖ ऐतिहासिक धरोहरों को उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाये।
- ❖ आवागमन के साधनों का विकास तीव्र गति से किया जाये।
- ❖ चयनित विरासतों को बाँदा शहर की पर्यटन सूची में सम्मिलित किया जाये।
- ❖ बाँदा बस स्टैण्ड एवं रेलवे स्टेशन में इन विरासतों से सम्बन्धित बोर्ड लगाए जाने चाहिए।
- ❖ महाविद्यालय द्वारा शैक्षिक भ्रमण का आयोजन किया जाना चाहिए।
- ❖ बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों का विकीपीडिया पेज बनाया जाना चाहिए।
- ❖ बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों का सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर व्यापक प्रचार-प्रसार जाना चाहिए।
- ❖ इतिहास से सम्बन्धित प्रस्तर शिलालेख सभी ऐतिहासिक स्थलों पर लगाए जाने चाहिए जिनमें स्थल से सम्बन्धित ऐतिहासिक विशेषताओं का अंकन किया जाना चाहिए।

- बाँदा जिले की Official website (https://banda.nic.in) के Menu Bar में Download का option होना चाहिए जिसके अन्तर्गत बाँदा का पर्यटन मानचित्र तथा पर्यटन स्थलों के ई-ब्रोशुर डाउनलोड हेतु उपलब्ध होने चाहिए।
- उत्तर प्रदेश राज्य की ऑफिशियल पर्यटन वेबसाइट में 'Destination Column' के अन्तर्गत एक कॉलम जिले-वार पर्यटक स्थलों की सूची का होना चाहिए जिसमें जिले की ऐतिहासिक विरासतों का वर्णन किया जाना चाहिए।
- देश की ऑफिशियल पर्यटन वेबसाइट में 'Destination Column' के अन्तर्गत सभी राज्यों की एक सूची होनी चाहिए जिसमें राज्य की ऑफिशियल पर्यटन वेबसाइट का लिंक हाइपरलिंक होना चाहिए।

6.2.1 नवाब टैंक के लिए सुझाव

- नवाब टैंक में वाटर स्पोर्ट्स का आयोजन किया जाना चाहिए।
- नवाब टैंक में नौका विहार का आयोजन किया जाना चाहिए।
- नवाब टैंक के समीप स्थित वन चेतना पार्क में बच्चों के मनोरञ्जन हेतु झूले लगाए जाने चाहिए।
- नवाब टैंक में लेजर शो की व्यवस्था की जानी चाहिए।
- बाँदा जिले की Official website में नवाब टैंक के विषय में पूर्ण विवरण नहीं दिया गया, निम्न पंक्तियों को वहाँ जोड़ा जाना चाहिए—

नवाब टैंक का निर्माण नवाब जुल्फिकार अली द्वारा करवाया गया था तथा इसको अभिलेखों में शंकर सरोवर के नाम से जाना जाता है।

6.2.2 सिद्धन के लिए सुझाव

- ❖ निम्नीपार से सिद्धन तक जाने हेतु बनाए गये दो पहिया मार्ग को दुरुस्त किया जाये।
- ❖ सिद्धन में 'बजने वाले पत्थरों' तक जाने हेतु संकेतक लगाए जायें।
- ❖ सिद्धन के सीढ़ी मार्ग, सूर्य दर्शन स्थल एवं बजने वाले पत्थरों के समीप श्रद्धालुओं के बैठने हेतु व्यवस्था की जानी चाहिए।
- ❖ कैलाशपुरी से सूर्य दर्शन स्थल तक रोप-वे की व्यवस्था की जानी चाहिए।
- ❖ स्थल से सम्बन्धित प्रस्तर मानचित्र बनाया जाना चाहिए।
- ❖ सिद्धन से लेकर भूरागढ़ तक जिप लाइन का निर्माण किया जाना चाहिए।
- ❖ बाँदा जिले की Official website में Tourism → Tourist places के अन्तर्गत 'सिद्धन' जोड़ा जाना चाहिए अथवा पर्यटन स्थलों में 'बामदेव मन्दिर' के दिए गये विवरण में सिद्धन का विवरण भी जोड़ा जाना चाहिए क्योंकि यह दोनों ही स्थल बाम्वेश्वर पहाड़ पर स्थित हैं।

6.2.3 राम निवास मन्दिर के लिए सुझाव

- ❖ राम निवास मन्दिर तक पहुँचने के मार्ग को दुरुस्त किया जाये।
- ❖ मन्दिर के बाहरी हिस्से की मरम्मत की जानी चाहिए।
- ❖ रामायण से जुड़ी सामग्रियों के संग्रहालय की व्यवस्था की जानी चाहिए।
- ❖ राम निवास मन्दिर को रामायण सर्किट से जोड़ा जाये तथा रामायण मेला जैसी ट्रेनों की भ्रमण सूची में शामिल गया जाये।
- ❖ राम निवास मन्दिर को नरैनी मार्ग से भी जोड़ा जाये।
- ❖ बाँदा जिले की Official website में Tourism → Tourist places के अन्तर्गत 'राम निवास मन्दिर' के विषय में विवरण दिया जाना चाहिए।

6.2.4 पहाड़ी बाबा आश्रम के लिए सुझाव

- ❖ आश्रम के समीप स्थित चन्देल कालीन मन्दिर की मरम्मत की जानी चाहिए।
- ❖ आश्रम के इतिहास से सम्बन्धित सूचना पट लगाए जाने चाहिए।
- ❖ आश्रम परिसर में स्थित मन्दिरों के आगे नाम पट्टिका लगी होनी चाहिए।
- ❖ पहाड़ी बाबा आश्रम में Rock Climbing की व्यवस्था की जानी चाहिए।
- ❖ स्थल से सम्बन्धित प्रस्तर मानचित्र बनाया जाना चाहिए।
- ❖ बाँदा जिले की Official website में Tourism ⇒ Tourist places के अन्तर्गत 'पहाड़ी बाबा आश्रम' के विषय में विवरण दिया जाना चाहिए।

6.3 शैक्षिक उपादेयता

प्रस्तुत शोध अध्ययन के परिणाम शिक्षा जगत, विद्यार्थियों, शिक्षकों, इतिहासकारों, पुरातत्वविदों एवं समाज के लोगों के दृष्टिकोण को विकसित करने एवं ऐतिहासिक विरासतों से सम्बन्धित विभिन्न समस्याओं के समाधान में सहायक होंगे।

प्रस्तुत अध्ययन में दर्शनीय ऐतिहासिक विरासत, धार्मिक स्थल, मन्दिर, प्राकृतिक स्थल, जलाशय जैसे—पहाड़ी बाबा आश्रम, राम निवास मन्दिर, नवाब टैंक, सिद्धन पर विस्तृत चर्चा की गयी है, साथ ही पर्यटन जैसे विश्वव्यापी महत्व वाले विषय पर प्रकाश डाला गया है। इसके साथ ही स्थानों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष से सम्बन्धित चर्चा की गयी है। महाविद्यालय स्तर पर ऐतिहासिक धरोहरों के प्रति विद्यार्थियों की अल्प जानकारी को भी प्रकाश में लाया गया है। प्रस्तुत अध्ययन विद्यार्थियों, शिक्षकों, पाठ्यक्रम-निर्माताओं, प्रशासकों, इतिहासकारों, पुरातत्वविदों इत्यादि के लिए अत्यन्त सहायक सिद्ध होगा।

6.3.1 विद्यार्थियों के लिए

- विद्यार्थी ऐतिहासिक विरासतों के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- विद्यार्थी अपनी क्षेत्रीय धरोहरों के महत्व को जान सकेंगे।

- विद्यार्थी ऐतिहासिक विरासतों के प्रति रुचि विकसित कर सकेंगे।
- विद्यार्थी ऐतिहासिक विरासतों के प्रति आकर्षित होकर खाली समय पर भ्रमण हेतु जा सकते हैं।

6.3.2 शिक्षकों के लिए

- शिक्षक क्षेत्रीय धरोहरों के महत्व को समझकर विद्यार्थियों को बता सकते हैं।
- विद्यार्थियों के मन में क्षेत्रीय विरासत के प्रति रुचि जागृत कर सकते हैं।
- शिक्षक ऐतिहासिक विरासतों के महत्व को स्वयं समझकर विद्यार्थियों को शैक्षिक भ्रमण हेतु ले जा सकते हैं।
- विद्यार्थियों को ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरुक कर सकते हैं।
- अभिभावकों को शैक्षिक भ्रमण के महत्व का ज्ञान करा सकते हैं।

6.3.3 पाठ्यक्रम-निर्माताओं के लिए

- ऐतिहासिक विरासतों को महाविद्यालयीन पाठ्यक्रम में शामिल करने हेतु नीति बनाने की आवश्यकता है।
- शैक्षिक भ्रमण को उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम में विशेष महत्व दिया जाना चाहिए।
- इतिहास विषय के उच्च शिक्षा के विद्यार्थियों के लिए पाठ्यक्रम में ऐतिहासिक धरोहरों को पूरक पाठ्य-पुस्तक के रूप में सम्मिलित किया जा सकता है।

6.3.4 प्रशासकों के लिए

- प्रशासक जिले की पर्यटन सूची में वहाँ की ऐतिहासिक विरासतों को शामिल कर सकते हैं।
- जिले के प्रशासक इन ऐतिहासिक स्थलों पर विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करा सकते हैं।

- महाविद्यालयों के विद्यार्थियों को इन ऐतिहासिक स्थानों के शैक्षिक भ्रमण हेतु दिशा निर्देश जारी कर सकते हैं।
- जिले के प्रशासक बाँदा बस स्टैण्ड एवं रेलवे स्टेशन में इन विरासतों से सम्बन्धित बोर्ड लगवा सकते हैं।
- जिले के मुख्य चौराहों पर ऐतिहासिक विरासतों से सम्बन्धित बोर्ड लगवाए जा सकते हैं।
- प्रस्तुत शोध में दिए गये सुझावों के आधार पर देश तथा प्रदेश की पर्यटक वेबसाइट्स में ऐतिहासिक विरासतों का उल्लेख करवाया जा सकता है।
- पहाड़ी बाबा आश्रम में Rock Climbing की व्यवस्था, सिद्धन से लेकर भूरागढ़ तक जिप लाइन का निर्माण, सिद्धन तक जाने हेतु रोप-वे की व्यवस्था, नवाब टैंक में वाटर स्पोर्ट्स, नौका विहार, लेजर शो आदि की व्यवस्था करवाई जा सकती है।

6.3.5 इतिहासकारों के लिए

- इतिहासकार राम निवास मन्दिर जुड़े इतिहास से विषय में जानकारी एकत्रित कर सकते हैं।
- पहाड़ी बाबा आश्रम तथा वहाँ स्थित चन्देलकालीन मन्दिर से जुड़े इतिहास के विषय में पता लगा सकते हैं।
- सिद्धन के ऐतिहासिक महत्व के विषय में खोज-बीन पर सकते हैं।
- नवाब टैंक के ऐतिहासिक महत्त्व का पता लगा सकते हैं।

6.3.6 पुरातत्वविदों के लिए

- पुरातत्विद पहाड़ी बाबा स्थित आश्रम चन्देल कालीन मन्दिर के विषय में खोज कर सकते हैं।
- सिद्धन में स्थित बजने वाले पत्थरों के विषय में खोज-बीन कर सकते हैं।

6.4 अध्ययन की सीमाएँ

- शोध में प्रयुक्त स्वनिर्मित उपकरण का समय व धन के अभाव के कारण मानकीकरण सम्भव नहीं हो पाया है।
- प्रयुक्त शोध में आँकड़े एकत्रित करने के लिए विद्यार्थियों का चयन उपलब्धता के आधार पर किया गया है।

6.5 भावी शोध हेतु सुझाव

शोध अध्ययन के क्षेत्र में सत्य की खोज निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। कोई भी शोधकार्य पूर्ण व अन्तिम नहीं होता वरन् यह एक ऐसी श्रृंखला जिसमें एक कड़ी के सम्पन्न होने के साथ ही दूसरी कड़ी की शुरुआत होती है। कोई भी अध्ययन एक निश्चित परिधि तक सीमित रहता है किन्तु उसी क्षेत्र में और कार्य अन्य शोधार्थियों द्वारा किए जा सकते हैं ताकि समस्या का अधिक स्पष्ट निरूपण हो सके। शोध अध्ययन के अधिक स्थिर एवं विश्वसनीय परिणाम प्राप्त करने के लिए एक ही शोध समस्या पर कई शोध अध्ययनों का किया जाना आवश्यक होता है। शोध समस्या के लिए अधिक समय व धन की आवश्यकता होती है जो कि केवल एक शोधार्थी के लिए सम्भव नहीं होता, जिसके कारण वह एक विषय के विभिन्न पहलुओं पर कार्य नहीं कर पाता। एक शोध समस्या पर किया गया शोधकार्य, दूसरे शोधार्थी द्वारा किए गये शोध अध्ययन के लिए मार्गदर्शन एवं सुझाव का कार्य करता है। इस शोधकार्य के आधार पर भावी अध्ययनों के लिए निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत हैं—

- वर्तमान शोध अध्ययन उत्तर प्रदेश के मात्र बाँदा जिले तक ही सीमित है, भावी शोध अध्ययनों में अन्य जिलों को सम्मिलित किया जा सकता है।
- वर्तमान शोध अध्ययन बाँदा शहर के मात्र पाँच उच्च शिक्षण संस्थान तक ही सीमित है, भावी शोध अध्ययनों में अन्य उच्च शिक्षण संस्थानों को सम्मिलित किया जा सकता है।

- प्रस्तुत अध्ययन बाँदा शहर की मात्र चार ऐतिहासिक विरासतों (नवाब टैंक, सिद्धन, पहाड़ी बाबा आश्रम एवं राम निवास मन्दिर) तक ही सीमित है, भावी अध्ययनों में शहर की अन्य ऐतिहासिक विरासतों को सम्मिलित किया जा सकता है।
- प्रस्तुत अध्ययन महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता तक सीमित है, भावी अध्ययनों में प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को भी सम्मिलित किया जा सकता है।
- प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श का चयन असम्भाव्य विधि से किया गया है, भावी अनुसन्धानों में सम्भाव्य विधियों द्वारा न्यादर्श का चयन किया जा सकता है।

सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची

अध्ययन। (2021, फरवरी 15)। शब्दकोश। <http://surl.li/cphcl>

अवस्थी, निधि (2005)। *ग्रामीण और नगरीय परिवारों की जनसंख्या नियन्त्रण के प्रति जागरूकता का अध्ययन।* पी-एच०डी० थीसिस, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर। <https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/270538>

आनन्द, विक्रम (2019)। *माध्यमिक स्तर के हिंदी अध्यापकों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति जागरूकता एवं अध्यापक की शिक्षण प्रभाविता का अध्ययन।* पी-एच०डी० थीसिस, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, बनारस। <https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/296838>

आर्य, डॉ० मोहन लाल (2018)। *शिक्षा के ऐतिहासिक, राजनीतिक एवं आर्थिक परिप्रेक्ष्य।* मेरठ: आर० लाल० बुक डिपो।

बाँदा नगर। विकिपीडिया। <https://bit.ly/3pFJ300>

बाँदा के बामदेव पर्वत में अद्भुत पत्थर, जिनसे निकलता है संगीत। (2020, दिसम्बर 12)। संजीवनी टुडे। <https://sanjeevnitoday.com/uttar-pradesh/wonderful-stones-in-bamdev-mountain-of-banda-from-which/cid2045978.htm>

कतरन। <https://yogaguru1.blogspot.com/2019/>

कुमार, दीपक (2021)। *विद्यार्थियों मड़फा दुर्ग के प्रति जागरूकता का अध्ययन।* अप्रकाशित लघु शोध प्रबन्ध-शिक्षा, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी।

खण्डेलवाल, आरती (2018)। *सिरोही जिले के बी० एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता एवं अभिवृत्ति का अध्ययन।* पी-एच०डी० थीसिस, पैसिफिक अकैडमी ऑफ हायर एजुकेशन एण्ड रिसर्च यूनिवर्सिटी, उदयपुर। <https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/321972>

गन्दगी के भंवर में फंसा नवाब टैंक तालाब। (2018, जुलाई 28) जागरण। <https://www.jagran.com/uttar-pradesh/banda-nawab-tank-pond-trapped-in-vortex-of-dirt-18254468.html>

गुप्ता, एस. पी. & गुप्ता, अलका (2019)। *उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान: सिद्धान्त एवं व्यवहार* (Rev. Ed.)। प्रयागराज: शारदा पुस्तक भवन।

चित्रकूट जिला। विकिपीडिया। <https://bit.ly/3cjqlZ9>

चौरसिया, प्रिन्सी (2018)। *स्नातक स्तर पर महोबा नगर की दुर्लक्ष ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूकता का अध्ययन।* अप्रकाशित लघु शोध प्रबन्ध-शिक्षा, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी।

चौरसिया, पूजा (2019)। *माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में कालिन्जर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का अध्ययन।* एम० एड० लघु शोध प्रबन्ध, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी। <https://archive.org/details/ilovepdf-merged-4-1/mode/2up?view=theater>

जागरूकता। (2018, दिसम्बर 04)। विकीपीडिया।
<https://enmwikipediaorg.translate.goog/wiki/Awareness?_x_tr_sl=en&_x_tr_tl=hi&_x_tr_hl=hi&_x_tr_pto=tc,sc>

धर, अभिलाषा (2019)। *उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में योग जागरूकता का अध्ययन: बाँदा जनपद के विशेष सन्दर्भ मे।* लघु-शोध प्रबन्ध–शिक्षा, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी।
<https://archive.org/details/20200304_20200304_1435/mode/2up>

पटेल, श्वेता (2017)। *उच्चतर माध्यमिक विद्यालय स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं में वृत्तिक अभिमुखीकरण हेतु जागरूकता कार्यक्रम का प्रभाव एक अध्ययन।* पी-एच०डी० थीसिस, जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूँ (राजस्थान)। <https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/229015>

पटेल, ब्रजलाल (2021)। *बाँदा जनपद के विद्यार्थियों भूरागढ़ दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का अध्ययन।* अप्रकाशित लघु शोध प्रबन्ध-शिक्षा, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी।

पहाड़ी बाबा की अन्तिम यात्रा आज सुबह। (2012, दिसम्बर 29)। अमर उजाला।
<https://www.amarujala.com/uttar-pradesh/banda/Banda-112511-41>

परिहार, नीलम (2017)। *भारतीय बीमा सेवा में ग्राहक सन्तुष्टि भारतीय जीवन बीमा निगम एवं निजी क्षेत्र की कम्पनियों द्वारा प्रदत्त सेवाओं का तुलनात्मक अध्ययन (अल्मोड़ा जनपद के विशेष संदर्भ में)।* पी-एच० डी० थीसिस, कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल।
<https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/203279>

पाठक, पी० डी० (2017)। *शिक्षा में मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य।* आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन।

पाठक, योगेश(2011)। *पूर्वी उत्तर प्रदेश के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों का सूचना क्रांति परंपरागत विषयों तथा पर्यावरण जागरूकता के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन।* पी-एच०डी० थीसिस, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर। <https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/17819>

प्रतिचयन विधियाँ और प्रतिदर्श आकार का आकलन। E-gyankosh. <https://egyankosh.ac.in/bitstream/123456789/30591/1/Unit-15.pdf>

प्रसामान्य वितरण: प्रसम्भाव्यता का सम्प्रत्तय, प्रसामान्य सम्भाव्य वक्र की विशेषताएँ, विषमता एवं कुकुदता, प्रसामान्य सम्भाव्यता वक्र के अनुप्रयोग। उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय। <https://www.uou.ac.in/sites/default/files/slm/BAPY-201.pdf>

प्राथमिक शिक्षा। (2020, अक्टूबर 21)। Scotbuzz. <https://www.scotbuzz.org/2020/10/prathamik-shiksha-ka-arth.html?m=1>

भारत में शिक्षा के प्रकार और स्तर। (2021, फरवरी 08)। Scotbuzz. <http://surl.li/cpgvf>

महाविद्यालयीन विद्यार्थी। (2018, जून 09)। शब्दकोश। <http://surl.li/cphbh>

मिश्रा, मधुरिमा (2009)। *महिलाओं में पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरूकता एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (कानपुर नगर के संदर्भ में)।* पी-एच०डी० थीसिस, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर। <https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/257977>

नवाब टैंक में 151 फीट ऊँचा तिरंगा लहराया। (2021, अगस्त 16)। युग जागरण। <https://bit.ly/3c5Dsgf>

राजकुमार (2016)। *तकनीकी शिक्षा संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, अभिप्रेरणा तथा समायोजन पर प्रभाव का एक अध्ययन।* पी- एच० डी० थीसिस, जवाहरलाल नेहरू स्नातकोत्तर शिक्षक-प्रशिक्षण महाविद्यालय, कोटा, राजस्थान।

रायजादा, बी० एस० (2008)। *शिक्षा में अनुसंधान के आवश्यक तत्व।* जयपुर: दी डाइमण्ड प्रिंटिंग प्रेस।

राठौर, पूनम (2020)। *अनुसूचित पिछड़े व सामान्य जाति के स्नातकोत्तर स्तर विद्यार्थियों के मानवाधिकार जागरूकता एवं व्यक्तिगत मूल्य विकास का तुलनात्मक अध्ययन।* पी-एच०डी० थीसिस, स्वामी विवेकानन्द सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ।

लघु शोध-प्रबन्ध प्रकाशित <https://yogaguru1.blogspot.com/2020/05/blog-post.html>

लाल, रमन बिहारी (2014)। *शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन।* मेरठ: आर० लाल० बुक डिपो।

लाल, रमन बिहारी (2018)। *शिक्षा के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य।* मेरठ: आर० लाल० बुक डिपो।

लॉर्ड मैकाले का वह स्मरण पत्र जिसने बदल दी भारत की शिक्षा नीति। (2022, फरवरी 04)। नवभारत टाइम्स। <http://surl.li/cpgxy>

सक्सेना, अर्चना (2010)। *पर्यावरण संरक्षण एवं प्रदूषण उन्मूलन के प्रति जनमानस की जागरूकता एवं सहभागिता का अध्ययन।* पी-एच०डी० थीसिस, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर।<https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/230163>

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण अर्थ, उद्देश्य, आवश्यकता एवं स्रोत। (2019, जुलाई 20)। Scotbuzz.<https://www.scotbuzz.org/2019/07/sambandhit-sahity.html?m=1>

सर्वेक्षण विधि का अर्थ। (2020, मार्च 17)। टीचर दीदी, यू-ट्यूब।
<https://youtu.be/J3Bazwt9pRs>

साहू, सरिता (2016)। *क्षेत्रीय इतिहास अध्ययन के परम्परागत मौखिक स्रोतों की ऐतिहासिकता: छत्तीसगढ़ के विशेष संदर्भ में।* पी-एच०डी० थीसिस, शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग (छत्तीसगढ़)। <https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/245803>

सांख्यिकी। Unionpedia. <http://surl.li/cphml>

सिंह, लक्ष्मण (2016)। *अलीगढ़ मण्डल के ग्रामीण एवं शहरी प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् शिक्षकों की पर्यावरण सम्बन्धी जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन।* पी-एच०डी० थीसिस, डॉ० भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा।<https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/328345>

शोधगंगा। <https://shodhganga.inflibnet.ac.in/>

शोध उपकरण। (2020, नवम्बर 13)। Testbook. <https://testbook.com/question-answer/hn/in-choosing-a-research-tool-which-of-the-following--5ffbd7a2264e78f75c414c29>

श्रीवास्तव, डी० एन० (1993)। *अनुसन्धान विधियाँ।* आगरा: साहित्य प्रकाशन।

श्रीराम निवास मन्दिर का अयोध्या से गहरा नाता। (2020, अगस्त 02)। अमर उजाला। <https://bit.ly/3A3B7dP>

त्रिपाठी, शैलेंद्र कुमार (2018)। *अंग्रेजी एवं हिंदी माध्यम के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में एड्स के प्रति जागरूकता एवं पर्यावरण ज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन।* पी-एच०डी० थीसिस, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर। <https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/303516>

5000 दीपकों ने रोशन किया नवाब टैंक। (2019, जून 28)। अमर उजाला। <https://www.amarujala.com/uttar-pradesh/banda/save-water-banda-news-knp4985125118>

Best, John W. & Kahn, James V. (1995). *Research in Education* (7th edition). New Delhi: Prentice- Hall of India private limited. <https://niepid.nic.in/THE%20MEANING%20OF%20RESEARCH.दpdf>

Find population skewness, kurtosis for ungrouped data. AtoZmath.com <http://surl.li/cphpn>

Guidelines for Preparation of the Thesis/Dissertations (2018). Nainital: Kumaun University. <https://www.kunainital.ac.in/images/document/KUDScDLittPhDMScDissertationThesisPreparationandSubmissionGuidelines2018.pdf>

How to Add Page Numbers in APA स्टाइल. (2020, February 25). Editarians. <https://www.editarians.com/page-numbers-in-apa-style/>

How to Cite a website in APA Style: Format & Examples. (2022, May 10). Scribbr. <https://www.scribbr.com/apa-examples/website/>

How to Create a Bell Curve Chart in Excel. <https://www.extendoffice.com/documents/excel/2404-excel-template-bell-curve-chart.html>

Margins. (n.d.) APA Style. Retrieved (2022, June 10). <https://apastyle.apa.org/style-grammar-guidelines/paper-format/margins>

Normal Skewness Range. <https://community.gooddata.com/metrics-and-maql-kb-articles-43/normality-testing-skewness-and-kurtosis-241>

Normal Kurtosis Range.

< https://www.sciencedirect.com/topics/neuroscience/kurtosis>

Paragraph Style. <https://libguides.usc.edu/APA7th/formatting>

t-test calculator. Graphpad.

<https://www.graphpad.com/quickcalcs/ttest1.cfm>

परिशिष्ट—I बाँदा का मानचित्र

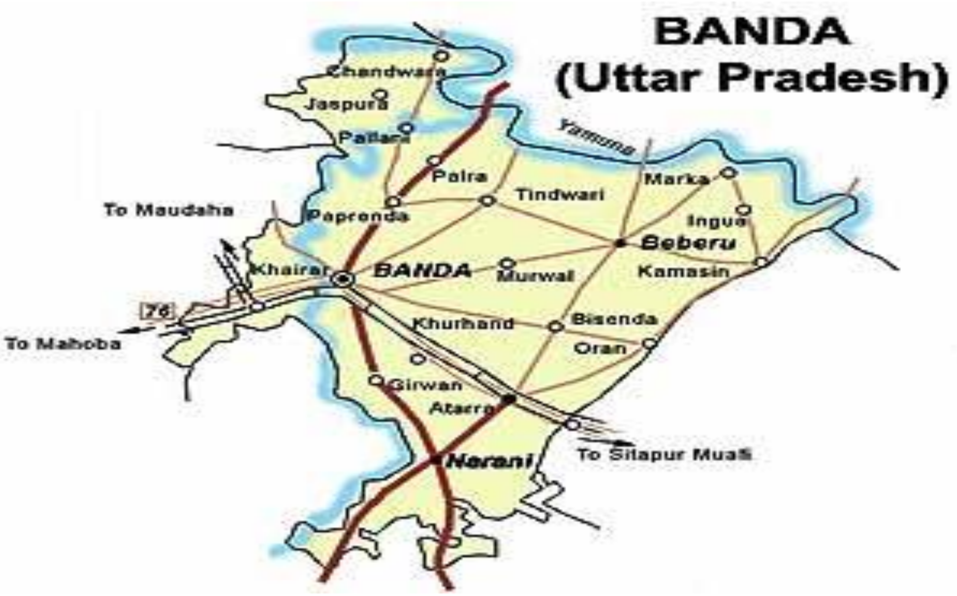

बाँदा जिले का मानचित्र

बाँदा शहर का मानचित्र

परिशिष्ट—II अध्ययन से सम्बन्धित समाचार, लेख चित्रावली

अमर उजाला

होम > उत्तर प्रदेश > बांदा > ल

पहाड़ी बाबा की अंतिम यात्रा आज सुबह

Banda Updated Sat, 29 Dec 2012 05:30 AM IST

बांदा। शांति आश्रम पहाड़ी बाबा के महंत भगवानदास महराज का शुक्रवार को निधन हो गया। शनिवार को उनकी शोभायात्रा निकाली जाएगी। भक्तों के मुताबिक पहाड़ी बाबा के नाम से प्रसिद्ध भगवानदास महराज वर्ष 1940 में यहां आए थे। भक्तों का कहना है उनकी उम्र 110 वर्ष थी। बहस्पतिवार शाम आरती-पूजन के बाद बाबा पहाड में स्थित गुफा में लेट गए। सुबह जब भक्त पहुंचे

अमर उजाला

होम > उत्तर प्रदेश > बांदा > लख

5000 दीपकों ने रोशन किया नवाब का टैंक

कानपुर ब्यूरो
Updated Fri, 28 Jun 2019 10:48 PM IST

1857 की क्रांति के पूर्व बांदा में पड़े भीषण सूखे के दौरान तत्कालीन बांदा नवाब द्वारा काम के बदले अनाज योजना की तर्ज पर खुदवाया गया ऐतिहासिक नवाब टैंक गुरुवार (27 जून) को पहली बार नये कलेवर में नजर आया।

एक तरफ सूर्य ढल रहा था तो दूसरी तरफ तालाब के चारों तरफ स्थित सभी 11 पक्के घाटों पर दीपदान के दीपकों की रोशनी बिखर रही थी। पानी में तैर रहे 5000 दीपकों ने दिवाली के दीपदान की याद ताजा कर दी। पूरे समय मंत्रोच्चारण गूंजता रहा। प्रदेश के मुख्य निर्वाचन अधिकारी एल वेंकटेश्वर लू इस आयोजन के खास मेहमान थे।

परिशिष्ट—II (जारी)

अमर उजाला

होम > उत्तर प्रदेश > बांदा

श्रीराम निवास मंदिर का अयोध्या से गहरा नाता

कानपुर ब्यूरो
Updated Sun, 02 Aug 2020 11:34 PM IST

बांदा। 'एवमस्तु करि रमानिवासा, हरसि चले कुंभज ऋषि पासा'। अरण्यकांड की यह चौपाई शहर स्थित श्री रामनिवास मंदिर की गवाह है। अयोध्या के बाद इस मंदिर में ही प्रभु राम, सीता, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न और हनुमान की प्रतिमाएं स्थापित हैं। बताया जाता है कि चित्रकूट जाते समय श्रीराम इस स्थान पर रुके थे।

शहर से लगभग चार किलोमीटर दूर रामनिवास मंदिर है। पहले यह बीहड़ क्षेत्र था। रामभक्तों की सेवा से अब यहां आसानी से पहुंचा जा सकता है। यह पौराणिक और ऐतिहासिक महत्व का मंदिर है। मान्यता है कि वनवास में चित्रकूट जाते समय श्रीराम इस मंदिर स्थल पर कुछ दिन रुके थे। वामदेव और सुतीक्षण ऋषि से मिलने के बाद प्रभु राम अगस्त ऋषि से मिलने गए थे। वामदेव ऋषि बांबेश्वर पर्वत पर निवास करते थे और ऋषि सुतीक्षण का आश्रम केन नदी तट के पास था। अगस्त ऋषि से

संजीवनी टुडे

10:53:32 AM | हिंदी | English

Home देश प्रदेश विदेश खेल मनोरंजन जीवन शैली प्रौद्यो

बांदा के बामदेव पर्वत में अद्भुत पत्थर, जिनसे निकलता है संगीत

By admin admin Sat Dec 12 2020 3:39:04 PM

बांदा। आपने रेडियो, टीवी, डीजे और मोबाइल पर गीत संगीत की धुने सुनी है डीजे पर तो अक्सर आप थिरकते होंगे। अगर यही धुने आपको विशालकाय पर्वत के पत्थरों से सुनाई पड़े तो निश्चित ही आप आश्चर्यचकित हो जाएंगे पर यह सच्चाई है। यह अद्भुत करिश्मा बांदा जनपद के बामदेवेश्वर पर्वत पर देखने और सुनने को मिल जाएगा। इस पत्थर पर पत्थर से चोट करें तो मधुर संगीत सुनाई पड़ता है जैसे कोई आधुनिक वाद्य यंत्र बजा रहा हो।

पर्वत के शिखर पर मौजूद इन पत्थरों की संख्या गिनती के हैं इसे जो भी पत्थरों से बजाता है और इसकी मधुर संगीत सुनता है तो हैरान हो जाता है। वही, वैज्ञानिक भी इस पर अपने अपने तर्क देते हैं, पर सैलानियों के लिए यह अद्भुत है इसीलिए यहां अगर कोई बामदेवेश्वर मंदिर आता है तो संगीत बिखेरने वाले इन पत्थरों पर भी पत्थर से चोट कर संगीत निकालने की कोशिश करता है।इसी पत्थर के पास हनुमान जी का मंदिर है जिसे सिद्धन कहते हैं। लोग मंदिर में दर्शन कर पत्थरों से संगीत निकालने की कोशिश करते हैं।

परिशिष्ट—II (जारी)

युग जागरण

हिन्दी एवं उर्दू भाषा में प्रकाशित एक मात्र राष्ट्रीय दैनिक !

समाचार ▾ | प्रादेशिकी ▾ | उत्तर प्रदेश ▾ | युवा-जगत ▾ | मनोरंजन ▾ | अभिमत ▾ | विचार ▾ | धर्म-संसार ▾ | विविध ▾ | हलचल

Breaking News

Home / प्रादेशिकी / उत्तर प्रदेश / बांदा / नवाब टैंक में 151 फीट ऊंचा तिरंगा लहराया

बांदा

नवाब टैंक में 151 फीट ऊंचा तिरंगा लहराया

Yug Jagran   August 16, 2021   0   175   Less than a minute

युग जागरण न्यूज नेटवर्क

बांदा। स्वतंत्रता संग्राम में अहम भूमिका निभाने वाले बांदा नवाब जुल्फिकार अली बहादुर सानी द्वारा बनवाया गया ऐतिहासिक नवाब टैंक अबकी स्वतंत्रता दिवस में आकर्षक और नए लुक में नजर आया। यहां बनाए गए अटल सरोवर में 151 फीट ऊंचाई पर राष्ट्रीय ध्वज लहराया और उसकी परछाईंध्प्रतिबिंब पानी में भी नजर आया। बांदा विकास प्राधिकरण ने नवाब टैंक के नजदीक अटल सरोवर पार्क बनाया है। इसी में 151 फीट ऊंचे पोल पर लगाए गए राष्ट्रीय ध्वज को स्वतंत्रता दिवस के मौके पर मंडलायुक्त दिनेश कुमार सिंह प्रातः 11 बजे डोरी खींचकर फहराया। इस मौके पर सिटी मजिस्ट्रेट केशवनाथ गुप्ता, सीओ राकेश कुमार सिंह,

परिशिष्ट—III ऐतिहासिक विरासत भ्रमण चित्रावली

1. पहाड़ी बाबा आश्रम

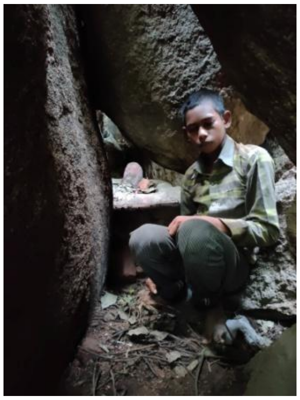

परिशिष्ट—III (जारी)

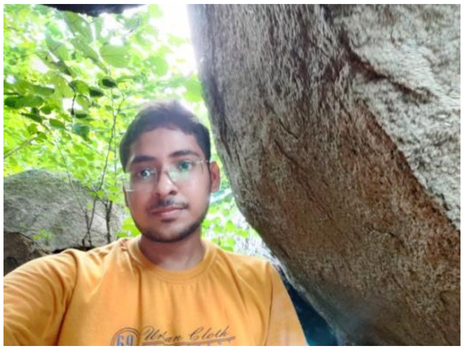

परिशिष्ट—III (जारी)

2. नवाब टैंक

परिशिष्ट—III (जारी)

3. राम निवास मन्दिर

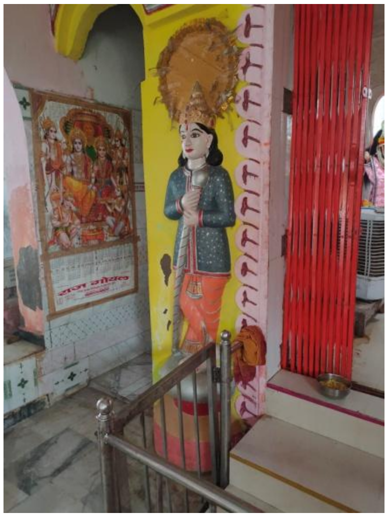

परिशिष्ट—III (जारी)

4. सिद्धन

परिशिष्ट—IV नवाब टैंक सम्बन्धी चित्रावली

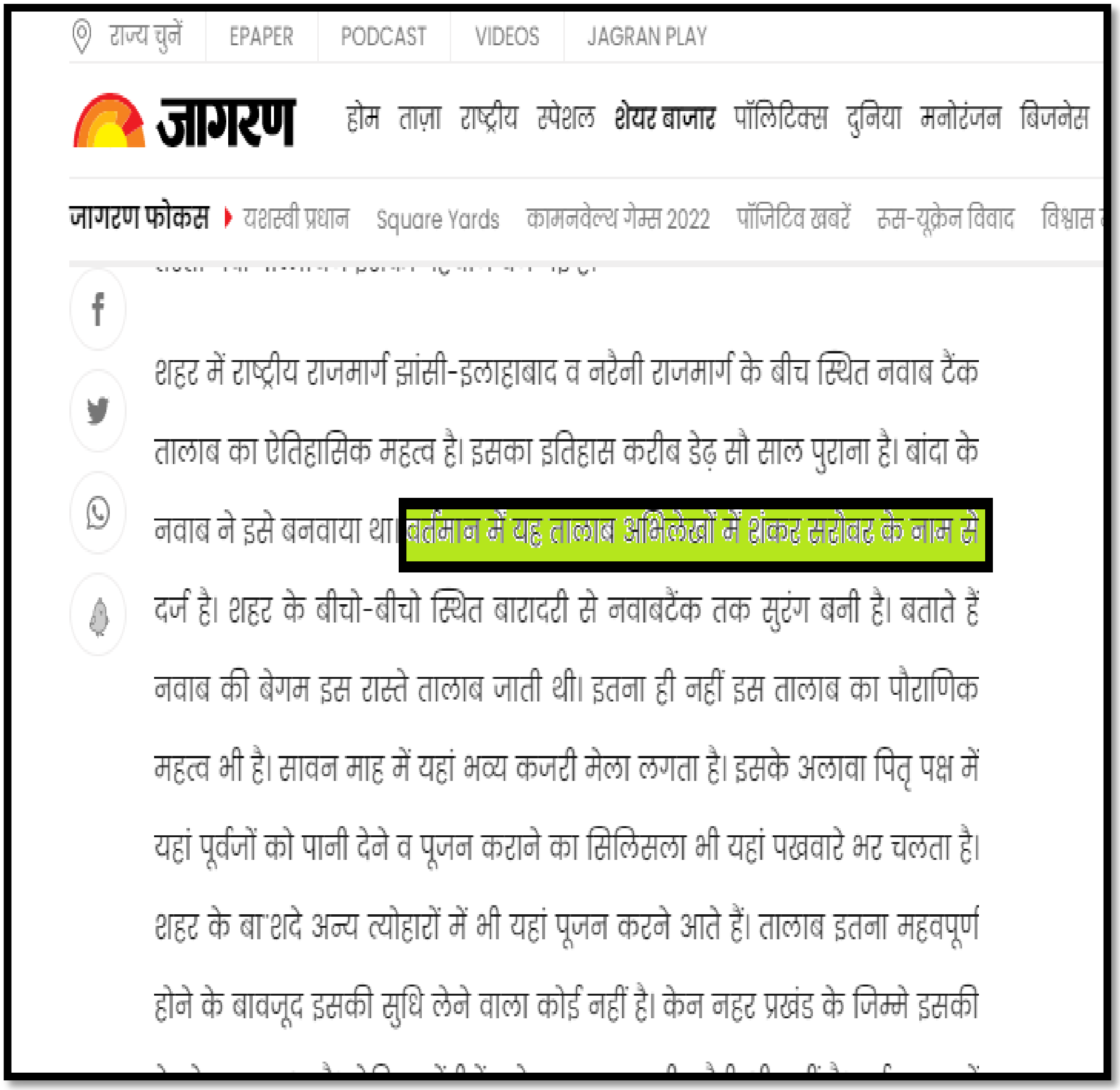

राज्य चुनें EPAPER PODCAST VIDEOS JAGRAN PLAY

जागरण होम ताज़ा राष्ट्रीय स्पेशल शेयर बाजार पॉलिटिक्स दुनिया मनोरंजन बिजनेस

जागरण फोकस यशस्वी प्रधान Square Yards कामनवेल्थ गेम्स 2022 पॉजिटिव ख़बरें रूस-यूक्रेन विवाद

शहर में राष्ट्रीय राजमार्ग झांसी-इलाहाबाद व नरैनी राजमार्ग के बीच स्थित नवाब टैंक तालाब का ऐतिहासिक महत्व है। इसका इतिहास करीब डेढ़ सौ साल पुराना है। बांदा के नवाब ने इसे बनवाया था। वर्तमान में यह तालाब अभिलेखों में शंकर सरोवर के नाम से दर्ज है। शहर के बीचो-बीचो स्थित बारादरी से नवाबटैंक तक सुरंग बनी है। बताते हैं नवाब की बेगम इस रास्ते तालाब जाती थी। इतना ही नहीं इस तालाब का पौराणिक महत्व भी है। सावन माह में यहां भव्य कजरी मेला लगता है। इसके अलावा पितृ पक्ष में यहां पूर्वजों को पानी देने व पूजन कराने का सिलिसला भी यहां पखवारे भर चलता है। शहर के बाशिंदे अन्य त्योहारों में भी यहां पूजन करने आते हैं। तालाब इतना महवपूर्ण होने के बावजूद इसकी सुधि लेने वाला कोई नहीं है। केन नहर प्रखंड के जिम्मे इसकी

परिशिष्ट—V

लघु शोध-प्रबन्ध प्रारूप

- **Website Citations as per APA 7th Edition**

Webpage
1 author
Full date

Reference entry
Slat, B. (2019, April 10). *Whales likely impacted by Great Pacific garbage patch.* The Ocean Cleanup. https://www.theoceancleanup.com/updates/whales-likely-impacted-by-great-pacific-garbage-patch/

In-text citation
Parenthetical: (Slat, 2019)
Narrative: Slat (2019)

Webpage
1 author
Full date

Reference entry
Author's Last Name, Initial(s). (Year, Month Day of publication). *Title of work.* Website. https://URL

In-text citation
Parenthetical: (Author's Last Name, Year of publication)
Narrative: Author's Last Name (Year of publication)

- **Margins**

Use 1-inch margins on every side of the page for an APA Style paper.

However, if you are writing a dissertation or thesis, your advisor or institution may specify different margins (e.g., a 1.5-inch left margin to accommodate binding).

- **Line Spacing**

2.1.3 Type -Setting, Text Processing and Printing

The text shall be printed employing laserjet or inkjet printer, the text having been processed using a standard text processor. The standard font shall be Times New Roman or Arial of 12 pts with 1.5 line spacing. हिंदी के लिए Arial Unicode MS फॉंट का आकार 14 तथा संस्कृत के लिए फॉंट का आकार 16 स्वीकार्य होगा।

- **Page Numbering**

- The first page is numbered page 1.
- Each page is numbered sequentially thereafter.
- Numbers are positioned in the header at the top right of each page.

परिशिष्ट—VI बाँदा नगर स्थित उच्च शिक्षण संस्थान

क्रम संख्या	महाविद्यालय का नाम
1.	**पण्डित जवाहरलाल नेहरू महाविद्यालय, बाँदा**
2.	**राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बाँदा**
3.	राजीव गाँधी डी० ए० वी० महाविद्यालय, बाँदा
4.	**राजा देवी पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, बाँदा**
5.	एकलव्य महाविद्यालय, दुरेड़ी, बाँदा
6.	**KCNIT, बाँदा**
7.	**R. N. Institute of Advanced Studies, Banda**
8.	बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, बाँदा
9.	राजकीय मेडिकल कॉलेज, बाँदा
10.	कृषि संस्थान,जिला परिषद, बाँदा
11.	राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान,बाँदा
12.	राजकीय पॉलिटेक्निक, बाँदा
13.	नटराज म्यूजिक कॉलेज, बाँदा

परिशिष्ट—VI (जारी)

क्रम संख्या	महाविद्यालय का नाम
14.	नालन्दा कम्प्यूटर कॉलेज,बाँदा
15.	डॉ० भीमराव अम्बेडकर महाविद्यालय, बाँदा
16.	बामदेव संस्कृत महाविद्यालय, बाँदा
17.	जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बाँदा

परिशिष्ट—VII

बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूकता प्रश्नावली का प्रथम प्रारूप

बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूकता प्रश्नावली

मार्गदर्शक **शोधार्थी**

डॉ राजीव अग्रवाल **सागर सिंह चौहान**

निम्न सूचनायें भरिये—

नाम……………………………………………………………………………………………….
पिता का नाम……………………………………………………………………………………….
लिंग………………………………………………………………………………………………….
कक्षा…………………………………………………………………………………………………
महाविद्यालय का नाम………………………………………………………………………………
दिनांक……………………………………………………………………………………………….
E mail/What's App………………………………………………………………………………...

निर्देश

प्रस्तुत प्रश्नावली विद्यार्थियों में बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूकता के अध्ययन से सम्बन्धित है। इसमें बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूकता सम्बन्धी प्रश्न दिए गये हैं। दिए गए विकल्पों में से किसी एक पर सही का चिह्न लगायें। सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं। आपके द्वारा दी गयी जानकारी केवल शोध कार्य में प्रयुक्त की जाएगी, अतः आप निष्पक्ष रूप से अपने विचार प्रकट करें।

परिशिष्ट—VII (जारी)

प्रश्नावली

प्रश्न 1: पहाड़ी बाबा आश्रम बौदा के किस मोहल्ले में स्थित है?

(अ) निम्नीपार

(ब) कैलाशपुरी

(स) खिन्नीनाका

(द) कटरा

प्रश्न 2:राम निवास मन्दिर बाँदा के किस मोहल्ले में स्थित है?

(अ) निम्नीपार

(ब) कैलाशपुरी

(स) खिन्नीनाका

(द) कटरा

प्रश्न 3: सिद्धन मन्दिर बाँदा के किस मोहल्ले में स्थित है?

(अ) निम्नीपार

(ब) कैलाशपुरी

(स) खिन्नीनाका

(द) कटरा

प्रश्न 4: नवाब टैंक स्थित सुरंग कहाँ जाती है?

(अ) निम्नीपार (स) खिन्नीनाका

(ब) कैलाशपुरी (द) बारादरी

परिशिष्ट—VII (जारी)

प्रश्न 5: नवाब टैंक की स्थापना लगभग कितने वर्ष पूर्व हुई थी ?

(अ) 50-100 वर्ष पूर्व

(ब) 100-150 वर्ष पूर्व

(स) 150-200 वर्ष पूर्व

(द) 200-250 वर्ष पूर्व

प्रश्न 6: पहाड़ी बाबा आश्रम की स्थापना लगभग कितने वर्ष पूर्व हुई थी?

(अ) 50-100 वर्ष पूर्व

(ब) 100-150 वर्ष पूर्व

(स) 150-200 वर्ष पूर्व

(द) 200-250 वर्ष पूर्व

प्रश्न 7: राम निवास मन्दिर की स्थापना (निर्माण) लगभग कितने वर्ष पूर्व हुई?

(अ) 50-100 वर्ष पूर्व

(ब) 100-150 वर्ष पूर्व

(स) 150-200 वर्ष पूर्व

(द) 200-250 वर्ष पूर्व

प्रश्न 8: पहाड़ी बाबा आश्रम में किसकी स्वयंभू मूर्ति स्थापित है?

(अ) रामचन्द्र जी (स) हनुमान जी

(ब) शंकर जी (द) विष्णु जी

परिशिष्ट—VII (जारी)

प्रश्न 9:राम निवास मन्दिर में किस भगवान की पूजा की जाती है?

(अ) राम (रामदरबार)

(ब) शंकर जी

(स) विष्णु जी

(द) ब्रह्मा जी

प्रश्न 10: सिद्धन में किसकी मूर्ति स्थापित है?

(अ) राम जी

(ब) हनुमान जी

(स) शंकर जी

(द) ब्रह्मा जी

प्रश्न 11: नवाब टैंक का निर्माण किसने करवाया था?

(अ) नवाब गुलाम अली

(ब) नवाब अली बहादुर सानी

(स) नवाब ज़ुल्फिकार अली

(द) नवाब शादाब अली बहादुर

प्रश्न 12: नवाब टैंक को अभिलेखों में किस नाम से जाना जाता है?

(अ) राम सरोवर (स) शंकर सरोवर

(ब) हनुमान सरोवर (द) विष्णु सरोवर

परिशिष्ट—VII (जारी)

प्रश्न 13: पहाड़ी बाबा आश्रम में मेले का आयोजन किस माह किया जाता है?

(अ) आषाढ़

(ब) सावन

(स) वैशाख

(द) चैत्र

प्रश्न 14: राम निवास मन्दिर में मेले का आयोजन कब किया जाता है?

(अ) हनुमान जयन्ती

(ब) रामनवमी

(स) गुरु पूर्णिमा

(द) सावन

प्रश्न 15: कजली मेला कहाँ आयोजित होता है?

(अ) नवाब टैंक

(ब) पहाड़ी बाबा आश्रम

(स) राम निवास मन्दिर

(द) सिद्धन

प्रश्न 16: सिद्धन पहुँचने के लिए लगभग कितनी सीढ़ियाँ चढ़नी होती हैं?

(अ) 72 (स) 227

(ब) 152 (द) 501

परिशिष्ट—VII (जारी)

प्रश्न 17: पहाड़ी बाबा आश्रम में प्रमुख मन्दिर तक पहुँचने के लिए लगभग कितनी सीढ़ियाँ चढ़नी होती हैं?

(अ) 72

(ब) 152

(स) 227

(द) 501

प्रश्न 18: बाँदा रेलवे स्टेशन से सिद्धन की दूरी है ?

(अ) 1.3 km

(ब) 1.6 km

(स) 2.1 km

(द) 3 km

प्रश्न 19: बाँदा रेलवे स्टेशन से राम निवास मन्दिर की दूरी है ?

(अ) 1.3 km

(ब) 1.6 km

(स) 2.1 km

(द) 3 km

प्रश्न 20: बाँदा रेलवे स्टेशन से पहाड़ी बाबा आश्रम की दूरी है?

(अ) 1.3 km (स) 2.1 km

(ब) 1.6 km (द) 3 km

परिशिष्ट—VII (जारी)

प्रश्न 21: नवाब टैंक की बौदा रेलवे स्टेशन से इरी है ?

(अ) 1.3 km

(ब) 1.6 km

(स) 2.1 km

(द) 3 km

प्रश्न 22: पहाड़ी बाबा आश्रम को अन्य किस नाम से जाना जाता है?

(अ) गौरा बाबा

(ब) महुअर बाबा

(स) बाराखेड़ा बाबा

(द) सिद्धबाबा

प्रश्न 23: किस महन्त के नाम पर पहाड़ी बाबा आश्रम को जाना जाता है?

(अ) श्री भगवानदास जी महाराज

(ब) श्री बलराम दास जी महाराज

(स) श्री रामप्यारे दास जी महाराज

(द) श्री नृत्यगोपाल दास जी महाराज

प्रश्न 24: पहाड़ी बाबा आश्रम में प्रतिवर्ष बड़ा भण्डारा कब आयोजित होता है?

(अ) 27 दिसम्बर (स) 29 दिसम्बर

(ब) 28 दिसम्बर (द) 30 दिसम्बर

परिशिष्ट—VII (जारी)

प्रश्न 25: बजने वाले पत्थर कहाँ स्थित है?

(अ) नवाब टैंक

(ब) पहाड़ी बाबा आश्रम

(स) राम निवास मन्दिर

(द) सिद्धन

प्रश्न 26: सिद्धन के निकटतम मन्दिर है ?

(अ) राम निवास मन्दिर

(ब) पहाड़ी बाबा आश्रम

(स) बनका बिहारी

(द) बाम्बेश्वर

प्रश्न 27: राम निवास मन्दिर में श्रीराम ने कितने समय तक विश्राम किया?

(अ) एक दिन

(ब) एक सप्ताह

(स) एक मास

(द) एक वर्ष

प्रश्न 28: सिद्धन जाने हेतु कितने मार्ग हैं?

(अ) 1 (स) 3

(ब) 2 (द) 4

परिशिष्ट—VII (जारी)

प्रश्न 29: सूर्य दर्शन स्थल कहाँ स्थित है?

(अ) नवाब टैंक

(ब) पहाड़ी बाबा आश्रम

(स) राम निवास मन्दिर

(द) सिद्धन

प्रश्न 30: सिद्धन मन्दिर से सूर्य दर्शन स्थल तक जाने के लिए कितनी सीढ़ियाँ हैं?

(अ) 17

(ब) 50

(स) 76

(द) 152

प्रश्न 31: लहराता राष्ट्रीय ध्वज कहाँ की विशेषता है ?

(अ) नवाब टैंक

(ब) पहाड़ी बाबा आश्रम

(स) राम निवास मन्दिर

(द) सिद्धन

प्रश्न 31: नवाब टैंक में स्थित राष्ट्रीय ध्वज की ऊँचाई लगभग कितनी है?

(अ) 50 Feet

(ब) 100 feet

(स) 150 feet

(द) 200 feet

परिशिष्ट—VII (जारी)

प्रश्न 32: वन चेतना पार्क किसके समीप स्थित है?

(अ) नवाब टैंक

(ब) पहाड़ी बाबा आश्रम

(स) राम निवास मन्दिर

(द) सिद्धन

प्रश्न 33: साहसिक गुफा (जहाँ से निकलना साहस का कार्य है) कहाँ स्थित है?

(अ) नवाब टैंक

(ब) पहाड़ी बाबा आश्रम

(स) राम निवास मन्दिर

(द) सिद्धन

प्रश्न 34: बाँदा रेलवे स्टेशन के निकटतम स्थल है?

(अ) नवाब टैंक

(ब) पहाड़ी बाबा आश्रम

(स) राम निवास मन्दिर

(द) सिद्धन

प्रश्न 35: चन्देलकालीन मन्दिर कहाँ स्थित है?

(अ) नवाब टैंक (स) राम निवास मन्दिर

(ब) पहाड़ी बाबा आश्रम (द) सिद्धन

परिशिष्ट—VII (जारी)

प्रश्न 36: सर्वाधिक ऊँचाई पर स्थित है?

(अ) नवाब टैंक

(ब) पहाड़ी बाबा आश्रम

(स) राम निवास मन्दिर

(द) सिद्धन

प्रश्न 37: बामदेश्वर मन्दिर के समीप स्थित है?

(अ) नवाब टैंक

(ब) पहाड़ी बाबा आश्रम

(स) राम निवास मन्दिर

(द) सिद्धन

प्रश्न 38: निम्न चित्र को पहचानिए—

(अ) प्रागी तालाब

(ब) नवाब टैंक

(स) छाबी तालाब

(द) बाबा तालाब

परिशिष्ट—VII (जारी)

प्रश्न 39: पहाड़ी बाबा आश्रम स्थित इस वृक्ष को पहचानिए—

(अ) पाकड़

(ब) पीपल

(स) बरगद

(द) दूधी

प्रश्न 40: यह प्राकृतिक शिवलिंग कहाँ स्थित है?

(अ) नवाब टैंक

(ब) पहाड़ी बाबा आश्रम

(स) राम निवास मन्दिर

(द) सिद्धन

प्रश्न 41: यह मूर्ति कहाँ स्थित है?

(अ) नवाब टैंक

(ब) पहाड़ी बाबा आश्रम

(स) राम निवास मन्दिर

(द) सिद्धन

परिशिष्ट—VII (जारी)

प्रश्न 43: यह (चिकनी पथरिया) कहाँ स्थित है?

(अ) नवाब टैंक

(ब) पहाड़ी बाबा आश्रम

(स) राम निवास मन्दिर

(द) सिद्धन

प्रश्न 44: यह मन्दिर कहाँ स्थित है ?

(अ) नवाब टैंक

(ब) पहाड़ी बाबा आश्रम

(स) राम निवास मन्दिर

(द) सिद्धन

प्रश्न 45: यह हनुमान मूर्ति कहाँ स्थित है?

(अ) नवाब टैंक

(ब) पहाड़ी बाबा आश्रम

(स) राम निवास मन्दिर

(द) सिद्धन

परिशिष्ट—VIII जागरूकता प्रश्नावली का अन्तिम प्रारूप

बाँदा की कतिपय ऐतिहासिक विरासतों के प्रति विद्यार्थियों में जागरूकता प्रश्नावली

प्रस्तुत प्रश्नावली विद्यार्थियों में बाँदा की कतिपय ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूकता के अध्ययन से सम्बन्धित है। इसमें बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूकता सम्बन्धी प्रश्न/ कथन दिए गए हैं। दिए गए विकल्पों में से किसी एक पर सही(✓)का चिन्ह लगायें। आपके द्वारा दी गई जानकारी केवल शोधकार्य में प्रयुक्त की जाएगी, अतः आप निष्पक्ष रूप से अपने विचार प्रकट करें।

* Required

1. नाम– *

   ____

2. पिता का नाम– *

   ____

3. आयु– *

   ____

4. कक्षा– *

   ____

5. विद्यालय (कॉलेज) का नाम– *

   ____

6. Email/WhatsApp number– *

   ____

परिशिष्ट—VIII (जारी)

7. पहाड़ी बाबा आश्रम बाँदा के किस मोहल्ले में स्थित है? * 1 point

Mark only one oval.

- निम्नीपार
- कैलाशपुरी
- खिन्नीनाका
- कटरा

8. राम निवास मन्दिर बाँदा के किस मोहल्ले में स्थित है? * 1 point

Mark only one oval.

- निम्नीपार
- कैलाशपुरी
- खिन्नीनाका
- कटरा

9. सिद्धन बाँदा के किस मोहल्ले में स्थित है? * 1 point

Mark only one oval.

- निम्नीपार
- कैलाशपुरी
- खिन्नीनाका
- कटरा

10. पहाड़ी बाबा आश्रम में किसकी स्वयंभू मूर्ति स्थापित है? * 1 point

Mark only one oval.

- श्री राम
- शंकर जी
- हनुमान जी
- विष्णु जी

परिशिष्ट—VIII (जारी)

11. सिद्धन में किसकी मूर्ति स्थापित है? * 1 point

Mark only one oval.

- ⬭ श्री राम
- ⬭ शंकर जी
- ⬭ हनुमान जी
- ⬭ विष्णु जी

12. नवाब टैंक का निर्माण किसने करवाया था? * 1 point

Mark only one oval.

- ⬭ नवाब गुलाम अली
- ⬭ नवाब अली बहादुर सानी
- ⬭ नवाब जुल्फिकार अली
- ⬭ नवाब शादाब अली बहादुर

13. नवाब टैंक को अभिलेखों में किस नाम से जाना जाता है? * 1 point

Mark only one oval.

- ⬭ राम सरोवर
- ⬭ शंकर सरोवर
- ⬭ हनुमान सरोवर
- ⬭ विष्णु सरोवर

14. पहाड़ी बाबा आश्रम में मेले का आयोजन किस माह किया जाता है? * 1 point

Mark only one oval.

- ⬭ आषाढ़
- ⬭ सावन
- ⬭ चैत्र
- ⬭ वैशाख

परिशिष्ट—VIII (जारी)

15. राम निवास मन्दिर में मेले का आयोजन कब किया जाता है? * 1 point

Mark only one oval.

- गुरु पूर्णिमा
- सावन
- हनुमान जयन्ती
- रामनवमी

16. कजली मेले का आयोजन कहाँ किया जाता है? * 1 point

Mark only one oval.

- पहाड़ीबाबा आश्रम
- राम निवास मन्दिर
- सिद्धन
- नवाब टैंक

17. सिद्धन पहुँचने के लिए लगभग कितनी सीढ़ियाँ चढ़नी होती हैं? * 1 point

Mark only one oval.

- 72
- 152
- 227
- 501

18. पहाड़ी बाबा आश्रम में प्रमुख मन्दिर तक पहुँचने के लिए कितनी सीढ़ियाँ चढ़नी होती हैं? * 1 point

Mark only one oval.

- 72
- 152
- 227
- 501

परिशिष्ट—VIII (जारी)

19. बजने वाले पत्थर कहाँ स्थित हैं? * 1 point

Mark only one oval.

- पहाड़ी बाबा आश्रम
- सिद्धन
- राम निवास मन्दिर
- नवाब टैंक

20. सूर्य दर्शन स्थल कहाँ स्थित है? * 1 point

Mark only one oval.

- राम निवास मन्दिर
- पहाड़ी बाबा आश्रम
- सिद्धन
- नवाब टैंक

21. नवाब टैंक में स्थित राष्ट्रीय ध्वज की ऊँचाई लगभग कितनी है? * 1 point

Mark only one oval.

- 50 feet
- 100 feet
- 150 feet
- 200 feet

22. सर्वाधिक ऊँचाई पर स्थित है– * 1 point

Mark only one oval.

- पहाड़ी बाबा आश्रम
- राम निवास मन्दिर
- सिद्धन
- नवाब टैंक

परिशिष्ट—VIII (जारी)

23. जल शोधन केन्द्र कहाँ स्थित है? * 1 point

Mark only one oval.

- पहाड़ी बाबा आश्रम
- राम निवास मन्दिर
- सिद्धन
- नवाब टैंक

24. साहसिक गुफा (जहाँ से निकलना साहस का कार्य है) कहाँ स्थित है? * 1 point

Mark only one oval.

- पहाड़ी बाबा आश्रम
- राम निवास मंदिर
- सिद्धन
- नवाब टैंक

25. चन्देल कालीन मन्दिर कहाँ स्थित है? * 1 point

Mark only one oval.

- पहाड़ी बाबा आश्रम
- राम निवास मन्दिर
- सिद्धन
- नवाब टैंक

26. राम निवास मन्दिर में श्रीराम ने कितने समय तक विश्राम किया? * 1 point

Mark only one oval.

- 1 दिन
- 1 सप्ताह
- 1 माह
- 1 वर्ष

परिशिष्ट—VIII (जारी)

27. बामदेवेश्वर मन्दिर के समीप स्थित है? * 1 point

Mark only one oval.

- पहाड़ी बाबा आश्रम
- सिद्धन
- राम निवास मन्दिर
- नवाब टैंक

28. वन चेतना पार्क किसके समीप स्थित है ? * 1 point

Mark only one oval.

- पहाड़ी बाबा आश्रम
- सिद्धन
- राम निवास मन्दिर
- नवाब टैंक

29. पहाड़ी बाबा आश्रम को अन्य किस नाम से जाना जाता है? * 1 point

Mark only one oval.

- गौरा बाबा
- महुअर बाबा
- बाराखेड़ा बाबा
- सिद्ध बाबा

30. बाँदा रेलवे स्टेशन के निकटतम स्थल है? * 1 point

Mark only one oval.

- पहाड़ी बाबा आश्रम
- सिद्धन
- राम निवास मन्दिर
- नवाब टैंक

परिशिष्ट—VIII (जारी)

31. सिद्धन जाने हेतु कितने मार्ग हैं? * 1 point

Mark only one oval.

- 1
- 2
- 3
- 4

32. निम्न चित्र को पहचानिए– * 1 point

Mark only one oval.

- प्रागी तालाब
- छाबी तालाब
- नवाब टैंक
- बाबा तालाब

परिशिष्ट—VIII (जारी)

33. पहाड़ी बाबा आश्रम स्थिति इस वृक्ष को पहचानिए– * 1 point

Mark only one oval.

- पाकड़
- पीपल
- बरगद
- दूधी

परिशिष्ट—VIII (जारी)

34. यह प्राकृतिक शिवलिंग कहाँ स्थित है? * 1 point

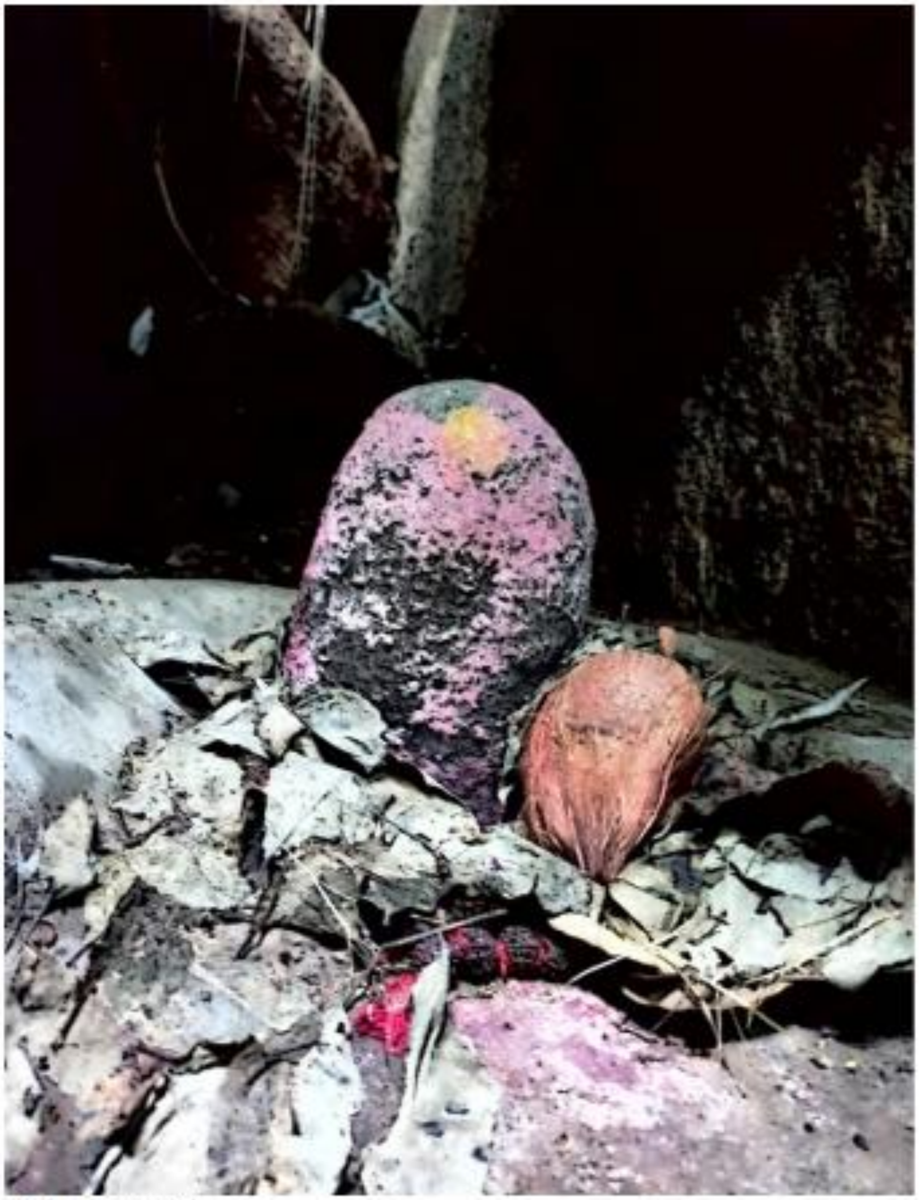

Mark only one oval.

- ( ) पहाड़ी बाबा आश्रम
- ( ) राम निवास मन्दिर
- ( ) सिद्धन
- ( ) नवाब टैंक

परिशिष्ट—VIII (जारी)

35. यह मूर्ति कहाँ स्थित है? *

Mark only one oval.

- पहाडी बाबा आश्रम
- राम निवास मन्दिर
- सिद्धन
- नवाब टैंक

परिशिष्ट—VIII (जारी)

36. यह हनुमान मूर्ति कहाँ स्थित है? * 1 point

Mark only one oval.

- पहाड़ी बाबा आश्रम
- सिद्धन
- राम निवास मन्दिर
- नवाब टैंक

परिशिष्ट—VIII (जारी)

37. यह दृश्य कहाँ का है? * 1 point

Mark only one oval.

- पहाड़ी बाबा आश्रम
- राम निवास मन्दिर
- सिद्धन
- नवाब टैंक

38. यह चिकनी पथरिया कहाँ स्थित है? 1 point

Mark only one oval.

- पहाड़ी बाबा आश्रम
- राम निवास मन्दिर
- सिद्धन
- नवाब टैंक

परिशिष्ट—VIII (जारी)

39. यह मन्दिर कहाँ स्थित है? * 1 point

Mark only one oval.

- ⬭ पहाड़ी बाबा आश्रम
- ⬭ राम निवास मन्दिर
- ⬭ सिद्धन
- ⬭ नवाब टैंक

परिशिष्ट—IX परीक्षण प्रशासन चित्रावली

विभागाध्यक्ष, शिक्षक-शिक्षा विभाग, राजा देवी डिग्री कॉलेज (बाँदा)

शिक्षकगण, राजा देवी डिग्री कॉलेज (बाँदा)

परिशिष्ट—IX (जारी)

प्रश्नावली भरते हुए विद्यार्थी

प्रश्नावली भरते हुए विद्यार्थी

परिशिष्ट—X जागरूकता प्रश्नावली उत्तरमाला

प्रश्न संख्या	प्रश्न	उत्तर
1.	पहाड़ी बाबा आश्रम बाँदा के किस मोहल्ले में स्थित है?	निम्नीपार
2.	राम निवास मन्दिर बाँदा के किस मोहल्ले में स्थित है?	निम्नीपार
3.	सिद्धन बाँदा के किस मोहल्ले में स्थित है?	कैलाशपुरी
4.	पहाड़ी बाबा आश्रम में किसकी स्वयंभू मूर्ति स्थापित है?	हनुमान जी
5.	सिद्धन में किसकी मूर्ति स्थापित है?	हनुमान जी
6.	नवाब टैंक का निर्माण किसने करवाया था?	नवाब जुल्फिकार अली
7.	नवाब टैंक को अभिलेखों में किस नाम से जाना जाता है?	शंकर सरोवर
8.	पहाड़ी बाबा आश्रम में मेले का आयोजन किस माह किया जाता है?	आषाढ़
9.	राम निवास मन्दिर में मेले का आयोजन कब किया जाता है?	रामनवमी
10.	कजली मेले का आयोजन कहाँ किया जाता है?	नवाब टैंक
11.	सिद्धन पहुँचने के लिए लगभग कितनी सीढ़ियाँ चढ़नी होती हैं?	227
12.	पहाड़ी बाबा आश्रम में प्रमुख मन्दिर तक पहुँचने के लिए कितनी सीढ़ियाँ चढ़नी होती हैं?	72

परिशिष्ट—X (जारी)

प्रश्न संख्या	प्रश्न	उत्तर
13.	बजने वाले पत्थर कहाँ स्थित हैं?	सिद्धन
14.	सूर्य दर्शन स्थल कहाँ स्थित हैं?	सिद्धन
15.	नवाब टैंक में स्थित राष्ट्रीय ध्वज की ऊँचाई लगभग कितनी है?	150 feet
16.	सर्वाधिक ऊँचाई पर स्थित है?	सिद्धन
17.	जल शोधन केन्द्र कहाँ स्थित है?	सिद्धन
18.	साहसिक गुफा (जहाँ से निकलना साहस का कार्य है) कहाँ स्थित है?	सिद्धन
19.	चन्देल कालीन मन्दिर कहाँ स्थित है?	पहाड़ी बाबा आश्रम
20.	राम निवास मन्दिर में श्रीराम ने कितने समय तक विश्राम किया?	1 दिन
21.	बामदेवेश्वर मन्दिर के समीप स्थित है?	सिद्धन
22.	वन चेतना पार्क किसके समीप स्थित है?	नवाब टैंक
23.	पहाड़ी बाबा आश्रम को अन्य किस नाम से जाना जाता है?	बाराखेड़ा बाबा
24.	बाँदा रेलवे स्टेशन के निकटतम स्थल है?	सिद्धन
25.	सिद्धन जाने हेतु कितने मार्ग हैं?	3
26.	निम्न चित्र को पहचानिए—	नवाब टैंक
27.	पहाड़ी बाबा आश्रम स्थित इस वृक्ष को पहचानिए—	पाकड़
28.	यह प्राकृतिक शिवलिंग कहाँ स्थित हैं?	पहाड़ी बाबा आश्रम
29.	यह मूर्ति कहाँ स्थित है?	राम निवास मन्दिर

परिशिष्ट—X (जारी)

प्रश्न संख्या	प्रश्न	उत्तर
30.	यह हनुमान मूर्ति कहाँ स्थित है?	पहाड़ी बाबा आश्रम
31.	यह दृश्य कहाँ का है?	राम निवास मन्दिर
32.	यह चिकनी पथरिया कहाँ स्थित है?	पहाड़ी बाबा आश्रम
33.	यह मन्दिर कहाँ स्थित है?	पहाड़ी बाबा आश्रम

परिशिष्ट—XI E-brochure

पहाड़ी बाबा आश्रम

बाँदा, उत्तर प्रदेश

बुन्देलखण्ड की धरा पर अनेक पौराणिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक सन्दर्भ यत्र-तत्र बिखरे हुए हैं। इन्हीं में से एक महत्वपूर्ण स्थल है—पहाड़ी बाबा आश्रम। पहाड़ी बाबा आश्रम, बाँदा शहर में निम्नीपार

मोहल्ले में एक निर्जन स्थान पर अवस्थित है। यह बाँदा के प्रमुख धार्मिक स्थलों में से एक है, जिसका ऐतिहासिक महत्व भी है।

ऐतिहासिक कथानक—

पहाड़ी बाबा आश्रम बाँदा शहर का एक बड़ा ही प्राचीन धार्मिक स्थल है। इस आश्रम के परिसर में स्थित शिव मन्दिर के विषय में ऐसी मान्यता है कि इसका निर्माण चन्देल राजाओं द्वारा करवाया गया था। कहा जाता है कि

अजयगढ़ के महाराजा छत्रसाल के वंशजों में से किसी एक ने इस मन्दिर का निर्माण करवाया था। इस मन्दिर के समीप ही राजा बाग एवं राजा का महल स्थित है। इस आश्रम में हनुमान जी की स्वयंभू मूर्ति स्थापित है। मान्यता है कि यह मूर्ति स्वयं प्रकट हुई थी, जिसके बाद यहाँ पर मन्दिर का निर्माण कराया गया।

स्थापना—

माना जाता है कि आश्रम की स्थापना आज से लगभग 200 वर्ष पूर्व हुई थी। स्थापना के समय यहाँ बहुत छोटा सा मन्दिर था किन्तु वर्तमान में इसका बहुत विस्तार हो चुका है, जिसका श्रेय स्वर्गीय महन्त श्री भगवानदास जी को जाता है।

बाहरी चहारदीवारी—

सम्पूर्ण आश्रम को ऊँची दीवारों से चारों तरफ से घेरा गया है, ताकि आश्रम असामाजिक तत्वों एवं अन्ना पशुओं से सुरक्षित रहे।

प्रवेश द्वार—

आश्रम का प्रवेश द्वार उत्तर दिशा की ओर स्थित है। इस द्वार से होकर श्रद्धालु आश्रम के अन्दर प्रवेश करते हैं।

सत्ती-सत्ता मन्दिर—

आश्रम में प्रवेश करने के उपरान्त हमारे समक्ष सर्वप्रथम सत्ती-सत्ता मन्दिर आते हैं। इन मन्दिरों की बनावट एक जैसी है, इसलिए इन्हें जुड़वा मन्दिरों की संज्ञा भी दी जाती है।

सुन्दर फुलवारी—

आश्रम परिसर में प्रवेश द्वार से प्रवेश करते ही मार्ग के दोनों तरफ सुन्दर-सुन्दर फुलवारी लगी हुई हैं, जो श्रद्धालुओं के मन को भाव-विभोर कर देती हैं।

सीढ़ियाँ—

प्रवेश द्वार से अन्दर बढ़ने पर मुख्य मन्दिर तक जाने हेतु सीढ़ियाँ मिलती हैं। इनकी संख्या 72 है।

विश्राम स्थल—

आश्रम की सीढ़ियों से ऊपर जाने पर विश्राम स्थल बना हुआ है, जहाँ पर बैठकर श्रद्धालु गण विश्राम कर सकते हैं।

वट वृक्ष एवं चबूतरा—

सीढ़ियों से ऊपर चढ़ने पर हमें एक वट वृक्ष दिखायी पड़ता है, जिसके चारों ओर चबूतरा बना है। इस वट वृक्ष के साथ में शिवलिंग रखे हुए हैं। श्रद्धालुगण सर्वप्रथम यहाँ मत्था टेकते हैं, उसके बाद आश्रम में प्रवेश करते हैं।

मुख्य मन्दिर—

आश्रम का मुख्य मन्दिर एक छोटी पहाड़ी पर स्थित है। इस मन्दिर में हनुमान जी की स्वयंभू मूर्ति स्थापित है। यह मन्दिर उन कुछ चुनिंदा मन्दिरों में से है; जहाँ पर हनुमान जी, माता अञ्जनी एवं पिता केसरी के साथ विद्यमान हैं।

महन्त जी की मूर्ति—

आश्रम परिसर में ही मुख्य मन्दिर के सम्मुख महन्त स्वर्गीय श्री भगवान दास जी महाराज जी की मूर्ति स्थापित है, जिन्होंने इस आश्रम को वर्तमान स्वरूप प्रदान किया था। इस आश्रम को पहाड़ी बाबा इन्हीं के नाम से जाना जाता है।

महन्त जी की कुटिया—

मुख्य मन्दिर के बगल में ही महन्त जी की कुटिया बनी हुई है, जहाँ पर आश्रम के महन्त जी निवास करते हैं।

पाकड़ वृक्ष—

आश्रम में पाकड़ वृक्ष स्थित है, जो कि एक हरीशंकरी पौधा (पीपल, बरगद,पाकड़) है। इस वृक्ष का अत्यधिक धार्मिक एवं औषधीय महत्व है। रामायण तथा अन्य धार्मिक ग्रन्थों में इस वृक्ष का वर्णन है। मत्स्य पुराण के अनुसार इसे वन-वृक्षों का अधिपति बताया गया था, गौरूपी पृथ्वी को दुहने के समय यह वृक्षों के लिए बछड़ा बना था। नारद पुराण के अनुसार ब्रह्मा ने विश्व में साम्राज्यों का बटवारा करते समय पाकड़ को वनस्पतियों का राजा नियुक्त किया। यज्ञ कर्म के लिए इस वृक्ष की छाया श्रेष्ठ मानी जाती है।

औषधीय दृष्टि से यह शीतल एवं व्रण, दाह, पित्त, कफ, रक्त विकार, शोथ एवं रक्तपित्त को दूर करने वाला है।

प्राकृतिक शिवलिंग—

आश्रम के मुख्य मन्दिर के समीप ही चट्टानों के बीच एक प्राकृतिक शिवलिंग स्थापित है, जहाँ तक पहुँचना अत्यन्त रोमाञ्चकारी है।

महन्त जी की समाधि—

आश्रम परिसर में ही आश्रम के मुख्य महन्त जी की समाधि बनी हुई है, जिसके दर्शन करके साधु सन्त खुद को धन्य महसूस करते हैं।

ध्यानशिला—

महन्त जी की समाधि के पास एक ध्यानशिला दिखायी देती है। इस ध्यानशिला पर पहुँचकर ध्यान करना अपने आप में एक विलक्षण अनुभव है। ध्यानशिला से आस-पास का अत्यन्त मनोरम दृश्य दिखायी पड़ता है।

प्राचीन तालाब—

महन्त जी की समाधि के पास एक छोटा सा तालाब बना हुआ है, जिसका प्रयोग आश्रम की स्थापना के समय में जलापूर्ति के लिए किया जाता था परन्तु वर्तमान समय में इस तालाब का प्रयोग नहीं किया जाता है।

प्राचीन शिव मन्दिर—

आश्रम की चहारदीवारी से लगा हुआ प्राचीन शिव मन्दिर स्थित है। इस मन्दिर का इतिहास बड़ा ही पुराना है। लोगों का मानना है कि इस मन्दिर का निर्माण चन्देल राजाओं द्वारा करवाया गया था। इस मन्दिर में नवविवाहितों के मत्था टेकने की बड़ी परम्परा है।

प्राचीन हनुमान मन्दिर—

शिव मन्दिर के साथ में ही प्राचीन हनुमान मन्दिर भी स्थित है। इसका निर्माण भी चन्देल राजाओं द्वारा कराया गया था। श्रद्धालुओं के मन में इस मन्दिर के प्रति बड़ी आस्था है।

प्राचीन वट वृक्ष—

हनुमान मन्दिर के सम्मुख प्राचीन वटवृक्ष हैं, जो लगभग 200 वर्ष पुराने हैं। इन वृक्षों का धार्मिक महत्व बहुत है। वट सावित्री व्रत (बरगदहाई अमावस्या) के दिन महिलाएँ इनकी पूजा-अर्चना करती हैं, परिक्रमा लगाती हैं और अपने सुहाग की लम्बी उम्र का वरदान माँगती हैं।

प्राचीन कूप—

आश्रम परिसर में ही एक प्राचीन कूप स्थित है। यहाँ आने वाले श्रद्धालुगण वटवृक्ष की छांव में बैठकर कूप का ठण्डा जल पीकर तृप्त होते हैं। श्रद्धालुओं द्वारा मन्दिर में दर्शन करने से पूर्व कूप के ठण्डे जल से स्नान करने का बड़ा महत्व है।

चिकनी पथरिया—

आश्रम परिसर में स्थित चिकनी पथरिया पर फिसलने में श्रद्धालुओं को बड़ा ही मनोरञ्जक लगता है, साथ ही लोगों की मान्यता है कि नवविवाहित जोड़ों के इसमें फिसलने से उनके बीच प्रेम बढ़ता है।

पश्चिमी द्वार—

आश्रम के पश्चिम दिशा में एक द्वार स्थित है। इस द्वार से निकलकर बुद्धराम कुआँ आश्रम में जाया जा सकता है परन्तु यह द्वार सदा बन्द ही रहता है। इस द्वार को भण्डारे के आयोजन के समय खोला जाता है।

प्राकृतिक सौन्दर्य—

आश्रम के चारों तरफ प्राकृतिक सौन्दर्य है। वर्षा ऋतु में यहाँ का दृश्य किसी को भी मन्त्रमुग्ध कर सकता है। आश्रम से बाम्बेश्वर पर्वत का मनोरम दृश्य भी दिखायी पड़ता है।

वनस्पतियाँ—

आश्रम परिसर में कई तरह की औषधीय गुणों से युक्त वनस्पतियाँ पायी जाती हैं, जिसमें पत्थरचट्टा, सियार बैठका, दूधी, हुर-हुर आदि प्रमुख हैं।

मेला—

आश्रम में गुरु पूर्णिमा के दिन मेले का आयोजन किया जाता है, जिसमें श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ती है।

भण्डारा—

आश्रम में **पहाड़ी बाबा** के नाम से विख्यात स्वर्गीय श्री भगवान दास जी महाराज की पुण्यतिथि 29 दिसम्बर को विशाल भण्डारे का आयोजन होता है, जिसमें देश भर से अनेक साधु सन्त एवं भक्तगण सम्मिलित होते हैं। यह भण्डारा इतना विशाल होता है कि दो-तीन दिनों तक तो प्रसाद बनाने का कार्य ही चलता रहता है।

पहाड़ी बाबा आश्रम

अक्षांश—25°27'53"N   देशान्तर—80°19'29"E

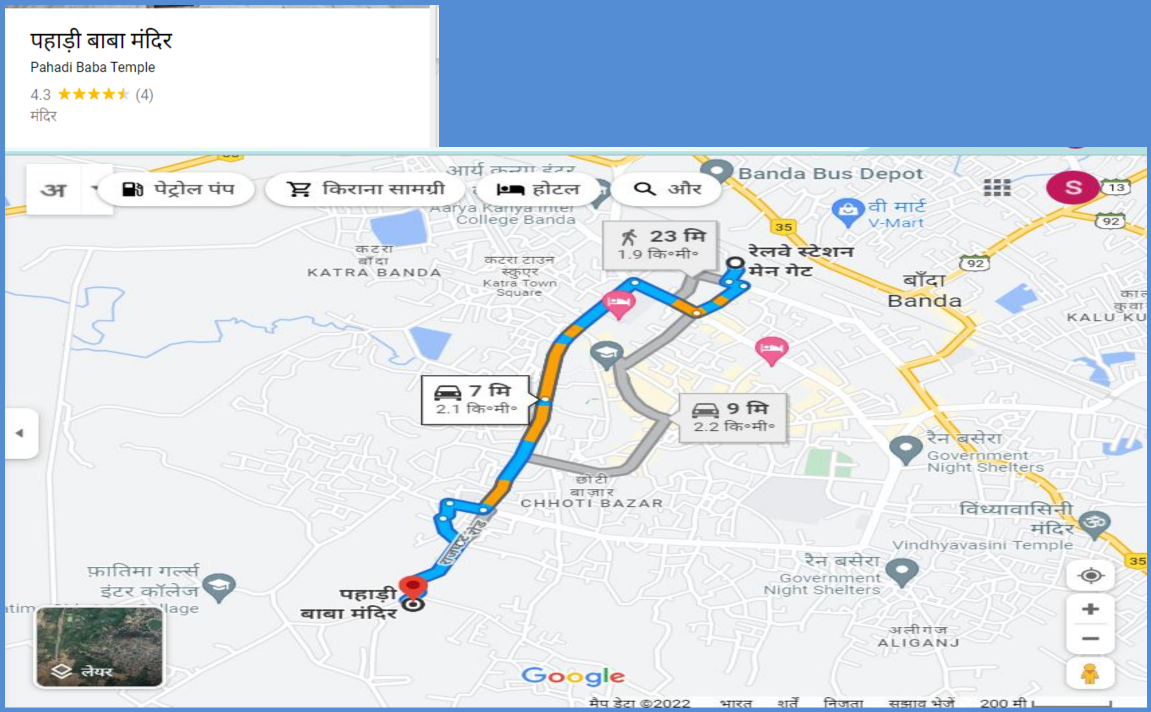

नवाब टैंक

बाँदा, उत्तर प्रदेश

नवाब टैंक बाँदा शहर में स्थित एक सुन्दर कृत्रिम जलाशय है। यह शहर से लगभग तीन किलोमीटर दूर शास्त्री नगर मोहल्ले में स्थित है। इस जगह के दृश्य पर्यटकों के लम्बे समय तक आतिथ्य के लिए एकदम सही हैं। यहाँ किसी भी स्थान पर जाने के लिए कोई टिकट नहीं लिया जाता है।

ऐतिहासिक कथानक—

नवाब टैंक का निर्माण नवाब जुल्फिकार अली बहादुर द्वारा करवाया गया था। उन्होंने एक आधुनिक शिक्षा प्रणाली की स्थापना की और बाँदा प्रशासन को नवीनीकृत करने में मदद की। यह बाँदा का स्वर्णिम काल था, जब संस्कृति और भाषा को बढ़ावा दिया गया था। नवाब टैंक मिर्ज़ा ग़ालिब की याद में बनाया गया

था, जो नवाब के खून के रिश्तेदार हैं। नवाब ने अपने कार्यकाल में जबर्दस्त सूखा पड़ने के दौरान नवाब टैंक खुदवाया था। लोगों को भुखमरी से बचाने के लिए तालाब खुदाई में मजदूरी मुहैया करायी। रात में भी तालाब खोदा जाता था ताकि शर्म और संकोच से दिन की रोशनी में मजदूरी न कर पाने वाले लोग

रात के अंधेरे में मजदूरी कर सकें। यह तालाब आज भी बेमिसाल है। तालाब के बीच नवाब ने कई मंजिला बुर्ज बनाया था। इसी बुर्ज में पर्दे की कनातें लगाकर नवाब की बेगमें कजली मेला देखती थीं। नवाब बाहर निकलकर लोगों को दर्शन देते थे। सुबह छाबी तालाब और शाम को नवाब टैंक में कजली मेला लगता था। यह परम्परा आज भी बरकरार है। लोगों का ऐसा मानना है कि बाँदा के नवाब की बेगम नवाब टैंक में स्नान करने के लिए आती थीं। इसके लिए नवाब टैंक से भूरागढ़ दुर्ग तक एक सुरंग बनी हुई थी। बाँदा के नवाब अपनी बेगम के साथ यहाँ आते थे और कजली मेले का आनन्द लेते थे। नवाब टैंक को अभिलेखों में 'शंकर सरोवर' के नाम से जाना जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि प्राचीन काल में यहाँ शंकर जी का मन्दिर था।

सुन्दर जलाशय—

नवाब टैंक एक बहुत सुन्दर जलाशय है। इस जलाशय का उपयोग बाँदा के नवाबों द्वारा किया जाता था। इस जलाशय का सुन्दर दृश्य किसी को भी अभिभूत कर सकता है। बाँदा के नवाब इस जलाशय के मध्य में बने चबूतरे पर बैठ कर कजली मेले का आनन्द लिया करते थे।

वन चेतना केन्द्र (वन विहार) —

नवाब टैंक के समीप ही वन चेतना पार्क स्थित है। इस पार्क में तरह-तरह के सुन्दर पेड़-पौधे लगे हुए हैं। यहाँ पर बच्चों के मनोरञ्जन हेतु फिसल-पट्टी भी बनी हुई है, जिस पर फिसलने में बच्चों को बड़ा ही आनन्द आता है।

ऑक्सीजन पार्क—

नवाब टैंक के समीप ही 'सरदार वल्लभभाई पटेल ऑक्सीजन पार्क' बना हुआ है। इस पार्क में लोग रोज सुबह योग करने आते हैं। शाम को जगमगाती रोशनी में पार्क की सुन्दरता और भी बढ़ जाती है। इस पार्क में बच्चों के मनोरञ्जन हेतु झूले लगे हुए हैं, साथ ही सांस्कृतिक कार्यक्रमों हेतु एक मंच भी बना हुआ है।

तिरंगा झण्डा—

ऑक्सीजन पार्क में ही 151 फीट ऊँचे राष्ट्रीय ध्वज को फहराया गया है, जिसकी छटा दूर से ही मन को मोहित कर देती है। राष्ट्रीय ध्वज नवाब टैंक आने वाले लोगों में राष्ट्र के प्रति प्रेम का संचार करता है।

कैण्टीन—

नवाब टैंक परिसर में एक छोटी सी कैण्टीन भी बनी हुई है, जिसमें यहाँ आने वाले पर्यटकों के लिए चाय नाश्ते का प्रबन्ध रहता है।

शिवलिंग—

नवाब टैंक के साथ बनी कैण्टीन के पास में ही शिवलिंग रखा हुआ है, जहाँ पर लोग आकर फूल चढ़ाते हैं तथा पूजा अर्चना करते हैं।

प्राचीन वट वृक्ष—

शिवलिंग के सम्मुख प्राचीन वट वृक्ष है, जो लगभग सौ वर्ष पुराना है। इस वृक्ष का धार्मिक महत्व बहुत है। वट सावित्री व्रत (बरगदहाई अमावस्या) के दिन महिलाएँ इसकी पूजा-अर्चना करती हैं, परिक्रमा लगाती हैं और अपने सुहाग की लम्बी उम्र का वरदान माँगती हैं।

काली देवी मन्दिर—

वन चेतना केन्द्र के बगल में काली देवी का मन्दिर बना हुआ है। नवाब टैंक आने वाले पर्यटक इस मन्दिर में आकर देवी का आशीर्वाद अवश्य लेते हैं।

राजकीय पौधशाला (फ्लोरा नर्सरी)—

नवाब टैंक परिसर के साथ में ही राजकीय पौधशाला बनी हुई है, जो पाँच हेक्टेयर क्षेत्र में फैली है। नवाब टैंक आने वाले पर्यटक इस पौधशाला से विभिन्न प्रकार के पौधे अथवा बीज ले जा सकते हैं।

सिंचाई विभाग—

नवाब टैंक के साथ में ही सिंचाई विभाग का कार्यालय बना हुआ है। नवाब टैंक की जिम्मेदारी इसी कार्यालय के अधीन है। नवाब टैंक से आसपास के क्षेत्र में सिंचाई हेतु नहर भी निकली हुई है, उसकी देख-रेख का कार्य भी यही कार्यालय करता है।

कजली मेला—

नवाब टैंक में सावन माह में कजली मेला लगता है, जो बहुत प्रसिद्ध है। दिनभर जवारे विसर्जित करने का कार्यक्रम चलता है तथा कुश्ती का आयोजन भी किया जाता है।

नवाब टैंक

अक्षांश—25°27'31"N **देशान्तर—80°20'56"E**

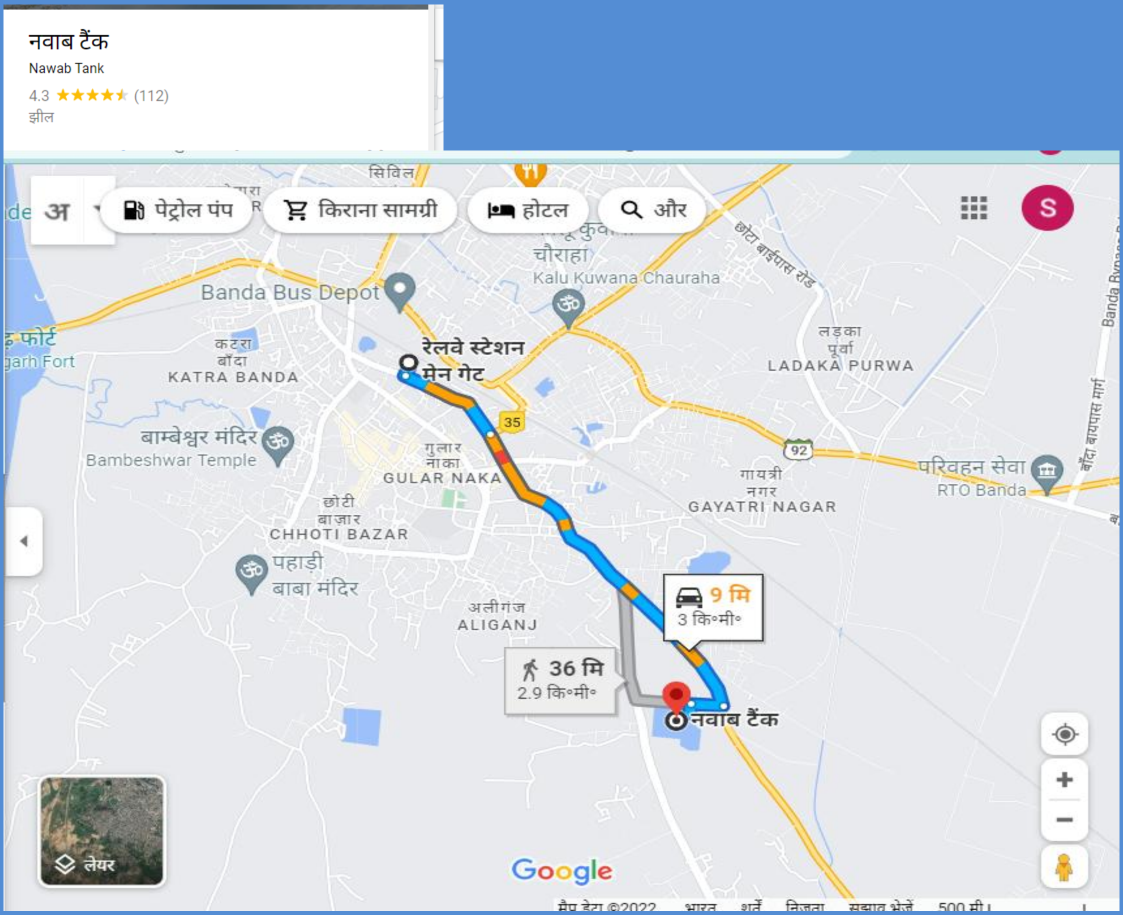

राम निवास मन्दिर

बाँदा, उत्तर प्रदेश

राम निवास मन्दिर बाँदा का एक प्रमुख ऐतिहासिक स्थल है। भगवान श्रीराम से जुड़े होने के कारण इस स्थल की धार्मिक मान्यता बहुत ज्यादा है। यह मन्दिर बाँदा के निम्नीपार मोहल्ले में स्थित है, इसका निर्माण कार्य वैश्य समाज द्वारा करवाया गया था।

ऐतिहासिक कथानक—

कालान्तर में इक्ष्वाकु वंश के राजा दशरथ के बड़े प्रतापी राजा थे। उनकी तीन रानियाँ— कौशल्या, सुमित्रा एवं कैकेई तथा चार पुत्र— राम, लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्न थे। राजा दशरथ अपने ज्येष्ठ पुत्र राम को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त करना चाहते थे परन्तु रानी कैकेई अपने पुत्र भरत को राजा बनाना चाहती थीं। राजा दशरथ ने रानी कैकेई को मनचाहा वचन देने का वादा किया था इसलिए रानी कैकेई ने राम के लिए चौदह वर्ष का वनवास माँगा। माता कैकई के आदेश का पालन करते हुए श्री राम, पत्नी सीता एवं छोटे भाई लक्ष्मण सहित अयोध्या छोड़कर वनवास के लिए वन की ओर चल दिये। अयोध्या से निकलकर वह ऋषि-मुनियों के आश्रमों में उनसे भेंट करते हुए जंगल की ओर बढ़ने लगे। अपनी इसी यात्रा के दौरान चित्रकूट मार्ग पर उन्होंने बाँदा के इस स्थान पर महर्षि बामदेव से भेंट करी। महर्षि बामदेव बाम्बेश्वर पर्वत पर एक गुफा में ध्यान साधना करते थे। जब श्री राम बाँदा आये तो उन्होंने महर्षि से भेंट कर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया तथा राम निवास मन्दिर के स्थान पर रात्रि विश्राम किया। इसी कारण इस स्थान का पौराणिक महत्व बहुत अधिक है।

स्थापना—

इस मन्दिर की स्थापना आज से लगभग 250 वर्ष पूर्व हुई थी। हालांकि मन्दिर यहाँ पर कालान्तर समय से रहा है परन्तु इसके वर्तमान समय स्वरूप का निर्माण तभी कराया गया था।

बाहरी चहारदीवारी—

सम्पूर्ण मन्दिर को ऊँची दीवारों से चारों तरफ से घेरा गया है, ताकि असामाजिक तत्व एवं अन्ना पशुओं से मन्दिर की रक्षा की जा सके।

प्रवेश द्वार—

मन्दिर का प्रवेश द्वार पश्चिम दिशा की ओर स्थित है। इस द्वार से होकर श्रद्धालु मन्दिर में प्रवेश करते हैं।

राम दरबार—

मन्दिर में मुख्य आकर्षण का केंद्र राम दरबार है, जिसमें भगवान श्री राम, माता सीता, भाई लक्ष्मण एवं भक्त हनुमान की मूर्तियाँ स्थापित हैं। यह सफेद संगमरमर से बनी हुई मूर्तियाँ हैं, जिनका निर्माण जबलपुर में हुआ था।

हनुमान मन्दिर—

इसी प्रांगण में राम भक्त हनुमान जी का एक मन्दिर भी है, जो भक्तों में भक्ति भाव का संचार करता है।

हनुमान चालीसा—

मन्दिर के साथ की दीवारों पर हनुमान चालीसा लिखी हुई है। यहाँ आने वाले श्रद्धालु दर्शन के उपरान्त चालीसा का पाठ करते हैं।

महन्त जी की प्रतिमाएँ—

मन्दिर परिसर में यहाँ रहने वाले अनेक महन्तों की प्रतिमा लगी हुई हैं। यहाँ आने वाले श्रद्धालु इन प्रतिमाओं पर भी अपना मत्था टेकते हैं तथा उन महान हस्तियों से आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।

पुजारी जी की कुटिया—

मन्दिर में बगल में पुजारी जी की कुटिया बनी हुई है, जहाँ पर मन्दिर के पुजारी निवास करते हैं तथा मन्दिर की देखभाल करते हैं।

प्राचीन कूप—

मन्दिर प्रांगण में प्राचीन कूप स्थित है, जिसके द्वारा मन्दिर में जलापूर्ति की जाती है।

गौशाला—

मन्दिर के बाहर एक गौशाला है, जहाँ पर पाँच गाय हैं। मन्दिर में रहने वाले पुजारी जी इन गायों की सेवा करते हैं। साथ ही यहाँ आने वाले भक्त गण भी गायों को चारा खिलाकर पुण्य अर्जित करते हैं।

बाहरी परिदृश्य—

मन्दिर के गेट से अन्दर जाने पर एक बड़ा ही सुन्दर बगीचा है जो यहाँ आने वाले भक्तों को अनायास ही अपनी ओर आकर्षित करता है। इस बगीचे में तरह-तरह के फूल एवं पौधे लगे हुए हैं।

भण्डारा—

यहाँ पर हर पूर्णिमा को भण्डारा होता है। इस भण्डारे में बहुत से श्रद्धालु शामिल होते हैं।

कीर्तन—

मन्दिर में हर शाम कीर्तन होता है, हनुमान चालीसा का पाठ किया जाता है तथा राम भजन बड़े ही हर्षोल्लास के साथ गाए जाते हैं। यह यहाँ की एक संध्या का नित्य चलने वाला कार्यक्रम है।

राम निवास मन्दिर

अक्षांश—25°27'59"N

देशान्तर—80°19'54"E

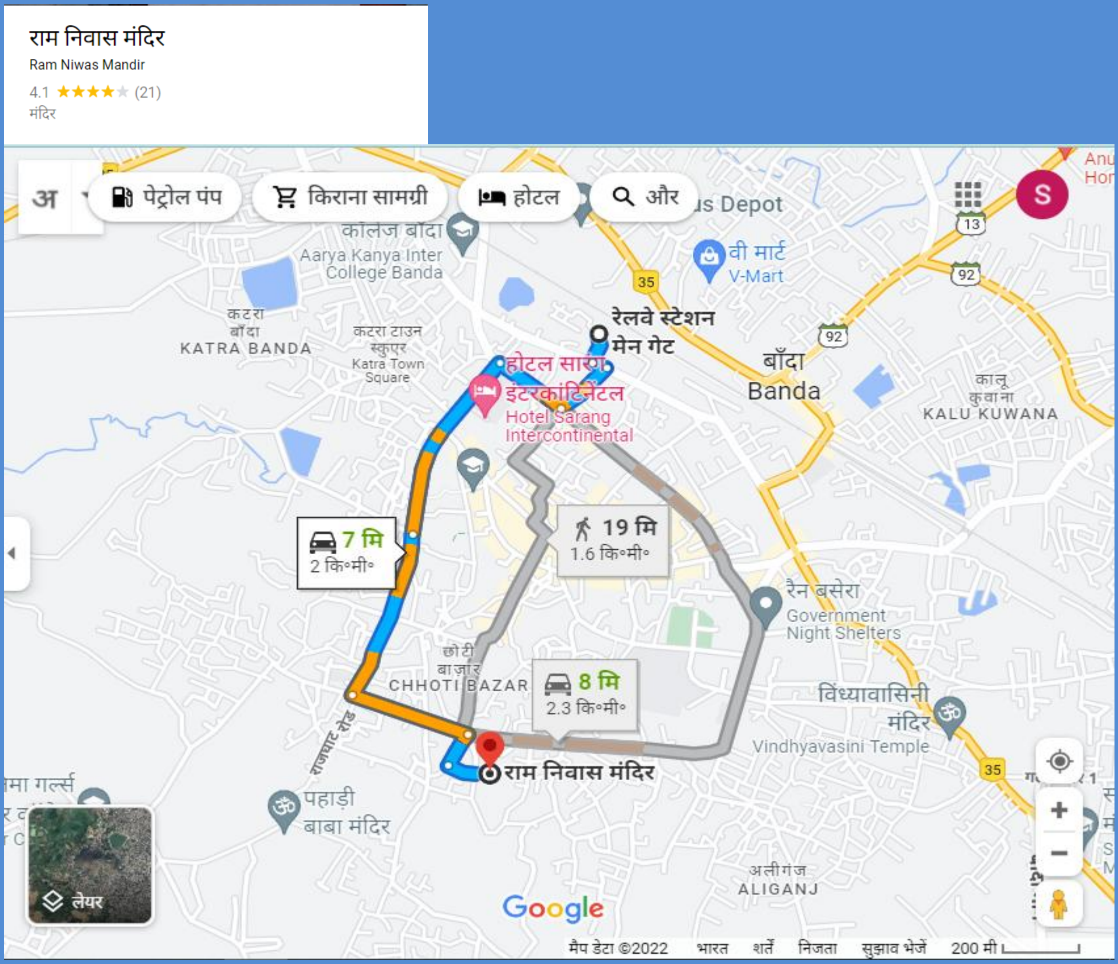

सिद्धन

बाँदा, उत्तर प्रदेश

बुन्देलखण्ड की धरा पर अनेक पौराणिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक सन्दर्भ यत्र-तत्र बिखरे हुए हैं। इन्हीं में से एक महत्वपूर्ण स्थल है—सिध्दन। सिध्दन बाँदा शहर के कैलाशपुरी मोहल्ले में अवस्थित है। यह बाँदा के प्रमुख ऐतिहासिक स्थल बाम्बेश्वर मन्दिर के साथ ही बाम्बेश्वर पर्वत में स्थित है।

ऐतिहासिक कथानक—

बाँदा ऋषि वामदेव की तपोथली है। ऋषि वामदेव गौतम ऋषि के पुत्र थे एवं सप्तर्षियों में से एक माने जाते हैं। कहा जाता है कि उन्होंने संगीत की रचना की थी। **महर्षि वामदेव, बाम्बेश्वर पर्वत में निवास करते थे** तथा यहीं पर ध्यान लगाया करते थे। भगवान श्री राम, माता जानकी एवं भाई लक्ष्मण सहित वनवास के दौरान जब चित्रकूट आये और उन्हें महर्षि वामदेव के विषय में जानकारी मिली तो उन्होंने बाँदा आकर उनसे भेंट की व आशीर्वाद प्राप्त किया। यहाँ आकर उन्होंने भगवान शिव की आराधना की। जिस स्थान पर श्रीराम ने भगवान शिव की आराधना की, वह स्थान आज बाम्बेश्वर मन्दिर के नाम से

प्रसिद्ध है। जब भगवान श्री राम रावण का वध कर अयोध्या नगरी वापस आये तब उनका राजतिलक किया गया। इस समारोह में उन्होंने सभी साधु-सन्तों एवं ऋषि-मुनियों का सम्मान एवं आदर सत्कार करने हेतु उन्हें अयोध्या बुलाया। महर्षि वामदेव को लेने के लिए स्वयं राम भक्त हनुमान आये। माना जाता है कि जिस स्थान पर हनुमान जी ने वामदेव ऋषि से भेंट की, वह स्थान आज सिद्धन मन्दिर के रूप में प्रसिद्ध है।

प्रवेश द्वार—

सिद्धन जाने हेतु बाम्बेश्वर मन्दिर से पहले, बायीं ओर जाने वाले रास्ते में कुछ दूर जाने पर, पूर्व दिशा की ओर प्रवेश द्वार बना हुआ है। श्रद्धालुगण यहीं से अपनी यात्रा प्रारम्भ करते हैं।

सीढ़ियाँ—

सिद्धन मन्दिर जाने हेतु सर्वप्रथम सीढ़ियाँ चढ़ने होती हैं। यूं तो इन सीढ़ियों की संख्या 227 है परन्तु अपने आराध्य के दर्शन पाने की इच्छा मन में होने से भक्त कब यह सीढ़ी चढ़ जाते हैं, पता ही नहीं चलता है।

बाम्बेश्वर पार्क—

कुछ सीढ़ियाँ चढ़ने के उपरान्त ही हमारे सम्मुख बाम्बेश्वर पार्क दिखायी पड़ता है। यह पार्क यहाँ आने वाले श्रद्धालुओं के बैठने के लिए एक अच्छा स्थान है परन्तु इस पार्क का सिद्धन की तरफ वाला द्वार बन्द कर दिया गया है और बाम्बेश्वर मन्दिर के की तरफ वाला द्वार सदा खुला रहता है।

बाम्बेश्वर मन्दिर द्वार—

पार्क के द्वार के बगल से बाम्बेश्वर मन्दिर का द्वार लगा हुआ है, जहाँ से श्रद्धालु बाम्बेश्वर मन्दिर में दर्शन करने के बाद सिद्धन मन्दिर जा सकते हैं। यह द्वार कभी-कभी ही खुलता है।

छोटा सिध्दन (छोटे सिद्ध बाबा)—

सिद्धन जाने वाली सीढ़ियों से ही एक रास्ता छोटे सिध्दन की ओर जाता है। यह रास्ता थोड़ा दुर्गम है। यहाँ पर हनुमान जी की एक छोटी मूर्ति स्थापित है। प्राचीन काल में सिद्धन मन्दिर में बैठने वाले पुजारी जी को यह मूर्ति मिली, तभी से यहाँ श्रद्धालुओं का आना जाना लगा रहता है। श्रद्धालुओं की मनोकामना पूर्ण होने के कारण इस मन्दिर का बड़ा ही महत्व है।

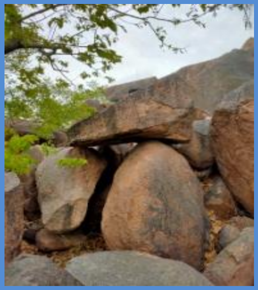

ध्यानशिला—

छोटे सिध्दन के पास एक ध्यानशिला दिखायी देती है। इस ध्यानशिला पर पहुँचकर ध्यान करना अपने आप में एक विलक्षण अनुभव है। ध्यानशिला से आस-पास का अत्यन्त मनोरम दृश्य दिखायी पड़ता है। इस शिला का सन्तुलन सभी को हैरान कर देता है।

मुख्य मन्दिर—

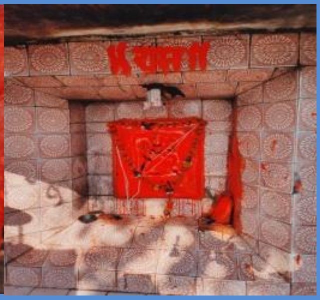

सीढ़ियों से ऊपर चढ़ते हुए सिद्धन मन्दिर दूर से ही भक्तों को अभिभूत कर देता है। मुख्य मन्दिर पहुँचने पर श्रद्धालु अपने आराध्य के दर्शन करते हैं। यहाँ पर हनुमान जी की मूर्ति विराजमान है। यह एक छोटा-सा मन्दिर है, जो पर्वत शिलापर बना हुआ है। यहाँ आने वाले श्रद्धालुओं का हर काम सिद्ध हो जाता है, इसी कारण से इस मन्दिर को सिद्धन के नाम से जाना जाता है।

चबूतरा—

सिद्धन मन्दिर के बाहर ही एक बहुत बड़ा चबूतरा बना हुआ है। यहाँ आने वाले श्रद्धालु इस चबूतरे पर बैठकर भगवान का भजन एवं आराधना करते हैं।

साहसिक गुफा—

सिद्धन मन्दिर के ऊपर एक छोटी-सी गुफा बनी हुई है, जहाँ से निकलना बड़ा ही साहस का कार्य है। इसी कारण इस गुफा को साहसिक गुफा के नाम से जाना जाता है। यह गुफा शुरुआत में तो चौड़ी है परन्तु आगे बढ़ने पर धीरे-धीरे सकरी होती जाती है।

अर्द्ध निर्मित विश्राम स्थल—

सिद्धन मन्दिर के पास में ही एक अर्द्ध निर्मित विश्राम स्थल बना हुआ है। इस विश्राम स्थल का निर्माण कार्य शुरू तो किया गया था परन्तु यह आज तक पूर्ण नहीं हो सका है।

जल शोधन केन्द्र—

सिद्धन मन्दिर के पास में ही जल शोधन केन्द्र बना हुआ है। यहाँ पर जल को शुद्ध करके शहर में जल आपूर्ति की जाती है। यहां पर जल शुद्ध करने हेतु बड़े-बड़े पम्प लगे हुए हैं।

प्राचीन वट वृक्ष—

जल शोधन केन्द्र में ही एक प्राचीन वट वृक्ष स्थित है। वट वृक्ष का हमारे धर्म में बड़ा ही महत्व है। बरगदहाई अमावस्या के दिन महिलाएँ इनकी पूजा-अर्चना करती हैं तथा परिक्रमा लगाती हैं और अपने सुहाग की लम्बी उम्र का वरदान माँगती है। सिध्दन मन्दिर आने वाले श्रद्धालुगण यहाँ इस वट वृक्ष पर मत्था जरूर टेकते हैं।

सूर्य दर्शन स्थल—

सिद्धन मन्दिर से थोड़ा ऊपर जाने पर पर्वत के शिखर पर सूर्य दर्शन स्थल बना हुआ है, जहाँ से उगते अथवा डूबते सूर्य का बड़ा ही मनमोहक दृश्य देखा जा सकता है। यहाँ आने वाले पर्यटकों को यह दृश्य बड़ा ही मनोहारी लगता है।

बाँदा व्यू प्वाइण्ट —

सूर्य दर्शन स्थल के साथ में ही बाँदा व्यू प्वाइण्ट बना हुआ है, जहाँ से बाँदा शहर का बड़ा ही मनोहर दृश्य देखा जा सकता है। यह दृश्य यहाँ आने वाले लोगों को रोमाञ्चित कर देता है।

बजने वाले पत्थर—

सिद्धन के पहाड़ पर कई स्थानों पर बजने वाले पत्थर मिलते हैं। इन पत्थरों के विशेषता है कि इनको किसी दूसरे पत्थर से बजाने पर आपको अलग-अलग धातुओं की आवाज सुनायी देती है।

किसी पत्थर से कलशे के बजने की आवाज आती है तो किसी पत्थर से थाली के बजने की आवाज आती है। धार्मिक मान्यता के अनुसार जब श्री राम ऋषि बामदेव से मिलने यहाँ आये थे तो

उनके स्वागत में यहाँ के पत्थर भी झूम उठे थे तथा श्री राम के पैर जहाँ-जहाँ पड़े उस-उस पत्थर से संगीत में आवाज आने लगी। वैज्ञानिकों का मानना है कि इन पत्थरों में डोलोमाइट की अधिकता होने के कारण इनसे ऐसी आवाज निकलती हैं।

शिवलिंग एवं देवी मूर्तियाँ—

सूर्य दर्शन स्थल पहुँचने पर हमें वहाँ पर शिवलिंग दिखायी पड़ता है। श्रद्धालु सूर्य भगवान के दर्शन करने के उपरान्त शिवलिंग पर जल अर्पित करते हैं। इनके पास में ही माँ काली एवं माँ दुर्गा की मूर्तियाँ हैं, भक्तगण इन मूर्तियों पर मत्था टेक कर आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।

ध्वजारोहण—

सिद्धन मन्दिर की सबसे ऊँची चोटी पर स्वतन्त्रता दिवस एवं गणतन्त्र दिवस के अवसर पर ध्वजारोहण किया जाता है। इस मौके पर यहाँ अनेक देश-प्रेमी एकत्रित होते हैं एवं देशभक्ति के गीत गाते हैं।

दोपहिया मार्ग—

सिद्धन तक पहुँचने के लिए एक मार्ग दोपहिया वाहनों के आने जाने हेतु बना हुआ है। यह बाँदा शहर के निम्नीपार मोहल्ले से शुरू होकर सिद्धन मन्दिर तक जाता है परन्तु वर्तमान में इसकी स्थिति दयनीय है।

अन्य मार्ग—

सिद्धन आने-जाने हेतु एक मार्ग और भी है। यह मार्ग जल शोधन केन्द्र से निकलने वाली पानी की पाइप लाइन के साथ-साथ जाता है। यह मार्ग थोड़ा दुर्गम है इसलिए इस मार्ग से उतरना लोगों को रोमाञ्चित करता है।

शिला समूह—

पर्वत पर कई स्थानों पर अनेक शिला समूह बने हुए हैं, जिन पर चढ़कर फोटो खींचना लोगों को बड़ा ही भाता है। कुछ लोग सीढ़ियों से आने जाने की बजाय इन्हीं शिलाओं पर चढ़कर सूर्य दर्शन स्थल तक जाते हैं, जिससे उन्हें अलग ही रोमाञ्च की प्राप्ति होती है।

सिद्धन मन्दिर

अक्षांश— 25°28'18"N **देशान्तर— 80°19'31"E**

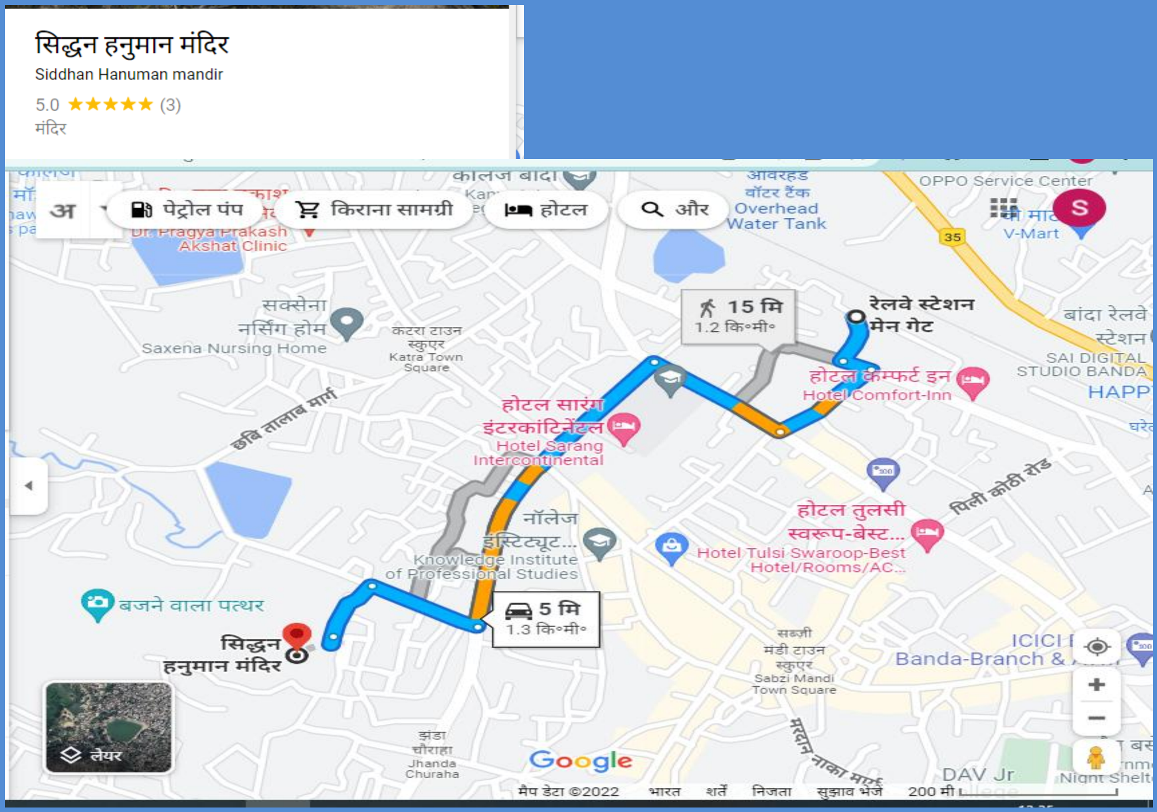

परिशिष्ट—XII

शोधार्थी द्वारा इण्टरनेट पर बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों से सम्बन्धित प्रकाशित/अपलोड किये गये वेबपृष्ठ

बुन्देलखण्ड रिसर्च पोर्टल में पहाड़ी बाबा आश्रम के विवरण को जोड़ने हेतु

बुन्देलखण्ड रिसर्च पोर्टल में राम निवास मन्दिर के विवरण को जोड़ने हेतु

परिशिष्ट—XII (जारी)

in:sent

2 of 73

बुन्देलखण्ड रिसर्च पोर्टल में सिद्धन के विवरण को जोड़ने हेतु

Sagar Singh <sagar10131@gmail.com>
to bundelkhand.in

11:20 AM (1 minute ago)

बुन्देलखण्ड क्षेत्र में केन नदी के तट पर वीरों की भूमि बाँदा स्थित है। यह शहर महर्षि वामदेव की तपोभूमि है। उन्हीं के नाम पर यहाँ का नाम बाँदा पड़ा। बाँदा अपने आप में ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक रूप से सम्पन्न है। यहाँ भूरागढ़ दुर्ग, रनगढ़ दुर्ग तथा कालिन्जर दुर्ग जैसे दुर्ग हैं जो इस शहर की समृद्धि को दिखाते हैं। यहाँ वामदेवेश्वर मन्दिर, महेश्वरी देवी मन्दिर, सिद्धन मन्दिर, नवाब टैंक, पहाड़ी बाबा आश्रम जैसे अनेक ऐतिहासिक महत्व के स्थल हैं। शोधार्थी द्वारा इन स्थलों के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता के अध्ययन हेतु शोध कार्य किया गया जिसमें निष्कर्ष रूप में यह पाया गया कि ऐतिहासिक विरासतों के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थी अनभिज्ञ हैं। अतः महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता संवर्धन हेतु इन स्थलों की जानकारी को अपनी वेबसाइट में जोड़ने का कष्ट करें।
सुविधा हेतु सिद्धन का ई-ब्रोशर संलग्न किया जा रहा है।

सिद्धन मन्दिर

Siddhen.pdf

Reply Forward

बुन्देलखण्ड रिसर्च पोर्टल में सिद्धन के विवरण को जोड़ने हेतु

in:sent

4 of 73

बुन्देलखण्ड रिसर्च पोर्टल में नवाब टैंक के विवरण को जोड़ने हेतु

Sagar Singh <sagar10131@gmail.com>
to bundelkhand.in

11:16 AM (5 minutes ago)

बुन्देलखण्ड क्षेत्र में केन नदी के तट पर वीरों की भूमि बाँदा स्थित है। यह शहर महर्षि वामदेव की तपोभूमि है। उन्हीं के नाम पर यहाँ का नाम बाँदा पड़ा। बाँदा अपने आप में ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक रूप से सम्पन्न है। यहाँ भूरागढ़ दुर्ग, रनगढ़ दुर्ग तथा कालिन्जर दुर्ग जैसे दुर्ग हैं जो इस शहर की समृद्धि को दिखाते हैं। यहाँ वामदेवेश्वर मन्दिर, महेश्वरी देवी मन्दिर, सिद्धन मन्दिर, नवाब टैंक, पहाड़ी बाबा आश्रम जैसे अनेक ऐतिहासिक महत्व के स्थल हैं। शोधार्थी द्वारा इन स्थलों के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता के अध्ययन हेतु शोध कार्य किया गया जिसमें निष्कर्ष रूप में यह पाया गया कि ऐतिहासिक विरासतों के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थी अनभिज्ञ हैं। अतः महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता संवर्धन हेतु इन स्थलों की जानकारी को अपनी वेबसाइट में जोड़ने का कष्ट करें।
सुविधा हेतु नवाब टैंक का ई-ब्रोशर संलग्न किया जा रहा है।

नवाब टैंक

nawab tank.pdf

Reply Forward

बुन्देलखण्ड रिसर्च पोर्टल में नवाब टैंक के विवरण को जोड़ने हेतु

परिशिष्ट—XIII (जारी)

बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूकता संवर्धन हेतु शोधार्थी द्वारा प्रेषित ई-मेल

in:sent

1 of 66

बाँदा की आधिकारिक वेबसाइट (https://banda.nic.in) के पर्यटन स्थल Tab के अन्तर्गत बामदेव मन्दिर के विवरण में संशोधन हेतु

Sagar Singh <sagar10131@gmail.com>
to dmban

10:33 AM (0 minutes ago)

सूच्य है कि बाँदा नगर की आधिकारिक वेबसाइट (https://banda.nic.in) के पर्यटन स्थल Tab के अन्तर्गत बामदेव मन्दिर का विवरण दिया गया है, जो अपूर्ण है। इस विवरण में निम्नलिखित पंक्तियों को जोड़े जाने की आवश्यकता है—

Rounded Rectangle: सिद्धन, बाम्बेश्वर पर्वत पर स्थित हनुमानजी का एक प्राचीन मन्दिर है। यहाँ पर आने वाले भक्तों के सभी कार्य सिद्ध हो जाने के कारण इसका नाम 'सिद्धन' पड़ा। इस मन्दिर के पास में ही बजने वाले पत्थर मिलते हैं, जिनसे अलग-अलग धातु (थाली, कलश, घण्टी आदि) की आवाज निकलती है। इसके साथ ही यहाँ पर सूर्य दर्शन स्थल एवं बाँदा व्यूप्वाइंट भी मौजूद हैं, जहाँ से बाँदा शहर का एक अद्भुत दृश्य देखा जा सकता है।

सुविधा हेतु उपर्युक्त स्थल का (E-brochure) साथ में संलग्न किया गया है। कृपया इसे https://banda.nic.in की पर्यटन स्थानों की सूची में स्थान देने का कष्ट करें।

Siddhen.pdf

DM, Banda

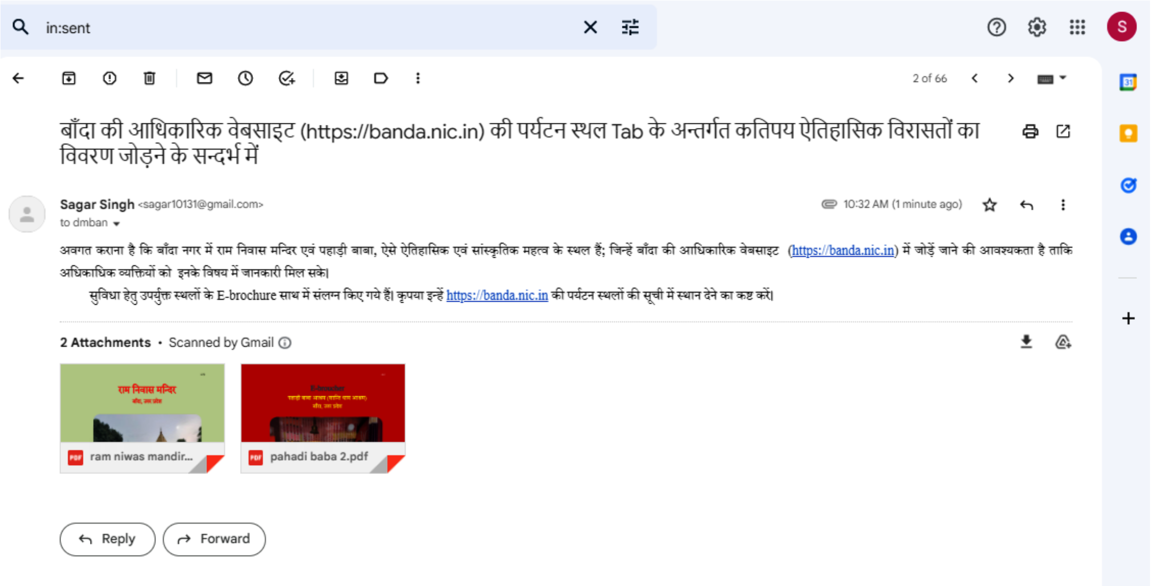

in:sent

2 of 66

बाँदा की आधिकारिक वेबसाइट (https://banda.nic.in) की पर्यटन स्थल Tab के अन्तर्गत कतिपय ऐतिहासिक विरासतों का विवरण जोड़ने के सन्दर्भ में

Sagar Singh <sagar10131@gmail.com>
to dmban

10:32 AM (1 minute ago)

अवगत कराना है कि बाँदा नगर में राम निवास मन्दिर एवं पहाड़ी बाबा, ऐसे ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व के स्थल हैं; जिन्हें बाँदा की आधिकारिक वेबसाइट (https://banda.nic.in) में जोड़े जाने की आवश्यकता है ताकि अधिकाधिक व्यक्तियों को इनके विषय में जानकारी मिल सके।

सुविधा हेतु उपर्युक्त स्थलों के E-brochure साथ में संलग्न किए गये हैं। कृपया इन्हें https://banda.nic.in की पर्यटन स्थलों की सूची में स्थान देने का कष्ट करें।

2 Attachments • Scanned by Gmail

ram niwas mandir...

pahadi baba 2.pdf

Reply Forward

DM, Banda

परिशिष्ट—XIII (जारी)

in:sent

3 of 66

बाँदा की आधिकारिक वेबसाइट (https://banda.nic.in) के पर्यटन स्थल Tab के अन्तर्गत नवाब टैंक के विवरण में संशोधन हेतु

Sagar Singh <sagar10131@gmail.com>
to dmban

10:32 AM (2 minutes ago)

सूच्य है कि बाँदा नगर की आधिकारिक वेबसाइट (https://banda.nic.in) के पर्यटन स्थल Tab के अन्तर्गत नवाब टैंक का विवरण दिया गया है, जो अपूर्ण है। इस विवरण में निम्नलिखित पंक्ति को जोड़े जाने की आवश्यकता है—

Rounded Rectangle: नवाब टैंक का नाम अभिलेखों में 'शंकर सरोवर' मिलता है।

सुविधा हेतु उपर्युक्त स्थल का (E-brochure) साथ में संलग्न किया गया है। कृपया इसे https://banda.nic.in की पर्यटन स्थानों की सूची में स्थान देने का कष्ट करें।

2 Attachments • Scanned by Gmail

नवाब टैंक

nawab tank.pdf

Reply Forward

DM, Banda

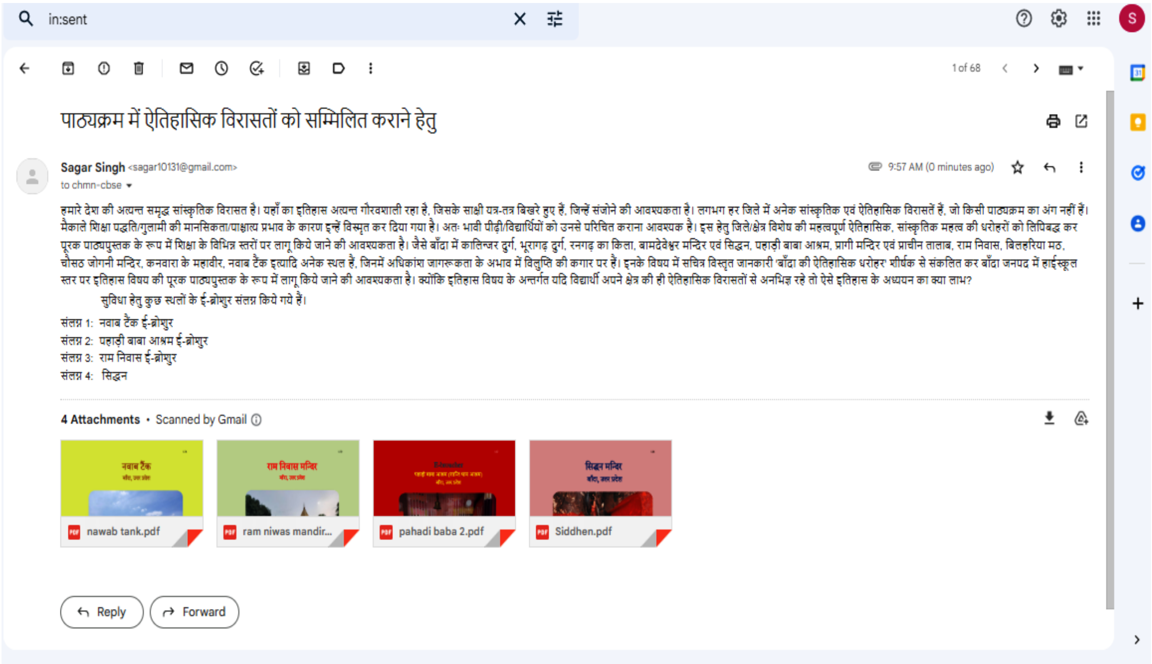

in:sent

1 of 68

पाठ्यक्रम में ऐतिहासिक विरासतों को सम्मिलित कराने हेतु

Sagar Singh <sagar10131@gmail.com>
to chmn-cbse

9:57 AM (0 minutes ago)

हमारे देश की अत्यन्त समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है। यहाँ का इतिहास अत्यन्त गौरवशाली रहा है, जिसके साक्षी यत्र-तत्र बिखरे हुए हैं, जिन्हें संजोने की आवश्यकता है। लगभग हर जिले में अनेक सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक विरासतें हैं, जो किसी पाठ्यक्रम का अंग नहीं हैं। मैकाले शिक्षा पद्धति/गुलामी की मानसिकता/पाश्चात्य प्रभाव के कारण इन्हें विस्मृत कर दिया गया है। अतः भावी पीढ़ी/विद्यार्थियों को उनसे परिचित कराना आवश्यक है। इस हेतु जिले/क्षेत्र विशेष की महत्वपूर्ण ऐतिहासिक, सांस्कृतिक महत्व की धरोहरों को लिपिबद्ध कर पूरक पाठ्यपुस्तक के रूप में शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर लागू किये जाने की आवश्यकता है। जैसे बाँदा में कालिन्जर दुर्ग, भूरागढ़ दुर्ग, रनगढ़ का किला, बामदेवेश्वर मन्दिर एवं सिद्धन, पहाड़ी बाबा आश्रम, प्राणी मन्दिर एवं प्राचीन तालाब, राम निवास, बिलहरिया मठ, चौसठ जोगनी मन्दिर, कनवारा के महावीर, नवाब टैंक इत्यादि अनेक स्थल हैं, जिनमें अधिकांश जागरूकता के अभाव में विलुप्ति की कगार पर हैं। इनके विषय में सचित्र विस्तृत जानकारी 'बाँदा की ऐतिहासिक धरोहर' शीर्षक से संकलित कर बाँदा जनपद में हाईस्कूल स्तर पर इतिहास विषय की पूरक पाठ्यपुस्तक के रूप में लागू किये जाने की आवश्यकता है। क्योंकि इतिहास विषय के अन्तर्गत यदि विद्यार्थी अपने क्षेत्र की ही ऐतिहासिक विरासतों से अनभिज्ञ रहे तो ऐसे इतिहास के अध्ययन का क्या लाभ?

सुविधा हेतु कुछ स्थलों के ई-ब्रोशुर संलग्न किये गये हैं।

संलग्न 1: नवाब टैंक ई-ब्रोशुर
संलग्न 2: पहाड़ी बाबा आश्रम ई-ब्रोशुर
संलग्न 3: राम निवास ई-ब्रोशुर
संलग्न 4: सिद्धन

4 Attachments • Scanned by Gmail

नवाब टैंक

nawab tank.pdf

राम निवास मन्दिर

ram niwas mandir...

pahadi baba 2.pdf

सिद्धन मन्दिर

Siddhen.pdf

Reply Forward

Director of Education, Uttar Pradesh board of Secondary Education

परिशिष्ट—XIII (जारी)

in:sent

1 of 68

पाठ्यक्रम में ऐतिहासिक विरासतों को सम्मिलित कराने हेतु

Sagar Singh <sagar10131@gmail.com>
to chmn-cbse

9:57 AM (1 hour ago)

हमारे देश की अत्यन्त समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है। यहाँ का इतिहास अत्यन्त गौरवशाली रहा है, जिसके साक्षी यत्र-तत्र बिखरे हुए हैं, जिन्हें संजोने की आवश्यकता है। लगभग हर जिले में अनेक सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक विरासतें हैं, जो किसी पाठ्यक्रम का अंग नहीं हैं। मैकाले शिक्षा पद्धति/गुलामी की मानसिकता/पाश्चात्य प्रभाव के कारण इन्हें विस्मृत कर दिया गया है। अतः भावी पीढ़ी/विद्यार्थियों को उनसे परिचित कराना आवश्यक है। इस हेतु जिले/क्षेत्र विशेष की महत्वपूर्ण ऐतिहासिक, सांस्कृतिक महत्व की धरोहरों को लिपिबद्ध कर पूरक पाठ्यपुस्तक के रूप में शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर लागू किये जाने की आवश्यकता है। जैसे बाँदा में कालिन्जर दुर्ग, भूरागढ़ दुर्ग, रनगढ़ का किला, बामदेवेश्वर मन्दिर एवं सिद्धन, पहाड़ी बाबा आश्रम, प्रागी मन्दिर एवं प्राचीन तालाब, राम निवास, बिलहरिया मठ, चौसठ जोगनी मन्दिर, कनवारा के महावीर, नवाब टैंक इत्यादि अनेक स्थल हैं, जिनमें अधिकांश जागरूकता के अभाव में विलुप्ति की कगार पर हैं। इनके विषय में सचित्र विस्तृत जानकारी 'बाँदा की ऐतिहासिक धरोहर' शीर्षक से संकलित कर बाँदा जनपद में हाईस्कूल स्तर पर इतिहास विषय की पूरक पाठ्यपुस्तक के रूप में लागू किये जाने की आवश्यकता है। क्योंकि इतिहास विषय के अन्तर्गत यदि विद्यार्थी अपने क्षेत्र की ही ऐतिहासिक विरासतों से अनभिज्ञ रहे तो ऐसे इतिहास के अध्ययन का क्या लाभ?

सुविधा हेतु कुछ स्थलों के ई-ब्रोशुर संलग्न किये गये हैं।

संलग्न 1: नवाब टैंक ई-ब्रोशुर
संलग्न 2: पहाड़ी बाबा आश्रम ई-ब्रोशुर
संलग्न 3: राम निवास ई-ब्रोशुर
संलग्न 4: सिद्धन

4 Attachments • Scanned by Gmail

nawab tank.pdf | ram niwas mandir... | pahadi baba 2.pdf | Siddhen.pdf

Reply | Forward

Chairman of CBSE

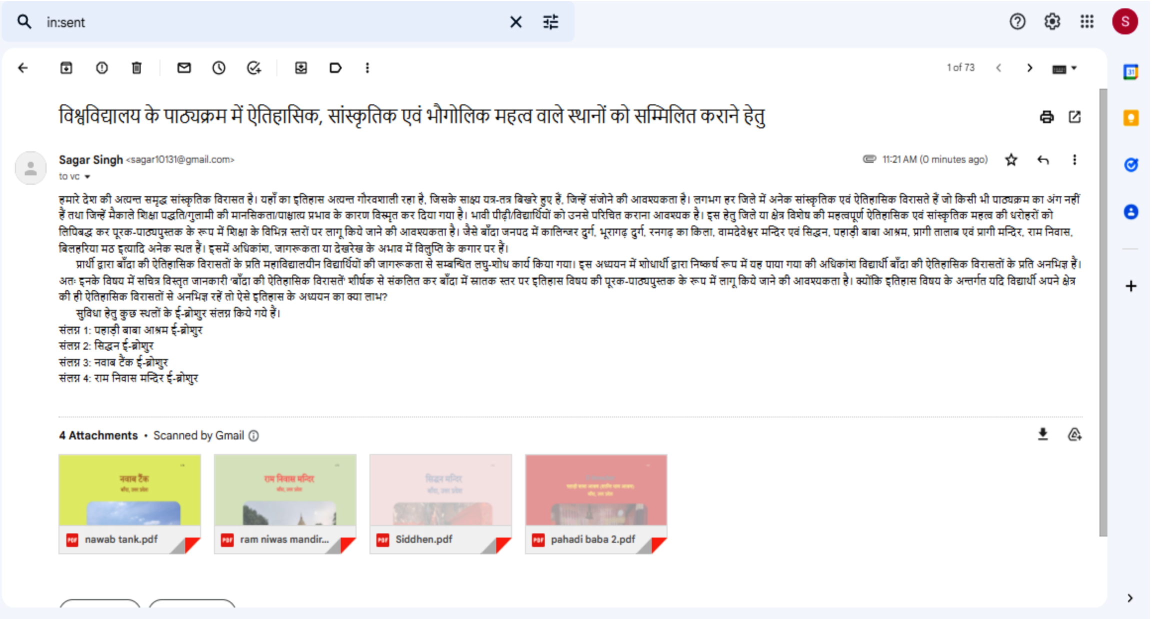

in:sent

1 of 73

विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं भौगोलिक महत्व वाले स्थानों को सम्मिलित कराने हेतु

Sagar Singh <sagar10131@gmail.com>
to vc

11:21 AM (0 minutes ago)

हमारे देश की अत्यन्त समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है। यहाँ का इतिहास अत्यन्त गौरवशाली रहा है, जिसके साक्ष्य यत्र-तत्र बिखरे हुए हैं, जिन्हें संजोने की आवश्यकता है। लगभग हर जिले में अनेक सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक विरासते हैं जो किसी भी पाठ्यक्रम का अंग नहीं हैं तथा जिन्हें मैकाले शिक्षा पद्धति/गुलामी की मानसिकता/पाश्चात्य प्रभाव के कारण विस्मृत कर दिया गया है। भावी पीढ़ी/विद्यार्थियों को उनसे परिचित कराना आवश्यक है। इस हेतु जिले या क्षेत्र विशेष की महत्वपूर्ण ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व की धरोहरों को लिपिबद्ध कर पूरक-पाठ्यपुस्तक के रूप में शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर लागू किये जाने की आवश्यकता है। जैसे बाँदा जनपद में कालिन्जर दुर्ग, भूरागढ़ दुर्ग, रनगढ़ का किला, वामदेवेश्वर मन्दिर एवं सिद्धन, पहाड़ी बाबा आश्रम, प्रागी तालाब एवं प्रागी मन्दिर, राम निवास, बिलहरिया मठ इत्यादि अनेक स्थल हैं। इसमें अधिकांश, जागरूकता या देखरेख के अभाव में विलुप्ति के कगार पर हैं।

प्रार्थी द्वारा बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता से सम्बन्धित लघु-शोध कार्य किया गया। इस अध्ययन में शोधार्थी द्वारा निष्कर्ष रूप में यह पाया गया की अधिकांश विद्यार्थी बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति अनभिज्ञ हैं। अतः इनके विषय में सचित्र विस्तृत जानकारी 'बाँदा की ऐतिहासिक विरासतें' शीर्षक से संकलित कर बाँदा में स्नातक स्तर पर इतिहास विषय की पूरक-पाठ्यपुस्तक के रूप में लागू किये जाने की आवश्यकता है। क्योंकि इतिहास विषय के अन्तर्गत यदि विद्यार्थी अपने क्षेत्र की ही ऐतिहासिक विरासतों से अनभिज्ञ रहें तो ऐसे इतिहास के अध्ययन का क्या लाभ?

सुविधा हेतु कुछ स्थलों के ई-ब्रोशुर संलग्न किये गये हैं।

संलग्न 1: पहाड़ी बाबा आश्रम ई-ब्रोशुर
संलग्न 2: सिद्धन ई-ब्रोशुर
संलग्न 3: नवाब टैंक ई-ब्रोशुर
संलग्न 4: राम निवास मन्दिर ई-ब्रोशुर

4 Attachments • Scanned by Gmail

nawab tank.pdf | ram niwas mandir... | Siddhen.pdf | pahadi baba 2.pdf

VC, Bundelkhand University

परिशिष्ट—XIV जीवनवृत्त

नाम : सागर सिंह चौहान

माता का नाम : श्रीमती गुड्डन सिंह

पिता का नाम : श्री नरेश सिंह चौहान

जन्म तिथि : 15/06/1995

लिंग : पुरुष

धर्म : हिन्दू

भाषा : हिन्दी, अंग्रेजी

रुचि : क्रिकेट देखना, संगीत सुनना

ई-मेल : sagar10131@gmail.com

स्थायी पता : गणेश कालोनी क्योटरा, जिला—बाँदा, उ०प्र०—210001

शैक्षिक विवरण :

क्र० सं०	कक्षा	बोर्ड/विश्वविद्यालय	विषय	श्रेणी	वर्ष
1.	हाईस्कूल	उत्तर प्रदेश	हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कम्प्यूटर	प्रथम	2009
2.	इण्टरमीडिएट	उत्तर प्रदेश	हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान	प्रथम	2011
3.	कला स्नातक	बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय	अंग्रेजी, भूगोल, अर्थशास्त्र	प्रथम	2014
4.	कला परास्नातक	बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय	अर्थशास्त्र	प्रथम	2016
5.	शिक्षा स्नातक	बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय	शिक्षा-शास्त्र	प्रथम	2019

परिशिष्ट—XIV (जारी)

प्रकाशित पुस्तकें :

क्र० सं०	शीर्षक	प्रकाशन वर्ष	पृष्ठ संख्या	ISBN No.	वेबसाइट
1.	शिक्षा में समाजोपयोगी उत्पादक कार्य एवं आधुनिक प्रवृत्तियाँ	2021	88	978-93-5473-086-3	https://archive.org/details/ilovepdf_merged_20210626

दिनांक—16/08/2022

स्थान—अतर्रा (बाँदा)

हस्ताक्षर

बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन

"जो युवा अपने सांस्कृतिक और ऐतिहासिक मूल्यों को समझता है, वही राष्ट्र को सशक्त बनाता है।"

-डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम

मूल्य: ₹ 82

9 789356 795914

TQRCG